(राजस्थानी मिश्रित व्रज भाषा)

रचयिता :

ठाकुर केशरीसिंह बारहठ

सोन्याणा (राजस्थान)

सम्पादक :

महालचन्द बयेद

प्रकाशक :

ओसवाल प्रेस

१८६, क्रोस स्ट्रीट, कलकत्ता-७

विक्रमाब्द २०१०

प्रथमावृत्ति १०००]

[मूल्य सजिल्द २॥)

प्राक्कथन

बात बहुत दिनों की नहीं है, साक्षी के लिए अब भी धरती पर अनेक चेतन प्राणी विद्यमान होंगे जब अवरँगजेब दिल्ली के सिंहासन पर विराजमान था। मजहब के नाम पर लूट, अत्याचार और निर्मम-हत्याओं से देश का वातावरण गरम और भयङ्कर हो रहा था।

देव-मन्दिरों के चमचमाते हुए स्वर्ण-कलश उसकी आँखों में गड़ गये, बस क्या था, धराशायी मन्दिरों पर मसजिदों का निर्माण, बहुमूल्य मणियों और रत्नों से विनिर्मित कनक-प्रतिमाओं को लौह-गदाओं से खण्डित कर विपुल धन-राशि की लूट बथा शिखा, सूत्र, तिलक और चन्दन धारियों की गर्दनों पर भुजङ्गिनी-सी फुफकारती हुई तलवारों का निर्मम वार अथवा धर्म-पतित बनाकर उनका मसजिद प्रवेश अत्यन्त निन्दनीय कठोर और असफल शासन का ज्वलन्त प्रमाण—

केवल हिन्दू-प्रजा पर 'जजिया' कर का कशाघात। यह सब एक साथ ही ऐसा उपद्रव मचा रखा था कि सारी हिन्दू-प्रजा जैसे नरक भोग रही थी। उसने अपने ही पुरखे शाहंशाह अकबर की राजनीति का तिरस्कार किया, धोखे से अपने भाइयों को तलवार के घाट उतार दिया और जिसके रक्त वीर्य से पैदा हुआ था उसको भी कैद कर रखा था। राज विस्तार और भोगेच्छा के कारण जो अपने सगे सम्बन्धियों का नहीं हो सका, उसको दूसरों के दुख से क्या मतलब। वह हिन्दू और मुसलमान दोनों के सम्मान के विरुद्ध अत्याचार करने पर तुल गया था, उस स्वेच्छाचारी को अपने बेटों की भी चिन्ता नहीं थी कि मेरे बाद उनकी क्या गति होगी, मुगल वंश की सत्ता रह सकेगी या उसके कुकृत्यों के प्रबल झोंके मे पड़कर पत्ते की तरह उड़ जायेगी। वही हुआ, बहादुर शाह को जिस अपमान की व्यथा भोगनी पड़ी वह वर्णनातीत है, भारतीयों के लिए वह अत्यन्त लज्जास्पद क्लेश है।

लोक-धारणा है कि अवरंगजेब क्रूर निर्दय और कट्टर साम्प्रदायिक था। मैं कहता हूँ वह केवल सम्प्रदाय के नाम पर अन्धाधुन्ध अत्याचार ही नहीं करता था, बल्कि वह किसी भी भले आदमी की इज्जत उतारने के लिये भी जागरूक और परिकरबद्ध था। रूपनगर की राजकुमारी चारुमती के अद्भुत सौन्दर्य की चर्चा जब चतुर्दिक होने लगी, तब उसके मुँह में पानी आ गया। उस बदनीयत ने जरा भी नहीं सोचा कि तिमिर के साथ ज्योत्स्ना

का क्या सम्बन्ध, बबूल से रजनीगन्धा का क्या मेल, फिर भी उसने रूपनगर को मिट्टी में मिलाकर चारुमती के साथ विवाह करने का ध्रुव निश्चय कर लिया। उसने प्रतिज्ञा की कि मैं चारुमती के लिये अपना सारा धन जन बल होम दूँगा, लेकिन उसका स्वप्न, स्वप्न ही रह गया। चारुमती को जब उसके दुर्गन्ध पूर्ण हौसले का पता लग गया तब उसके होश उड़ गये, आँखों के सामने अँधेरा छा गया और बेहोश हो गयी। कुछ देर बाद धूम्रवदना चारुमती की आँखें चमक उठीं, उसने मन-ही-मन मेवाड के महाराणा राजसिंह को अपना सर्वस्व चुन लिया। एक पत्र में उसने अपनी सारी व्यथा की कहानी लिखी। यह भी लिखा कि यदि पाणि ग्रहण के लिये महाराणा ठीक समय से रूपनगर नहीं पहुँच जायेंगे, तो मैं निरवलम्ब होकर अविलम्ब धधकती हुई चिता की गोद में छिप जाऊँगी। पत्र पहुँचते ही राजपूतों का खून खौलने लगा, राजसिंह की पटरानी और अन्य स्त्रियाँ भी उनको किसी भी मूल्य पर चारुमती से विवाह करने के लिये प्रेरित करने लगीं। महाराणा राजसिंह को अपने पूर्वजों की मर्यादा का ध्यान आया, एक अबला की करुण-पुकार पर आर्य धर्म की रक्षा के लिये तथा शिशोदिया वंश के सम्मान के लिये सदलबल वर रूप से रूपनगर की ओर चल पड़े। गति में आश्चर्यजनक तीव्रता थी। उधर अवरँगजेब से युद्ध करने में पति को मेरा मोह कहीं बाधक न हो जाय, इसलिये क्षत्राणी होनेका अलंघ्य आदर्श रूप चूण्डावत्त की युवती पत्नी ने अपना

मस्तक काटकर रख दिया, उसको चूण्डावत ने पुष्प-माला की तरह गले में बान्ध लिया और अवरँगजेब का मार्ग रोकने के लिये घोड़े को सरपट भगाया। आज एक-एक यवन को तलवार के घाट उतार दूँगा और इस क्षण-भंगुर शरीर के रक्त का बूँद-बूँद महाराणा का नमक अदा करेगा यह सोच-सोचकर उसका हृदय बांसों उछल रहा था। थोड़ी ही देर में चूण्डावत से अवरँगजेब का तुमुल युद्ध छिड़ गया, राजपूतों ने प्राणों की बाजी लगा दी, बड़ा ही लोमहर्षण संग्राम हुआ। आग की भयङ्कर लपटों की तरह राजपूत यवनों में घुस गये। यवन-सेना व्याकुल हो उठी उसके पैर उखड़ गये, अवरँगजेब तो ऐसा भगा कि उसने दिल्ली जाकर ही साँस ली। विजयोल्लास से भरे राजपूतों को साथ लिये चूण्डावत सरदार ने रूपनगर से सकुशल लौटे हुए राजसिंह और चारुमती के साथ ही उदयपुर में प्रवेश किया। उदयपुर में घर-घर दिवाली मनायी गयी, लेकिन चूण्डावत सरदार जब अपनी नवोढा पत्नी को विजय समाचार सुनाने के लिए घर की ओर लपका तब उसे अपने गले में पड़े हुए पत्नी के छिन्नमस्तक की याद आ गयी, वह बेहोश होकर गिरा और समाप्त, पत्नी का मस्तक एक ओर लुढ़क गया। उधर राजद्वार पर बड़ी शान के साथ सहनाई बज रही थी। इसको देश-सेवा कहें या राज-सेवा कहें कि क्या कहें ?

इस घटना से अवरँगजेब को मर्मान्तक चोट पहुँची, वह तिलमिला उठा। द्वेष हिंसा और क्रूरता के कारण उसकी

आकृति भयङ्कर हो उठी, उसकी लाल-लाल आँखें मन्दिरों पर पड़ीं, हिन्दू-मन्दिरों की जड़ें हिलने लगीं। श्रीद्वारिकाधीशजी, श्रीगोवर्धननाथजी तथा श्रीनाथजी आदि की मूर्त्तियों का मेवाड में स्वागत हुआ। जव उसको इससे भी शान्ति नहीं मिली, तब राजसिंह के प्रबल विरोध करने पर भी अत्यन्त अपमान-जनक हिन्दुओं पर 'जजिया' कर लगा दिया। महाराणा राजसिंह ने अपनी पूरी शक्ति से देश जाति और धर्म की रक्षा की, फिर भी हिन्दुत्व निर्भय नहीं हो सका।

जोधपुर के राजकुमार अजीतसिंह और उनकी माता को मेवाड़ में आश्रय देकर राजसिंह ने अवरंगजेब के क्रोधानल में एक आहुति और दी। वह बौखला उठा और एक बहुत बड़ी सेना लेकर मेवाड़ पर आक्रमण कर दिया। महाराणा प्रताप के पचासों वर्ष बाद, स्वतंत्रता और हिन्दुत्व की रक्षा के लिए एक बार फिर राजसिंह की तलवार अन्तरिक्ष में चमचमा उठी। यह युद्ध महाराणा राजसिंह से ही नहीं बल्कि समस्त हिन्दुओं के विरुद्ध था, इसलिये यथा शक्ति सब ने सहायता की। मारवाड़ के दुर्दमनीय दुर्गादास अपने राठौड़ वीरों को लेकर जल-प्रवाह की तरह महाराणा से मिल गये, सब ने मिलकर बादशाह पर ऐसा आक्रमण किया कि यवनों की सेना छिन्नभिन्न होकर भाग निकली। अवरंगजेब बड़ी कठिनता से किसी तरह छिप-छिपाकर दिल्ली पहुँच सका, राजपूतों को छेड़ने का साहस पस्त हो गया, हौसले ढीले पड़ गये। महाराणा राजसिंह ने

अपनी प्रचण्ड वीरता और प्रभूत साहस से वैरियों के हृदय में आतंक और सहृदयों के मन मे आश्चर्य ही नहीं भर दिया, बल्कि लोक कल्याण की कामना से राजसमुद्र का वैचित्र्यपूर्ण निर्माण करवाकर अपने को युग-युग के लिये अमर बना दिया। इस तरह की अनेक अद्भुत घटनाओं का समुच्चय राजसिंह है। धन्य है उनके जीवन का अमृतत्व।

ठाकुर केशरीसिंहजी बारहठ ने उसी पुण्यश्लोक राजसिंह के जीवन से अपने प्रबन्ध-काव्य राजसिंह चरित्र को समलंकृत किया है। सर्गों मे न बान्धकर अनेक विषयों के विविध शीर्षकों से ही काव्य पूर्ण किया गया है। वर्णनशैली में जो आकर्षण है, वह बारहठजी की अपनी कला है। शब्दार्थ चुम्बक की तरह अपनी ओर चित्त को अनायास खींच लेते है। यों तो स्थल-स्थल मे अपनी कुछ विशेषताएं है, लेकिन कुछ वर्णन इतने मनोहर हैं कि उन्हीं के बल पर 'राजसिंह चरित्र' को अपने ढंग का एक अनूठा काव्य कहा जा सकता है। एक ही लेखनी से निःसृत प्रताप चरित्र और राजसिंह चरित्र में कौन श्रेष्ठ है, यह कहना कठिन है। दोनों अपने-अपने स्थान पर गौरव की रक्षा करते हैं, दोनों से लक्ष्य पूर्त्ति होती है और दोनों भारतीयता के उज्वलतम प्रतीक हैं।

इस काव्य में एक बात खटकती है जो राजसिंह के परम पावन ज्वलन्त चरित्र को कलंकित कर देती है और श्रद्धा से जुड़े हुए हाथ ढीले पड़ जाते हैं, यदि राजसिंह की हिंसा की

बग्न कवि पचा गया होता, तो काव्य-सौन्दर्य मे कोई बाधा नहीं पडती। हिसा वर्णन में अन्त्यानुप्रास को छोड़कर कोई काव्यगत माधुर्य भी नहीं है।

ब्रज-भाषा और डिगल मिश्रित उत्साहपूर्ण प्रबन्ध काव्य उपस्थित करने में इस समय बारहठजी का स्थान सर्वोच्च है। सम्मानित संस्थाओं और प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा बारहठजी की रचनाओं का सम्मान हो चुका है, इसलिये हिन्दी साहित्य में उनका स्थान सुरक्षित है।

ठा० केशरीसिहजी बारहठ ने प्रताप चरित्र, राजसिह चरित्र, अमरसिह राठौड़ और रूठी रानी आदि पुस्तके लिखकर हिन्दू, हिन्दी और भारतीय संस्कृति की जो सेवाएँ की है उनसे उनके गौरव की वृद्धि तो हुई ही, साथ ही समाज का भी कल्याण हुआ। सच्चिदानन्द हरि उनको चिरायु करे, ताकि चिरकाल तक भारतीय संस्कृति के रक्षकों के मर्यादापूर्ण काव्य मय चरित्रों से हमारे चरित्रों का निर्माण हो।

श्रीश्यामनारायण पाण्डेय

चित्र-सूची

विषय-सूची

काव्य-प्रणेता के कनिष्ट भ्राता स्वर्गीय ठा० लक्ष्मणसिंहजी बारहट

समर्पण

दोहा

संवत् उभय सहस्र पुनि , सङ्कटमय वसु साल ।
केशव के दुरभाग्य ते , कियउ भ्रात ने काल ॥

घनाक्षरी

कार्तिक सुकल पक्ष बीजको निधन भयो,
केशव अभाग्य तातें बीजुरी गिरानी हाय ।
असह अनर्थ इन आँखिन सों देखि रह्यो,
मेरी यह छुद्र देह कष्ट सों घिरानी हाय ।
एरे प्रिय बन्धु ! आय धीरज बन्धावे क्योंन,
सारे ही कुटंब की तो छाती है चिरानी हाय ।
आवे ना नजर तव सानी को सुहृद भ्रात,
हेर हेर हारे हम आखें पथरानी हाय ॥

मनहर

छोर निज देह को सनेह को सदन श्रेष्ठ.
ईश्वर के गेह को अचिन्त आज ऊठिगो ।
दीनन को त्राता मो गरीब पै कबान तान,
हाय सुखसाता में विधाता मो पै रूठिगो ।
रूप की परम राम हास रु विलास खान,
खास क्षेम खुशी को खजाना आज खूटिगो ।
मोद अवरोध भयो मन को विनोद गयो,
केसोदास प्रेम को पयोधि आज फूटिगो ॥

घनाक्षरी

पूछ कर जातो जब जातो पर-गाँव बन्धु,
मेरे बिनु पूछे आज कहाँ पै कियो है गौन ।
मो-से हतभागी निज गेह को उजार कर,
कौन बड़भागी कर जाय के बसायो भौन ।
अग्रिम करन काम मो को जतलावे कौन,
तेरे बिनु उत्तम सलाह बतलावे कौन ।
हौं तो अति उत्सुक हौं तेरे बोलबे को भाई,
मौन क्यों भयो है आज मो कों बतरावे क्यों न ॥

सुन्दर समुद्र आज स्नेह को सुखानो भाई,
हा! हा! हा! विधाता आज मो सों मुकरानो हाय।

भयद हमारे ज्ञान भीम अन्धकार भयो,
स्रवत सुधा को शशि आज अथियाँनो हाय ।
है न लछमाल विद्यमान या जिहान बीच,
कविता कलाप महँ आज कथियाँनो हाय ।
आपनो रह्यो न एक छिन में बिरानो भयो,
रतन गिरानो नहिं पीछो हथियाँनो हाय ॥

कित कों पयान कर कौन ठौर जावें हम,
आगै को सुहृद भाई मारग बतावे कौन ।
ह्वै ते दिग्मूढ़ तब सब समुझाय देतो,
ताही भांति बोलकर सुमति सुझावे कौन ।
बिगरे अनेक काम बान्धव बनाय देतो,
कठिन समस्या खरी ताको सुरझावे कौन ।
रुदन करौं हौं हाय रोकौं पै रुकत नांहि,
मौन क्यों भयो है भाई मोकों समझावे क्योंन ॥

रहतो निरन्तर ही रात दिन मेरे पास,
तेरे सहवास बिनु बान्धव रह्यो न जाय ।
रुदन सिवाय मुख बैन न उचार सकौं,
क्रन्दन करौं हौं तातै कछु हू कह्यो न जाय ।
बार बार ऊठ गिरी जात पुनि बार बार,
दुख को पहार भार शिर पै लह्यो न जाय ।

बिछर गये हो भाई निपट सदा के लिये,
असह वियोग मोसों अब तो सह्यो न जाय ॥
रहतो सभय मुझ पापी सों विशेष बन्धु,
मेरी इन आँखिन के बाहिर कढ्यो कबौंन ।
गड्ढे में गिरेको बांह पकरि उठाय लेतो,
सङ्कट परे पै देतो सान्तवना अती सबौंन ।
तेरे बिनु मोकों एक घरी हू असहनीय,
भयङ्कर लागत है आज यह हाय भौन ।
अन्त में कहे जे बैन कैसे तुम भूल गए,
तेरे पास भाई मोकों अब तो बुलावे क्यौंन ॥

मनहर

करतो सप्रेम काम परे अनुचित सेवा,
पनही हमारे कहँ आनि पहनावे की ।
कबौं परताप राजसिंह को चरित कबौं,
कबहू कबौंक गीता रहस सुनावे की ।
जब जब जीव कोउ कारन उचट जातो,
योजना करत मेरे मन बहिलावे की ।
बैठो हौं कमर बांधि आवे को तिहारे पास,
झांकि रह्यो बाट धर्मराज के बुलावे की ॥

शंका को सुचारुता सों कर देतो समाधान,
सुनातो प्रसिद्ध काव्य मो कों बहुतेरे ही।
तेनें ही सुझाई बहु काव्य में अनूठी युक्ति,
तेरे विनु खावत हौं आज भटभेरे ही।
तेरे सहयोग हू सों केते ग्रन्थ देखे हम,
तेनें कर दीनें देवलोक बीच डेरे ही।
तेरे ही सलाह सों बनाया यह ग्रन्थ बन्धू,
भाई लछमाल यह समर्पित तेरे ही॥

रणसिंह चरित्र

हिन्दू-कुल भास्कर महाराणा राजसिंह

मंगलाचरण

दोहा

श्री स्वामी शंकर सुवन , करिवर वदन कृपाल ।
बार-बार वन्दन करौं , दानी दीन दयाल ॥
श्री सीतापति सुख-सदन , मंगल करन अपार ।
विघ्न हरन आनन्दघन , कौशल राजकुमार ॥
को तोसो सामर्थ बलि , तोसो कौन निशंक ।
लेवे सों पहिले दई , भुजन भरोसे लंक ॥
आप उधारे अधम अति , गणिकादिक गजराज ।
तैसे मोहि उबारियो , राम गरीब निवाज ॥
जैसे टारे कष्ट ब्रज , केसी कंस निकंद ।
तैसे टारहु मोर दुख , नन्द नंद ब्रजचंद ॥
श्री करनी हरनी विघन , तो कर मेरी लाज ।
तैसे मोहि उबारियो , जैसे शाह जहाज ॥
बानी रानी धनद-सो , तेरो कोष विसेस ।
रमा रावरे चरन की , दासी रहत हमेश ॥

केसी=केसी नाम का राक्षस । करनी=करनीदेवी शाह=झगड़ू नामक व्यौपारी की जहाज करनीदेवी ने तार दी । बानी=सरस्वती ।

काव्य-कला को करि कृपा , आप बनायो भेव ।
बार-बार वंदन करौं , दीनबन्धु गुरुदेव ॥
जे कुतर्क के महत जन , हैं वहि ठेकेदार ।
पद उनके सब सों प्रथम , वन्दौं बारंबार ॥
जे ताकत पर-छिद्र हैं , तिन के वन्दौं पाव ।
कृपा राखि पलटहु कछुक , अपनो सहज स्वभाव ॥
कछु कुतर्क कीने बिना , जिन सों रह्यो न जाय ।
करहु भले केशव कहै , आप अघाय-अघाय ॥
हौं तो पहिले ही कहत , है यामें बहु दोष ।
सज्जन सहज स्वभाव सों , करि जावहिं खामोस ॥
सज्जन कछु करिहैं नहीं , तव कहिवे पर रोष ।
हौं कदापि करिहौं नहीं , तुमरो कछु न दोष ॥
तदपि आपकों धरत हौं , मैं तो वाही ठौर ।
जहाँ ईश गणईश है , अरु गुरुदेव बहोरि ॥

सुकवियों से प्रार्थना

सुकवि, ऐतिहासिक नहीं , हौं नहिं पुनि विद्वान ।
हौं तो किङ्कर कविन को , है इहि निपट प्रमान ॥
शब्द अर्थ उत्तम नहीं , लाय सक्यो मैं छन्द ।
मूढ़ जानि करिहैं क्षमा , कृपासिन्धु कवि इन्द ॥

मनहर

ॐकार वर्णन प्रकास को मैं भानु वन्दौं,
सूर्यमल्ल नरहरि तुलसी कविदों में।
राना राजसिंह छत्रसाल जसवंत वन्दौं,
छत्रपति सेवा वन्दौं प्रवल नरिन्दों में।
सादर सप्रेम पुनि वन्दौं उन आर्यन कों,
कबहू न परे जे विधर्मिन के फन्दों में।
धर्म-धुर-धोरी वीर महाराान पातल कों,
एक बेर वन्दौं का अनेक बेर वन्दौं मैं॥

वन्दौं मैं सप्रेम उन मान्यवर शूरन कों,
देश ते हटात रहे अरि मजबूतों को।
सीस को नमाय कर-जोर के विनय युत,
वन्दौं उन माता कहँ वीरन प्रसूतों को।
वेश्यन कों विप्रन कों वंदौं हौं अछुतन कों,
बार-बार देश-प्रेमी उन रजपूतों को।
भावी भूत वर्तमान काल के कविन वन्दौं,
वन्दौं मैं समाज सेवी सुघर सपूतों को॥

दोहा

या के पहले मैं लिख्यो, काव्य प्रताप चरित्र।
नाम 'प्रताप' प्रताप तें, मैं हूँ भयो पवित्र॥

विद्वान ने करि कृपा , ताहि लियउ अपनाय ।
बहुतन ने सम्मति लिखी , हर्ष बढ़ावन भाय ॥
पुरस्कार औरें पदक , दे करि कीन्ह सराह ।
ताही सों मेरो अधिक , और बढ्यो उत्साह ॥
स्वामी देश समाज हित , बढ़िगो चित्त अचूक ।
अरु हिन्दी साहित्य की , सेवा करन कछूक ॥

मुसलमान भाइयों से

दोहा

मुसलमीन या समय के , करहु क्रोध न तात ।
हौं तो यामें लिख रह्यो , सत्रह सौ की बात ॥
शासन जो अवरङ्ग को , तुम सों नहिं अज्ञात ।
वाके दुष्परिणाम के , भुगत रहे फल भ्रात ॥
पिता पुत्र बान्धव परम , करत जिनहि को नाश ।
देश प्रजा सुख देन की , कहो कौन-सी आश ॥
राज क्रिया में कुशल हो , जहाँपना अवरङ्ग ।
[illegible] चढ़ि [illegible]यो , अति हठधरमी रङ्ग ॥

'प्रताप चरित्र' पर काशी नागरी प्रचारणी सभा से रत्नाकर पुरस्कार और बलदेवदास पदक प्राप्त हुए । विद्वानों की प्राप्त सम्मतियों में से चुनी हुई कुछ सम्मतियों की एक पुस्तिका प्रकाशित की गयी है । बुक पोस्ट खर्चके लिए एक आने की टिकिट भेजकर मंगा सकते हैं ।

भए रहे हो या समय , बहु इसलामि सुबोध ।
वर्तमान के काल में , तुम सों कछु न विरोध ॥
पै यामें पूरब कथा , लिखिहौं बनन ललाम ।
काव्य संग में कल्पना , करन कविन को काम ॥

महाराना जगतसिंह

जगतसिंह जानत जगत , अति कीरति अनुराग ।
चतुरासी* शासन समपि , चतुरासी दइ त्याग ॥

ये महाराना इतने उदार थे कि अपने शासन काल में ८४ गाम, ७५० हाथी, ५६००० घोड़े दान किये। जिसकी साक्षीका प्राचीन दोहा—

सिन्धुर साडा सात सौ , हयवर छपन हजार ।
चौरासी शासन दिया , जगपत जगदातार ॥

ये महाराणा कवियों का आदर करते थे। जैसे कि जोधपुर राज्य मूंदियाड़ के ठाकुर करनीदानजी बारहठ उदयपुर आये तब उक्त महाराणाने जगदीश के चौक तक पेसवाई की, जिसकी साक्षी का प्राचीन दोहा—

करनारो जगपत कियो , कीरति काज कुरब्ब ।
मन जिण इच्छा ले मुआ , शाह दिलीश सरब्ब ॥

महाराणा राजसिंह

दोहा

जगतसिंह महारान के , पुत्र राजसी रान ।
कुलपति प्रगटे कैलपुर , भुविपति हिन्दुन भान ॥

---

* इतिहास में ५२ लिखे हैं।

सोरह सौ संवत् अरू, श्रेष्ठ छियासी साल।
कार्तिक कृष्णा बीज को, जन्म भयो नरपाल॥
कार्तिक कृष्णा चतुरथी, पाट बिराजे रान।
सत्रह सौ नव साल महँ, वीर धीर बलवान॥
याहि वर्ष रत्नान को, तुलादान किय रान।
भारत में नहीं आज लौं, नरपति कीनो आन॥

चितौड़ किले की मरम्मत कराने पर उसे ढहाने के लिए शाहजहाँ ने फौज भेजी

षट्पदी

रान अमर के समय, भई दृढ़ सन्धि परस्पर।
रोक हती चितौर, जिर्ण उद्धार करन फिर।
कियउ रान प्रारंभ, दुर्ग कर कोट बनावन।
सुनत खबर पतशाह, चल्यो प्राचीर ढहावन।
अजमेर आय हजरत इतें सादुल्ला को भेज कर।
तिहिं साथ प्रचुर पृथना दई तीस सहँस उपरान्त नर॥
आयरु उक्त अमीर, कोट कंगूर गिरायउ।
देश काल कों देखि, रान तब मौन धरायउ।

महाराणा राजसिंहका जन्म मेड़तिया राठौर राजसिंह की पुत्री जनादे (कर्मवती) के गर्भ से हुआ। रत्नों का तुलादान श्रीएकलिंगजी कैलाशपुरी में हुआ। आन=अन्य।

साादुल्ला इक पक्ष, रह्यो चित्तौर नगर महॅं ।
गयो लौट अजमेर, सुभट वह शाहजहॉं पहॅं ।
महारान क्रोध निज हृदय महॅं, दाबि रह्यो कउ विधि निडर ।
अनुकूल समय मिल जान को, सोच रह्यो अवसर सुघर ॥

दोहा

जैसे समय अभाव तें, कृष्ण रहे गहि मौन ।
जरासन्ध को फिर दई, शिक्षा अपने भौन ॥
दुर्ग कोट गिरवाय कें, शाह रह्यो नहिं मौन ।
चन्द्रभान कों भेज दिय, देन जले पर लौन ॥

चन्द्रभान का उदयपुर आना

चन्द्रभान के आन की, खबर मिली जब रान ।
तनवाये तब विप्र के, ठहरन हेत वितान ॥

चन्द्रभान मुन्शी पटियाले का रहने वाला ब्राह्मण, फारसी का विद्वान दारासिकोह का मुन्शी था। उसने फारसी में कई किताबें लिखीं। इसके लिखे हुए पत्रों का सग्रह 'इनसाए ब्राह्मण' के नाम से प्रसिद्ध है। चन्द्रभान के उदैपुर आने के पहले महाराणा ने मधुसूदन भट्ट और रायसिंह झालाको चितौर सादुल्ला के पास भेजा था। सादुल्ला ने महारानाका यह दोष बताया कि उसने गरीबदास (चाचा) जो बादशाह की बिना आज्ञा लिए चला आया था, अपने पास रख लिया। मधुसूदन ने कहा कि राजपूतों के लिए उदयपुर और दिल्ली दोनों शरणे का स्थान है। रावत मेघसिंह व शक्तिसिंह उदयपुर से दिल्ली गये फिर वहां से उदयपुर लौट आये। इस पर सादुल्ला ने पूछा तुम्हारी सेना कितनी है? मधुसूदन ने कहा २६००० सवार। सादुल्ला ने कहा हमारे बादशाह के पास १००००० सवार है, तुम उस

महाराना ने मुन्शी से मिलने की योजना बनायी

खरे होइ नहिं गहहि कर , जो लावहि फरमान ।
चौकी पर रखि देय हैं , मुनसी आन निशान ॥
उन के पूरव आय हैं , ताजीमी सरदार ।
तिन को आदर होय हैं , निज निज पद अनुसार ॥
चन्द्रभान के आन के , पीछे आवहि नांहि ।
जो आवहिंगे फिर यहाँ , वे ताजीम न पांहि ॥
करि प्रवन्ध महारान ने , मुनसी लियउ बुलाय ।
आय दियउ महारान को , आशिर्वाद सुनाय ॥
करि प्रणाम महारान हू , पूछिय कुशल सप्रीत ।
कृपा दृष्टि डारिय नृपति , ज्यों राजन की रीत ॥
मुनसी हू बूझिय कुशल , कछुक लिये अभिमान ।
समयोचित सादर सुघर , दिय उत्तर दीवान ॥
रान-हृदय सुलगत रही , प्रवल अनल पहिलेहिं ।
देनहार आहुति को , चन्द्रभान अब ह्वेहिं ॥
उमरावन भृत्यन सहित , जब जुरिगो दरबार ।
तब बोल्यो महारान प्रति , मुनसी समय निहार ॥

का मुकावला कैसे कर सकते हो। मधुसूदन ने कहा हमारे २६००० तुम्हारे २००००० सवारों के लिए काफी है। इन बातों से दोनो में तनातनी बढ़ गई। सम्भव था दोनो में तकरार बढ़ जाती परन्तु चन्द्रभान ने दोनों को शान्त कर दिया।

ताजीम=इज्जत जो हाथ से अभिवादन द्वारा दी जाती है।

चन्द्रभान व महाराना के प्रश्नोत्तर

मनहर

चन्द्रभान—

आयो हौं महीप जहाँपना को हुक्कम पाय,
संकट हू पायो अति पहारन राह को ।
शिथिल करायो आप सन्धि को निबंध सब,
कारण बनायो पातशाह उर दाह को ।
दच्छिन में सेना ना पठाई हैं कुमर संग,
चित्रकूट गढ़ को चुनायो करि चाह को ।
सीस धरि लीजे महारान अब राजसिंह,
सादर महान फरमान पातशाह को ॥

महाराना—

आये हो कृपालु द्विज मान्यवर तातें नवौं,
कष्ट तुम पायो तासों हृदय पिरावौं मैं ।
सेना ना पठाइबे को कुमर न आइबे को,
गढ़ के चुनाइबे को दोष ना धरावौं मैं ।
सन्धि की शिथिलता के कारन जरत शाह,
चन्द्रभान ताकी कहा औषध करावौं मैं ?
सीसवद वंस ह्वै प्रपौत्र रान पातल को,
शाह फरमान जासों क्यों न मुकरावौं मैं ॥

पहारन राह=पहाड़ी रास्ता ।

चन्द्रभान—

समय अभाव हू तें कृषि हू बिगरि जात,
समय अभाव गान गायक न ठानै है।
सुघर जहाजी सोउ लंगर है डार देत,
पौन प्रतिकूल में न वर्धवान तानै है।
समय विलोकि बिवसाई हू वनिज करै,
समय अभाव कवि काव्य न बखानै है।
कहे द्विज चन्द्रभान मेरी महारान सुनो,
बुद्धिमान वोही नर समय पिछानै है॥

महाराना—

जाति-कुल-धर्म के निमित्त मर जावत है,
जीव ना छुपावत है वे तो जीव रक्षा में।
चन्द्रभान वीरवर कबहू न फेल होत,
उत्तीरण होत समरांगण परीक्षा में।
पाठ पढ़ि जात दिन व्यर्थ ना गमावत है,
नहीं मुरझावत हैं ऊंच नीच कक्षा में।
शूर नहिं देखें बेर करत नहीं है देर,
कायर बितावै दिन समय प्रतीक्षा में॥

चन्द्रभान—

लैहैं तृन आनन कि दुर्ग सों निकरि जैहैं,
शाही सेन हू तें जब आन कर घिर हैं।

एडिन लगाई पीठ भगेंगे रणांगण तें,
बीनन लगेंगे जब महादेव शिर हैं।
पीवन लगेगी जब जोगमाया रक्त रण,
वीर माता पूत कोउ विरले ठहर हैं।
कहे चन्द्रभान रान आपने या देश महँ,
कौन ऐसो वीर है जो साहसन भिर है॥

महाराना—

होनहार भूप जसवंत को विलोक्यो उन,
छत्रसाल जू की न्यारी बिजया छनत है।
पंचनद बीच गुरु गोबिन्द प्रकट भए,
अभ्युदय 'शेवा' कर सब ही सुनत हैं।
बांझ ना भई है राजपूती ना गई है मरि,
सब ही गयो न वीर भूमि वीर धन है।
कहियो द्विजेन्द्र शाहजहाँ सों विनय करि,
भारत में वीर अजौं जननी जनत है॥

चन्द्रभान—

बार बार मुगलन के शासन में दोष धरें,
आप वहां आयकें सुराज अवरेख्यो ना।
प्रण सों कहत हम हिन्दुन के राज्य महँ,
भूतकाल भारत ने ऐसो सुख पेख्यो ना।

कौन ऐसो देश महँ वंचित रह्यो जो नर,
जाको गुण पातशाह स्वयं ही परेख्यो ना ।
कहे चन्द्रभान मेरे जान महाराज अजौं,
मुगलन के राज्य दुखी हमनें तो देख्यो ना ॥

महाराना—

राज्य मुगलान में सब ही पराधीन भए,
केऊ बलहीन भए कुल मरदाने के ।
धनी धनहीन भए कुली अकुलीन भए,
हक के विहीन भए योग्य हक पाने के ।
भाव के रहित नर मानिक अमोल सोउ,
कोडिन के मोल महँ निपट बिकाने के ।
नखत* भए हैं देखो नृपति दिवाकर के,
चाकर भए हैं केउ ठाकर ठिकाने के ॥

चन्द्रभान—

बहुत महीपन ने शाहन जमाई करि,
वहाँ पै जमाई धाक ससुरेन सारों ने ।
आजलौं नरेन्द्र बाप दादों सों लगाय करि,
सम्पति जुराई कब इतनी विचारों ने ,
कहे चन्द्रभान और महत खिताब पाए,
केते राज इन्द्र पुनि कितने कुमारों ने ।

सुराज=श्रेष्ठ राज्य । कुलीन=अच्छे वंश के ।
*नखत=तारे । Star of India

कुशल मनाई पातशाह की विविध भांति,
पाई बहु जीविका सपूत जमींदारों ने ॥

महाराना—

आपनी ही वस्तु कर आप पारितोषिक ले,
आपके सपूत योंही मन बहिलावें हैं।
हम तो सपूत उन्हें मानत हैं विप्रवर,
वक्षस्थल शत्रुन पै तुरी टहलावें हैं।
देश के निमित्त सर्वस्व को तिलाञ्जलि दे,
वीर ह्वे विधर्मिन के हृदय हिलावें हैं।
वैश्य होय शूद्र होय विप्र राजपूत होय,
वही मातृभूमि के सपूत कहलावें हैं॥

दोहा

चन्द्रभान चुप ह्वे रह्यो, बोल्यो नहिं फिर बैन।
महाराज हू मौन लिय, करि के नीचे नैन॥

(वीर विनोद भाग १ पृष्ठ ४१२)

उसी समय दरबार में ग्रन्थकर्त्ता के पूर्वज उदयभान का आना

छन्द

पूर्वज इक मेरो उदयभान।
अभिमानि हतो अरु उग्र बान॥

जमाई=जामाता। जमाई=दृढ़ किया। सारों ने=सालो ने।

वहि मर्यो यहाँ महारान हाथ ।
ताहि की लिखहुँ मैं कछुक गाथ ॥
बुलवायो मुनसी चन्द्रभान ।
दरबार करि रु तब श्री दिवान ॥
ता पूर्व कहिय नृप ने सबेहिं ।
फरमान को न ताजीम देहिं ॥
वहिं पत्र ऊठ करिकें न लेहिं ।
तख्त को आज दरबार ह्वेहिं ॥
मुनसी के पूरव व्यक्ति आहिं ।
ताको सु मान हम वहिं कराहिं ॥
पर ऐहैं पीछें कउक आज ।
ताको न रखहिं हम कछु लिहाज ॥
दरबार जबें जुरिगो विसेस ।
मुनसी हु आय पहुँच्यो द्विजेस ॥
देर करि आय तब उदयमान ।
कंचुकी रोकि दीनो निदान ॥
अरु कहिय समय पै नांहि आय ।
ताजीम आज नहिं सकहु पाय ॥
तुम हठी और क्रोधी बहोर ।
संभवतः विघ्न ह्वे यहीं ठोर ॥

कचुकी=डोढीवान। ताजीम=इज्जत जो हाथ से अभिवादन द्वारा दी जाती है।

कंचुकी कहिय तुमकों उचित्त।
घर लौट जाइय परम मित्त ॥
या कथन की न परवाह किन्ह ।
यों कहत बढ्यो अभिमान लिन्ह ॥
ताजीम सबन देखनन काज ।
प्रच्छन्न देन में कहा आज ॥
शिर सट्टे पाई सुनहु तात ।
ताजीम हमारी चली आत ॥
दरबार जाय कर उदयभान ।
वंदना करिय सब दिन समान ॥
ताजीम दीन नहीं तबै रान ।
आपने कथित पूरव प्रमान ॥
आवेस मध्य तब सुकवि आय ।
अपमान काव्य दीनो सुनाय* ॥

अपमान काव्य

जब था राणा जगतसी जग का उजयाला ।
रहगी बपड़ी चरमठी कीधा मुंह काला ॥
महारान कहिय तब क्रुधित बैन ।
तुम आहु निकट ताजीम लेन ॥

---

*वीर विनोद महाराणा राजसिंह । महाराणा की सख्त मिजाजी व कारवाई (वीर विनोद भाग १ पृष्ठ ४४४-४४५)

उदयभान का निवेदन

जान को नहीं है उदयभान,
ताजीम लिये बिनु महारान ।
रावरे हाथ जो नाथ काल,
ताजीम तदपि तजहुँ न कृपाल ॥

कवि वचन

ऊठि के उठाई गुरज रान,
तब करि सलाम कहि उदयभान ॥
ताजीम हमहि मिल गई आज,
आपकी होहु ऊमर दराज ।
महाराज गुरज कर वार कीन,
गिरि पर्‌यो सुकवि वहँ प्रानहीन ॥
यह भई भूल है उभय ओर,
भवितव्य जोग सों कहा जोर ।
यों मर्‌यो राखि के उदयभान,
ताजीम अमानत चरन रान ।

इस घटना के बाद उदयपुर से उदयभान की पगड़ी गाम सोन्याणे जहाँ उसका निवास स्थान था भेजी गई। इनके दो विवाह थे। एक गाम मढे के सडायचों के यहाँ, दूसरा ढोकलिये के दधवाडियों के यहाँ। इसकी दोनों स्त्रियाँ पगड़ी गोद में रख सती हो गईं। उन सतियों के समाधि स्थान पर सफेद पत्थर की छत्री बनी हुई है जो अब तक सोन्याणे बावड़ी

पर विद्यमान है। यह घटना वर्तमान काल में अरुचिकर होगी, किन्तु उस समय के लोगों के स्वाभिमान का स्मरण दिलाती है।

चन्द्रभान को विदाई

दोहा

विदा दई वहि वेर ही, मुलमी कों महराज।
दान-मान युत फिर कियो, बीरा को सनमान॥
इक हाथी सिरपाव इक, मोतिन कंठो लार।
देकर के दीनी बिदा, राज रीति अनुसार॥
चन्द्रभान गो आगरे, शाहजहाँ के पास।
बनी बात सब हो कही, ह्वै करि चित्त हतास॥
शाहजहाँ मन महँ करिय, बदला लेन विचार।
पै आखिर को होत वहि, जो चाहत करतार॥

पातशाह का बीमार होना

शाहजहाँ के लगि गयो, इक संक्रामक रोग।
आगे को फल भोगि है, जैसे भावी जोग॥

चितौड़ की बुरजें गिरानें व अजमेर के निकट के जिलों पर शाही अधिकार हो जाने से महाराना की चढ़ाई

चित्रकोट प्राचीर को, गिरवाई जो शाह।
ज्वलन हती महारान के, उर महँ प्रबल अथाह॥

हते प्रान्त अजमेर ढिग , पुर मांडल बद्नोर ।
मांडलगढ़ रु जहाजपुर , सावर हुररा ओर ॥
और फूलिया आदिकन , सीम मिलाए शाह ।
रान हृदय खटकत रहत , उर महँ सदा अथाह ॥
ढूंढ रह्यो अवसर नृपति , बद्ला लेवे काज ।
आइ मिल्यो संयोग वश , एहू अवसर आज ॥
शाहजहाँ पुर आगरे , वृद्ध पस्यो बीमार ।
अंतिम दिन वह गिनि रह्यो , रुज बढ़ि रह्यो निहार ॥
इत इनके चव पुत्र गन , दारा और मुराद ।
सूजा पुनि अवरंग छली , महाक्रूर मनुजाद ॥
इन के महँ प्रत्येक को , राज्य पान की आस ।
जीवित ही पतशाह को , करन लगे खल नास ॥
दारा अपने पक्ष को , पुष्ट करन के हेत ।
अकबरपुर महँ लगि रह्यो , साधु स्वभाव अचेत ॥
यह हिन्दुन सों करत हो , पूर्वकाल सों पक्ष ।
राजन को राजी रखन , केवल याको लक्ष ॥
सूजा चढ़ि बंगाल सों , दक्षिन सों अवरंग ।
अरु मुराद गुजरात सों , बढ़े करन हित जंग ॥
सुत सुलतान सिकोह भो , सूजा और तियार ।
आमेरप जयसिंह पुनि , रण-पंडित रिझवार ॥

अकबरपुर=आगरा । अचेत=गफलत से । सुलतान सिकोह=दारा का पुत्र ।

औरंगजेब मुराद को, राजलोभ दे कूर।
अपने पक्ष मिलाय लिय, ज्यों त्यों करिके शूर॥
दक्षिन सों अवरंग चढ्यो, ले संग बन्धु मुराद।
गोलंदाज फिरंगियन, लेकर लहि अह्लाद॥

दारा का औरंगजेब पर जोधपुर नृप जसवंतसिंह को भेजना

जोधपुरप जसवंत संग, कपटी कासिमखान।
दारा भेजिय दहुन कों, गिनि अवरंग बलवान॥

फतैयावाद की लड़ाई में औरंग की विजय

ग्राम फतैयावाद महँ, भई लड़ाई भीम।
खेत रह्यो अवरंग कर, आगे बढ्यो गनीम॥
उत सूबा बंगाल को, सूजा गयो पलाय।
आमेरप जयसिंह की, भई विजय मन भाय॥
इतैं आगरे आय पितु, केद कियउ छल मंड।
भारत को शासक भयो, औरंगजेब उदंड॥
सत्रह सौ संवत् अरु, पन्द्रह हायन पेख।
श्रावण शुक्ला तीज की, यह घटना अवरेख॥

कासिमखान=औरंग का मामा। फतैयावाद=धर्मातपुर।
इन दिनों औरगजेब मुराद को बादशाह कहता था और फुसलाता था।

अरिन परस्पर लरत इम , देखि राजसी रान ।
बदला लेवे हित महिप , कर दीनो प्रस्थान ॥
गये शाह अधिकार महँ , वहँ निज लेन प्रदेश ।
चढ्यो प्रपौत्र प्रताप को , लूटन शाही देश ॥

औरंगजेब की चाल

दक्षिण सों अवरंग बढ्यो , तब तें ही मक्कार ।
करत रह्यो महारान सों , गुप्त पत्र-व्यवहार ॥
लिखी कुमर जहिं कामको , मैंने कियउ विचार ।
ता हित पठवहु सेन इक , करिके शीघ्र तियार ॥
उतरि नरवदा तें दियउ , अवरंग और निशान ।
लिखि वृत्तान्त निज युद्ध को , धन्यवाद प्रति रान ॥
सेना पठई रान ने , ताको गिनि उपकार ।
लिखी रान प्रति सुहृद गिनि , नय तें समय निहार ॥

महाराना की विजय यात्रा

सत्रह सौ पन्द्रह समा , करन महा घमसान ।
शुक्र दसमि वैसाख को , चढ्यो रान बलवान ॥

उस जमाने में यह दस्तूर था कि गादी बैठ कर राना टीका-दौड करता जिस में राजा की बहादुरी मालूम होती थी। गनीम (समीप) के जिले पर धावा करते थे वही किया ।

कुमर=शाहजादा औरंग । निशान=निसान, पंजा लगा हुआ पत्र ।

छन्द मुक्तादाम

चढ्यो महरान बली सजि सेन,
उड़ी रज घोरन पोरन गैंन ।
चले मदमत्त महा गजराज,
चले उन्मत्त जु छत्रि-समाज ॥
भई पखरावलि की झननंक,
भई गजघंटन की ठननंक ।
भयो नउवत्त नगारन घोस,
भयो अहिराज दुखी तजि हौस ॥

षट् पदी

चित्रकूट सों जाय रान मांडलगढ़ लिन्नेउ ।
दरीबा रु पुर शहर शीघ्र अपने वश किन्नेउ ॥
शाहपुरा बदनोर केकरी और जाजपुर ।
सावर पुनि फूलिया किन्ह अधिकार वीर वर ॥
बनेरा लेरु गोमालपुर, वहाँ अंक दिन ठहर कर ।
समृद्धि लगी बहु रान कर, लूटि लियउ शाही शहर ॥

मनहर

राना राजसिंह जू की क्रोध की नजर होत,
पलक खुली है कैधौं तीजे नैन हर की ।

पुर=पुर नामका शहर ।

महाराना की टीकादौड़=जबर्दस्त कारवाई (महाराना राजसिंह)
(वीर विनोद भाग १ पृष्ठ ४१४)

कालिका कलक लगी सिन्धुन ललक लगी,
वंबी डक्क लगी दट तूटन सुअर की ।
बानी अक बक भई चित्त में अजक भई,
छाती धक धक भई शाही-प्रान्त भरकी ।
वीरता प्रसिद्ध कीनी नग्र जारि छार कीनी,
दक्ष-यज्ञ के-सी गति कीनी मालपुर की ।।

षट् पदी

अरु इनके अतिरिक्त, कियउ पुनि रान आक्रमन ।
लालसोट चाट्सू टोंक सांभर शाही जन ।।
इन सों लेकरि दण्ड उलटि पीछो नृप आयो ।
उदय नग्र महिलान पूजि भुज मोद बढ़ायो ।
जनपद सु शाह अधिकार महँ गये तिनहि उद्धार किय ।
अरु चतुरमास पूरब नृपति अपनी कीर्ति प्रसार दिय ।।

भगे हुए दारासिकोह का सिरोही से महाराना के नाम पत्र

दोहा

तुम महाराना हिन्द के, सब भूपन सिरताज ।
बनहु सहायक वीर वर, मेरे अब महाराज ।।

वीर विनोद भाग १ पृष्ठ ४१४ महाराना की जबर्दस्त कार्रवाई वीर विनोद भाग १ पृष्ठ ४१५।

आला हजरत को अधिप , तुम छुराइबे जोग ।
मारवार जसवन्त नृप , किय मो सों सहयोग ॥
हमने तो अब छोर दिय , रजपूतन पर लाज ।
एक आस तुमरी रखौं , और न कछु इलाज ॥
बूडत कर मेरो गहो , हनि अवरंग मनुजाद ।
यह सहायता आपकी , युग-युग रहिहैं याद ॥
यह दारा युवराज हो , साचो साधु सुभाव ।
हिन्दुन सों रखतो हतो , पूर्ण प्रेम सद्भाव ॥
पै याकी अवहेलना , करिय राजसी रान ।
मेटि सकै को विधि लिखत , हरि इच्छा बलवान ॥
करि कृतघ्नि अवरंग को , प्रबल पक्ष दीवान ।
चखवाये कटु फल सबन , भारत के हिन्दुवान ॥
दारा की करतो कछुक , जो सहायता रान ।
तो बनतो अवरंग को , सहज समाधी स्थान ॥
प्रथम हि तें अवरंग को , पक्ष लियउ दीवान ।
ताही के पर दृढ़ रह्यो , भावी वश महारान ॥

आला हजरत=शाहजहां । समाधी स्थान=कबर ।

दारासिकोह का निशान महाराना के नाम [वीर विनोद भाग १ पृष्ठ ४३३-४३४]

पहले शाहजहां ने चित्तौड़ की बुर्जें गिरवाई उसकी नाराजगी से महाराना ने औरंग का पक्ष ले लिया ।

बहुत दिनन लौं निभ गई , उभय ओर तें प्रीत ।
अब कृतघ्न करिवे लगो , औरंगशाह अनीत ॥
बहते पानी काढ़िये , है यह बात ध्रुवंक ।
काटन वारे के करन , बिच्छू मारत डंक ॥

चारुमती का स्वयंवर और विरोधका अंकुर

छन्द

अजमेर शहर समीप में इक रूपनग्र अनूप हो ।
ताको नराधिप राष्ट्रवर भल रूपसिंह सु भूप हो ।
धन धान में सम्पन्न अरु रत सदा वैष्णव धर्म में ।
वहि की प्रजा चहुँ वर्ण की संलग्न आपन कर्म में ॥
तिहिं गेह कुमरी इक भई जिहिं नाम चारुमती दयो ।
कछु काल में वह राजकन्या वय सु युवती को लयो ।
है रूप आगर अधिक नागर कुल उजागर बालिका ।
सागर सुता है सज्जनन को दुर्जनन की कालिका ॥
इन छमा पहुची की किधौं सब छीन लीन वसिष्ट की ।
दृढ़मती मानहु शैलजा अरु अचल श्रद्धा इष्ट की ।
कुल-बाट में बहि जात अरु नित पाठ गीता को करै ।
प्रभु चरण में मन राखि कर अनुकर्ण सीता को करै ॥
मन शान्त धार नितान्त ही एकान्त आलय में रहै ।
नहिं काहु को बतरात औ सुनिवो न काहू को करै

पट छीअ जावत काहु सों तब वाहि बिरिया न्हात है ।
अपने ही करको बन्यो भोजन नित्य कुमरी पात है ।
हैं रहिनि यों रट्ठोरनी की निपट उक्त प्रकार की ।
प्रसरी सुकीरति देश देशन मनहु नृपति उदार की ॥

दोहा

यवन विधर्मिन काल में, हिन्दुन लीनी मौंन ।
समय पाय दुषित भयो, भारत भुवि को पौंन ॥
सुता सुन्दरी होन को, छत्रिन में अति पाप ।
ताहि काल मानत हते, शाहन अनय प्रताप ॥

इतिहास राजस्थान मे लिखा है कि अकबर नामा आदि फारसी तवारीखों में जगह २ लिखा मिलना है कि अमुक हिन्दु राजाने बादशाह से अर्ज कराई कि मेरी लडकी बडी खूबसूरत है इसलिए उसे शाही जनान खाने में रक्खा जाय। परन्तु यह बात झूठ है, किसी राजा ने ऐसा नहीं किया। इस के प्रतिकूल दबाव डाला जाता तब राज-रक्षार्थ लडकियें देनी पडती थीं। जहागीर ने जयपुर के राजा जगतसिह की पुत्री से शादी करना चाहा किन्तु लडकी के नाना बूंदी के राजा भोजने विरोध किया। जिस पर काबुल से आने पर भोज को दण्ड देने का निश्चय किया। यदि राजा_लोक अर्ज करा के लडकियें बादशाह को देते होते, तो भोज के विरोध की जरूरत नहीं रहती। ठीक है कि राजरक्षार्थ दी जाती थी। किन्तु ऐसी राजरक्षा पर गाज क्यों नही पड जाती। अपनी आत्मजा विधर्मियों को दे कर कुल में कलक का टीका लगाना घृणित कार्य है। यह कलक का टीका सात समुद्र के पानीसे भी नही धुल सकता। इसके प्रतिकूल मेवाड़ वालों ने राज की परवाह न कर अपनी पुत्रियाँ विधर्मियों

चारुमती अति चातुरी, जबै सुनी अवरंग।
याको ब्याहन के अरथ, मन में बढ़ी तरंग॥
भ्राता कुमरी को हतो, मान किशनगढ़ नाह।
मुगल आम दरबार महँ, तासों बुल्लिय शाह॥
मानसिंह तव भगिनि सों, हम अब करहिं विवाह।
वाके अति सौंदर्य की, सब ही करत सराह॥
तातें अपने जाय घर, करहु व्यवस्था तात।
हम लग्नन पर आय हैं, ले कर शीघ्र बरात॥
सहमि गयो रट्ठौर सुनि, निकरि गयो जनु राम।
जी हजूर नृपनन कही, करहु मान सलाम॥
करि सलाम अपने नगर, आयो कमधज राज।
साह आत कोउ सदन पै, जैसे बोरि जहाज॥
यद्यपि राखी गुप्त तउ, प्रकट भई सब बात।
जैसे जलके पात्र में, तेल विन्दु प्रसरात॥
इक दासी पुर में गई, कोऊ कारन पाय।
स्वाभाविक बूझिय तिनहिं, वणिकन जन समुदाय॥

को नहीं दी। इसी से तो बराबरी वाले इन को प्रशसा करते थे। जोधपुर महाराज मानसिंहजी का कहा हुआ दोहा—

गिरपुर देश गमाड़ भमिया पग पग भाखरा।
मह अंजसे मेवाड़ सह अंजसे सीसोदिया॥

जी हजूर= खुशामदी राजा लोग। कमधज=राठौड। साह=साहूकार, व्यापारी। बोरि=डुबाकर।

वणिक

तुम तो दिल्ली जाय हो , राजकुमारी संग ।
हम को हू जिन भूलियो , पायरु बड़ो प्रसंग ॥

कवि वचन

समुझि गई इहिं तथ्य को , दासी चतुर सुजान ।
कुमरी पहँ दौरी गई , दई सूचना आन ॥
सहमि गई सुनत हि वचन , चारुमती वहिं बेर ।
लग्यो रह्यो पग देहरी , आगे उठ्यो न फेर ॥

राजकुमारी कि बिकलता

छन्द

हा जगदम्ब ! लोकपति रानी ।
हमने तो ऐसी नहीं जानी ॥
हा श्रीकृष्ण ! जगतके त्राता ।
संकट हरन आप अनदाता ॥
मो कों जनम दियउ गिरधारी ।
(तो) जनमत ही क्यों नहिं हनि डारी ॥
वासुदेव ! कौन ठाँ जावौं ।
काकों अपनी व्यथा सुनावौं ॥
हा जसुमति ! देवकी माता ।
सुत को पठवहु तुम अनदाता ॥

दाता धर्म दौरि तुम आवहु ।
मोकों बूडत आज बचावहु ॥
जो कहु सुनती नाम यवन को ।
(तो) धोय डारती शीघ्र श्रवन को ॥
कैसे सहन करौं करुणाकर ।
पानि ग्रहन तासों परमेश्वर ॥
पाहि पाहि कहि राजकुमारी ।
आरत ह्वै इमि बानि उचारि ॥
कब की टेरत दीन दुखारी ।
सुनत नहीं विनती गिरधारी ॥

मनहर

जाही हाथ ही तें धनु तोर सिय टार्‌यो कष्ट,
जाही हाथ खोल्यो जूरा भरत सु भ्रात को ।
जाही हाथ ही तें पोंछी घावन जटायु धूरि,
जाही हाथ ही तें रथ हांक्यो सखा पाथ को ।
जाही हाथ ही तें प्रभु पाए सबरी के बेर,
जाही हाथ कीनी तिय कुबजा सनाथ को ।
मेरी-सी गरीबनी की बेर रमाकान्त तुम,
हाय क्यों समेट राख्यो नाथ वहि हाथ को ॥

जूरा=जटाजूट । पाथ=पार्थ, अर्जुन ।

समुद्र अथाह भर्यो पावत न वारापार,
  भ्रमर अनेक परे विकट गिनाऊँ के ।
पौंन प्रतिकूल चलैं अधिक हिलोरें देत,
  प्रलय समान चढ़े बद्दल धराऊ के ।
मकर डुबावने को भयंकर चल्यो आत,
  रावरे बिना न अब और हाथ काऊ के ।
मैं तो हौं तिहारी गैया निहोरौं कन्हैया तोसों,
  तारहू हमारी नैया भैया बलदाऊ के ॥
गौवन उबारी काली नाग नथुना को नाथ्यो,
  कूदि परे काली दह अधिक अगाधा है ।
मुरली को छोरि कहुँ पीताम्बर डारि कर,
  दौरत हो बेग सुनि आधा नाम राधा है ।
करुणानिधान दुखसागर तिरावो क्योंन,
  यकृत सिरावो क्योंन मेरो तुम दाधा है ।
गिरती है स्थूल देह जरत हिये में आग,
  हरत हमारी क्योंन नाथ हाय बाधा है ॥
आवत बरात शीघ्रता सों अवरंग जू की,
  मेरो दुख नाथ छिन-छिन में बढ़तु है ।
दौरियो दयाल कारी कामरी धरन वारे,
  दासी के नितान्त पंच प्रान ही कढ़तु है ।

धराऊ=उत्तर दिशा, दिल्ली की तरफ से ।

दर्शन तिहारे हेत रोकौं पै रुकत नाहिं,
अब तो कृपालु तरु-पंछी ज्यों उड़तु है।
हाथी के उबारिबे की बेर कहा फूल बिछे,
आज कहा पांयन में कंकरी गड़तु है?
ऐसी जो कहो कि हम तपस्विन तारत हैं,
(तो) कीनी का तपस्या छुद्र गनिका सु गायकी।
ऐसी जो कहो कि हम दासन कों तारत हैं,
(तो) सेवा का अहिल्या तिय रावरी अघाय की।
ऐसी जो कहो कि हम भक्तन कों तारत हैं,
(तो) पूतना निगोड़ी कबैं भक्ती तनु ताय की।
ऐसी जो कहो कि हम संबंधिन तारत हैं,
(तो) सबरी का ह्वती नाथ बेटी रघुराय की॥
नम्र बनि जात सभ्य बड़ी साहिबी को पाय,
आप भे घमंडी लगे आरत बिसारिबो।
नारद मुनी-से मिले तुम्हें जब कृपा नाथ,
श्रापित ह्वे बन-बन में पैदल पधारिबो।
ह्वती जो भृगु तो मैं हू आज करती न देर,
सिरू कर देती नाथ लातन को मारिबो।
ले पद त्रिलोकपति फूल का गये हो स्वामी,
भूलि का गये हो तुम गरीबन तारिबो॥

सिरू=गुरु।

रुक्मनि को तारी सो तो आपने विवाह हेत,
युधिष्ठिर तार्‌यो सोऊ कुन्ती बुआ डावरो ।
केवट को तार्‌यो नदी पार कढिबे के काज,
हांकिबे में कुशल नितान्त भलो नावरो ।
विभिक्षण तार्‌यो सोऊ स्वारथ बनावे हेत,
निपट दशानन को पूरो घर घावरो ।
मेरी-सी गरीबनी को तारो जब जानौं नाथ,
गरीबनिवाज नाम सांचो यह रावरो ॥

गरुड़ को छोरि कर पैदल करी की बेर,
जैसे तुम धाये नाथ वैसे नहिं धाय हो ।
मुख कों छुपाय हो जु भक्तन-समाज बीच,
गरीबनिवाज नाम कैसे कहवाय हो ।
चिरियाँ नितान्त चुगि जायँगी वो खेत जबै,
आखिर में आय कर पीछे पछताय हो ।
देर सों पधारिहो तो खरी ना लखेहो नाथ,
बापरी गरीबनी की परी देह पाय हो ॥

अधिक परवाह बढ्यो सरिता को भयंकर,
कबै बूडि जाऊं कबै ऊंची कढ़ि आऊँ मैं ।
नैक ना सहारा मिले उभय करारा दूर,
कवल हिलोरन को कर तें गहाऊँ मैं ।

पास पतवार नहीं और कर्नधार नहीं,
करुणा-पुकार तब किनको सुनाऊँ मैं ।
दौरियो दयाल लाल लकुटी धरन वारे,
हाय मझधार के बहाव बही जाऊँ मैं ॥
कोसन लौं भीम धधकात बढ्यो नावानल,
पौन अति वेग बढ़ि रह्यो छिन-छिन में ।
मारग नहीं है निरविघ्न कहूं कढ़िबे को,
रोऊँ पै रुदन मेरो कौन सुनै बन में ।
आतुर लपट चहुँघाँ तें बहु दौरी आत,
अब तो झपट लगि रही मेरे तन में ।
दौरियो दयाल फन-फन पै नचन वारे,
हाय जरी जात प्रलैकाल की अगनि में ।
समुद अथाह महँ ग्राह ग्रसिबे को लाग्यो,
पैदल हूँ दौरि के सहाय की द्विरद की ।
देर ना लगाई तुम द्रौपदी की टेर सुनि,
इती करि दीनी नाथ दुसासन मद की ।
दीन जो सुदामा तासों मित्रवत् भेट कीनी,
मेटि दीनी पीर सबै दारिद दरद की ।
मेरी-सी गरीबनी की जो न परवाह करो,
तदपि निगाह करो रावरे बिरद की ॥

भीम=भयकर । फन-फन=काली नाग के फनों पर । द्विरद=हाथी ।

चारुमती की घबड़ाहट

छन्द

प्रारथना इहि विधि करि पाई ।
व्याकुल ह्वे मुरछा-सी आई ॥
जल गुलाब लेपन सुरभी को ।
किय उपचार दासियन नीको ॥
इहिं उदन्त सुनी दौरी माता ।
निज पुत्री को जैसो नाता ॥
दुहिता परी देखि अकुलानी ।
भई विकल अति ही महरानी ॥
दासिन कों आतुर ह्वे बूझत ।
पै कछु योग्य उपाय न सूझत ॥
लई उठाय गोद महतारी ।
पोंछत वदन स्वेद निज सारी ॥
एते महँ सुनि आयो भ्राता ।
विलखत वदन कहत है माता ॥
माता कहेउ पुत्र मति अंधा ।
क्यों स्वीकारिय उक्त संबन्धा ॥
मान कहेउ सुनिय महतारी ।
मंगनि हित पतशाह उचारी ॥

मगनि=सगाई ।

ताहि काल सब खरे रईसा ।
जोधपुर रु जैपुर के ईशा ॥
हम जब दृष्टि उन ही दिश डारी ।
जानेउ करहिं सहाय हमारी ॥
पै उन कहि आज्ञा शिर धरिये ।
मान सलाम शाह सों करिये ॥
शाहन को वहँ करत जमाई ।
तब मेरी क्यों करहिं सहाई ॥
यामें कछु मेरो नहीं दोषा ।
मातु व्यर्थ तुम करहु न रोषा ॥

राजकुमारी की मूर्छा खुलना और अपने चाचा रामसिंह को बुलाना

मूर्छा तजि आंखिन को खोली ।
पितृव्यहिं बुलवावन बोली ॥
आज्ञा पाय नन्दनी दौरी ।
ले आई पितृव्य किशोरी ॥
आय वीर देखी कुमरी को ।
धरकत हृदय वदन भी फीको ॥
जानि गयो यह सुभट मरज को ।
पै वश चलत नहीं है निजको ॥

बोली कुमरि कछुक धीरज धरि ।
मातु अंक में बैठी सुन्दरि ॥
तुम पितृव्य क्यों मोहि उबारी ।
जनमत क्यों न मोहिं हनि डारी ॥
हमको राखि कहा भल कीनेउ ।
कहा उच्च पद तुमने लीनेउ ॥
आखिर तो अब ही मैं मरिहौं ।
जियत विवाह न उन सों करिहौं ॥
तुम जानत ही मोरि बान को ।
क्यों नहिं हटकेउ बन्धु मान को ॥
का मुख तें तुम छत्रि कहावो ।
का मुख आर्यन को पद पावो ॥
हा विधि! जन्म मोहि तुम दियेउ ।
(तो) सीसोदन के घर किन दियेउ ॥
करि नीचो मुख सुनत रह्यो भट ।
धरत चारुमति बचन रह्यो घट ॥
तुम पितृव्य इम न कदरावहु ।
अब हू कछू उपाय बतावहु ॥
बोल्यो राम काहु नहिं दोषा ।
काहु पर न करहु तुम रोषा ॥

उनसों=पातशाह से, तुर्क से । बान=आदत । मान=मानसिंह । घट=हृदय ।

समय गती बलवति अति बेटी ।
तानें शक्ति हिन्दुवन मेटी ॥
इक सीसोद टरे इहिं रुज तें ।
वहि निकलंकी मोरि समझ तें ॥
अब उपाय द्वै तुमहिं बतावौं ।
मेरी सम्मति स्पष्ट चितावौं ॥
इक तो मैं तुम हित ध्रुव लरिहौं ।
वीर गती लहि रण में मरिहौं ॥
जियत विवाह न करिबे दैहौं ।
पै लघु अनी पूर नहिं ऐहौं ॥
शाही सैन समुख मेरे भट ।
सात समुद्रन अग्गें इक घट ॥
अन्त तुमें फुर मरिबो परिहैं ।
आत्मघात तें नाहिं उबरिहैं ॥
दूसर यह उपाय है नीको ।
ह्वै सन्तोष सबन के जी को ॥
पै स्वीकार दहुँन करिबे पै ।
वर राजा हामी भरिबे पै ॥
राजसिंह है चित्रकूट पति ।
दिग् दिगान्त में उन कुल कीरति ॥

रुज=रोग । घट=घड़ा । फुर=निश्चय । हामी=मंजूर ।

जहिं राखिय हिन्दुन लज लीका ।
वहि रघुवंशिन को कुल टीका ॥
जिन पूर्वज शाहन को बन्धे ।
धर्मरथ सुजूरा जहिं कन्धे ॥
है पवित्र इकलिंग उपासी ।
जाके सदा रहत जय दासी ॥
वह प्रपौत्र सांगा पत्ता को ।
गिनत नहीं शाहन सत्ता को ॥
यह सम्बन्ध जो वह स्वीकारहि ।
तो ध्रुवांक वह तोहि उबारहि ॥
पै यामें इक है कठिनाई ।
सकुचित हौं कहते न बनाई ॥
तू इक पत्र लिखे विनती युत ।
ताको असर होय उनके चित ॥
आज न सुता लाज को दिन है ।
जब जावत तब सरवस धन है ॥
आपति में न गिणत यह दूषण ।
कहते आवत पूर्व विदूषण ॥
नृप माने विनती नहिं तेरी ।
(तो) आतमघात कहा नहिं नेरी ॥

पत्ता=महाराणा प्रतापसिंह ।

यह सुनि मुदित भई अपने मन ।
अंधे को सु मिली जिमि आंखिन ।।
घाम श्रमित को गहरी छाया ।
जेठ त्रसित जनु पीयुस पाया ।।
दाधे पर जनु चूवा चन्दन ।
थके अध्वगन को मिलि स्यंदन ।।
कूमरी कह चाचा भल कीनेउ ।
परामर्श मोहि उत्तम दीनेउ ।।
यहिं सबंध नहिं होउँ सुखारी ।
(तो) मो सों बढ़ कर कौन गँवारी ।।
तव आयसु चाचा शिर धरिहौं ।
कागर लिखत विलम्ब न करिहौं ।।
पै इक पत्र तुमहु किन लिक्खहु ।
अनुनय विनय राम प्रति अक्खहु ।।
राम कहिय मैं हूं लिखि देहौं ।
सुतरसवार शीघ्र पठिवेहौं ।।
महारान की करहु प्रतिच्छा ।
शोक त्यागि रक्खहु शुभ इच्छा ।।
इहिं सुनि कुमरि लिख्यो तव कागर ।
पटू वचन रचना अति नागर ।।

पीयुस=अमृत । अध्वगन=पथिकगन । स्यंदन=रथ ।

एक पत्र काका लिख दीनेउ ।
जरदोजी बटुवा वश कीनेउ ॥
सुतरसवार चल्यो ले कागर ।
सुकन भए शुभ बहुत उजागर ॥
लंघत बहु पहार सरिता को ।
बाहक जात त्यागि थिरता को ॥
उदयनगर आलय अति सुन्दर ।
दीखन लगे मनहु धवला गिर ॥
प्रभा लिये मनु महल पुरन्दर ।
कंचन कलश चमंकत सुन्दर ॥
चहुँ दिश वर वृक्षावलि शोभित ।
देखत जिहिं विरक्त मुनि लोभित ॥
गिरन छटा चहुँघाँ बहु राजत ।
अम्ब कदम्ब द्रुमन युत भ्राजत ॥
शिव समाधि टारन जनु मनसिज ।
ऋतु वसंत रचि दीनी कर निज ॥
चर गनेश-ड्योढ़ी जब आयो ।
महापुरुष गनने रुकवायो ॥

कागर=पत्र। सुकन=शकुन ।

भ्राजत=शोभायमान । महापुरुष=गोसांई लोग जो महाराणा की गणेश ड्योढ़ीके पहरे पर रहते हैं ।

चर कहि रूपनगर सों आऊँ ।
करन चहौं दरसन नृप पाऊँ ॥
अरज करिय दरवान जाइ जब ।
बाहक कों बुलवाय लियो तब ॥
सभा-सदन जब देख्यो वाहक ।
चकित भयो अद्‌भूत छटा तक ॥
चूंडा अरु दूदा जग्गावत ।
कहूं ठौर बैठे किसनावत ॥
चाहुवान कहुँ ठौर विराजत ।
कहूँ ठौर झल्ला कुल राजत ॥
कहूँ ठौर कमधज बर वीरा ।
कहुँ परमार डटे रणधीरा ॥
सारँगदेव बढ़ावत शोभा ।
कहुँ सकतावत कीर्ति प्रलोभा ॥
यादव कहुँ कहुँ डोड दिपावत ।
अपनो जोम रहे उफनावत ॥
कहूँ ठौर चालुक्य बहादुर ।
पांडव वंशी महा धर्मधुर ॥

चूंडा=चूंडावत । दूदा=सागावत । कमधज=राठौड़ ।
सारंग देव=सारंग-देवोत (कानोड़ वाले) चालुक्य=सोलंकी ।

टल्लरु मल्ल कमानन धारी ।
कर कृपान अरु कमर कटारी ।।
इधर उधर की बात न कीजत ।
प्रायः वीर रसहिं महँ भीजत ।।
साहित्यिक चरचा कवि करियत ।
सुनि-सुनि नृपति मोद मन भरियत ।।
कहिं बन्दी विरदावलि बोलत ।
कहीं कंचुकी इत उत डोलत ।।
कऊ व्यक्ति करियत नजराना ।
कउ को देत पटा परवाना ।।
वाहक दूर खरो इम देखत ।
धन्य भाग अपनो वहि लेखत ।।
नज़र कियउ बटुवा करि वन्दन ।
सन्यो सुगन्धित चूवा चन्दन ।।
खोलि पत्र नृप पढ़िबे लागे ।
मनहर छन्द पढ़न अनुरागे ।।
सब दल पढ़ि रु मौन भै राना ।
असमंजसता उर दिय थाना ।।
मौन हते सब सुभट सभासद ।
राय सलूंबर करिय अरज तद ।।

मौन भये क्यों पढ़ि कर स्वामी ।
हम चाहत उत्तर अनुगामी ॥

महराना का उत्तर

गूढ बात यामें नहिं कोऊ ।
रूपनगर के कागर दोऊ ॥
पढ़ि कर इनको आप सुनाइय ।
या को अरथ सबन समुझाइय ॥
पढ़न लगो रावत रतनेशा ।
हतो काव्य मरमज्ञ विसेसा ॥

भावी प्राणेश्वर !

चारुमती का पत्र

मनहर

स्वस्ती श्री सुयोग्य उदैनेर हिंदुवान तीर्थ,
लिखौं उपमा कों सो तो मेरे पास स्थल ना ।
धर्म-धुर-धारी हिन्दू-सूर्य उपकारी रान,
रावरे चरन बिनु मेरो और बल ना ।
दासी मैं अपरिचित तुम कों प्रणाम लिखौं,
है तो निरलज्जता पै कहा करौं कल ना ।
दीनन दयाल दिन दानी दयासिन्धु देव,
रावरी कुशल चहौं दासी की कुशल ना ॥

कल=कल्याण, सुख चैन ।

करि ना सकत कोउ तनिक सहाय मेरी,
बान्धव है वली है कुटम्बि बहु नेरे पै ।
शाह अवरंग चल्यो आवत विवाहिबे को,
लाखों भट सेना चढ़ि आई उन लेरे पै ।
सबैं भांति अबला हिरास ह्वै निरास भई,
धरम बचायबे की एक आस तेरे पै ।
अधिक अभागिनी अनाथनी रठोरनी हूँ,
अचानक ढहि परयो गजब है मेरे पै ॥
मैं तो इन लोकन को मुखहू न देखती हौं,
उन सों विवाह नाथ का विधि करौंगी मैं ।
वैष्णवन धर्म अनुसार छुआछूत वारी,
शाह के जनानखाने कैसे विचरौंगी मैं ।
कदाचित दासी की करोगे अवहेलना तो,
पातीव्रत राखि भव सागर तिरौंगी मैं ।
चित्र दीनो रावरो उदैपुर की चितेरिन *,
हृदय लगाय वा कों चिता में जरौंगी मैं ॥
पंछी को न ठोर कहूँ सूझत जहाज बिना,
ठौर अरविन्द कली भानु बिनु और ना ।

---

* उस जमाने में अकसर चितेरो की स्त्रियाँ राजा, बादशाहों के चित्र बनाकर रियासतों में बेचने जाया करती थीं। सयोग वश एक उदैपुर की चितेरिन से चारुमती ने राजसिंह का चित्र लेकर अपना भावीपति वरण कर लिया। वली=संरक्षक।

ईश्वर बिना न ठौर मुक्ती अभिलाषी कर,
देवी देवतान जू की केती करो दौरना ।
सुनिहो न नाथ मेरी आरत श्रवन देके,
दासी को सुनाइबे सिवाय कोउ जोर ना ।
रान परताप के प्रपौत्र तव पांव बिना,
मेरी-सी अभागिनी को अन्य कहुँ ठौर ना ॥
दिल्ली की अधीश्वरी कहायबे पै लाय लगो,
मैं तो पटरानी-पद-रज ह्वै रहाऊँगी × ।
मैं तो जोधबाई सम चहौं नहिं राज काज,
मैं तो नाथ परिजन की टहल बजाऊँगी ।
मैं तो पातशाह थाल जरदे की इच्छुक ना,
रावरे उच्छिष्ट वह टुकरेन पाऊँगी ।
मलका कहायबे पै गाज क्यों न परो आज,
मैं तो छुद्र दासी महारान की कहाऊँगी ।
बैठौं तो फिरौं तो यदि भूमि पै परौं तो नाथ,
मेरो मन छिनहू कृपालु कल पावे ना ।
आपही को नाम और आपही की गाथा सुनौं,
सखिन की बात अन्य कछु हु सुहावे ना ।
आवत है याद जबै औरंग के आवन की,
वेदना हृदय बीच हाय मेरे मावे ना ।

× पटरानी सदाकँवर बाई पुँआर, बीजोल्या की ।

दासी के उभय नैन झरत तरस रहे,
दरस बिनु रावरे निगोड़ी नींद आवे ना ॥

कब मैं जनानी ड्योढी जाय के नमैंहौं शीश,
कंकन खुलेहौं कब मायन निवास में ।
कब मैं दबायहौंगी सासुन पवित्र पांव,
उत्सुक निरन्तर हौं नाथ इहिं आस में ।
वचनामृत रावरे पियौंगी मैं अघाय कबौं,
पंखे को झुलायहौंगी बैठ तव पास में ।
जो है वप्पवन्सिन को सदा तें पवित्र स्थान,
कब मैं प्रवेश हौंगी रान रनवास में ॥

इन्दव छन्द

जल पास नहीं कउ आस नहीं,
जब लाय लगी जिन के घर पै ।
प्रभु औरंग के डर सों कउ हू,
नहिं मोर सहायक है घर पै ।
दल ना बल ना मम बांधव पै
खल तोक रह्यो खग है शिर पै ।
मरिबो जियबो तव चाकर को,
करुणाकर रावरे कामर पै ॥

खग=तरवार ।

कर जात कसाइन के कपिला,
अवरंग करै मन चाहिवो है ।
पति रूप तुम्हें नृप मान चुकी,
तुमरो कर दच्छन साहिवो है ।
रखि के कुल-कानी जियौं या मरौं,
प्रभु रानी तिहारि कहाहिवो है ।
प्रण धर्म अनाथ गरीबिनी को,
अब रावरे हाथ निबाहिवो है ।।

दोहा

शरणागत वत्सल रहे , निज पीढ़िन सों नाथ ।
चारुमती की भूप अब , लाज रावरे हाथ ।।

दर्शनाभिलाषिनी—
चारुमती

वीर विनोद में लिखा है—'यह पत्र राज्य में सुरक्षितहै'

चारुमती के चाचा रामसिंह का पत्र

दोहा

श्री महाराना राजसी , अवै रावरी आस ।
रामसिंह रट्ठौर यह , अरज करत है दास ।।

कपिला=कपिला गाय । मनचाहिवो=मनचाहा ।

चारुमती का पत्र-लेखन

मनहर

रहट दुमाला जल अग्नि उलीचन को,
काव्य-कुञ्ज सींचन को सरस समंद है।
हिन्दुन को मान धन धाम है गरीवन को,
यवन गयन्दन को बब्बरि मयंद है।
अच्छरि उरोजन को महा अभिलासी रान,
शूरन सरोजन को उदय दुरिन्द है।
जोर है नजोरन को मानो मेघ मोरन को,
राजसिंह हम-से चकोरन को चन्द है॥
काष्टिक रसायन जो भैषज सबहि किन्ह,
देवी देवतान जू सों कीनी अभिलास है।
यन्त्र मन्त्र होम यज्ञ महा पाठ मृत्युञ्जय,
सबै ही प्रयत्न करि भै गये हतास हैं।
कोऊ ना तिमारदार निकट सम्बन्धी पास,
वैद्य रु हकीम खरे डारत निसास हैं।
चारुमती जीवन सों हम तो निरास भये,
एक महाराना-धन्वंतरि की आस है॥

सुभटों की राय

छन्द

रतन बिना कहि भटन जोर कर।
देश काल को सोचिय नृप वर॥

जहांगीर तें सन्धी भइ है ।
तब तें कछुइक शान्ती लइ है ॥
तनिक बात उन सों तुम तोरत ।
व्यर्थ नाथ रस में विष घोरत ॥
रान कहिय ऐसो रस उन सों ।
कहा लाभ ह्वै है राखन सों ॥

मन्त्री का निवेदन

(उस समय भीखू जी डोसी मन्त्री थे)

करत निषध न इहिं विवाह को ।
सब जानत निज बन्श राह को ॥
बिगरत है बहु काम क्रुद्ध सों ।
बुझिय कउ अनुभवी वृद्ध सों ॥
यह नहिं कहि बैठे कउ हम सों ।
व्यर्थ विरोध कियउ औरंग सों ॥
राज बढ़ावन ठौर गमायो ।
जो अपने पुरखान जमायो ॥
तातें आप मनन करि लीजै ।
पूछि काहु सों दृढ़ पुनि कीजै ॥
कहिय राव रतनेश रान सों ।
सहमत मैं हूँ मंत्री बान सों ॥

उस समय महाराना और रावत रतनसिंह दोनों जवान थे ।

पुरखन तें ऐसी सुनि पावत ।
असमञ्जसता जब इम आवत ॥
पूछत हते राज-बारठ सों ।
मत निचोर वहँ प्रकटत घट सों ॥
तातैं बूझिय राज सुकवि कहँ ।
वृद्ध और अनुभवी भलो वह ॥
राज सुकवि हित दूत पठायउ ।
प्रभु राना अन्तहपुर आयउ ॥
कृष्णदुर्ग सों कुमरि पठायो ।
सो रानिन को पत्र सुनायो ॥
पटरानी कहँ बूझिय नरपति ।
यामें कहा तिहारी सम्मति ॥
रानी कहिय बात यह ऐसी ।
हम नारिन को अखरे जैसी ॥
माटी की न सौत सुखदाई ।
तिय-समाज इमि बोलत आई ॥
सौत लगत नारी को ऐसे ।
नर को निज-तिय-जारहि जैसे ॥
पै इक छत्रिनि बिलखत बाला ।
प्रभु के गर डारन बरमाला ॥

पटरानी=बीजोलियाँ की सदाकुमर बाई पुआर ।

है अति आरतवंत विचारी ।
आय परी संकट महँ भारी ॥
सम्मति कहा हमारो आग्रह ।
वरलाइय रट्ठौरनि पति ग्रह ॥
इहिं तुम तिरस्कार करि देहो ।
(तो) निज निन्दा को जन्म सुनेहो ॥
रावरि नाथ प्रतिष्ठा मिटहै ।
हम को हू दुख होय अमिट है ॥
हम अरधांगिनी नाथ तिहारी ।
सुजस कुजस की भोगन हारी ॥
यामें नहिं अब करिये देरी ।
ह्वं सवार बजवाइय भेरी ॥
पुनि राना परिषद महँ आये ।
कछु दुविधा मन ऊपर छाये ॥
राज बारहठ उक्त बुलायो * ।
आय वृद्धजन सीस नवायो ॥
आदर लहि निज बैठक बैठो ।
बान आपनी कछुइक ऐंठो ॥
रान कहिय स्वास्थ्य है कैसो ।
कविवर कहिय वृद्ध के जैसो ॥

* ये राव बारहठ ग्रन्थ कर्त्ता के पूर्वज केसरीसिंह जी थे ।

दरसन हित नित चाहत ऐबो ।
पै महलन को कठिन चढ़ैबो ॥
मैंने प्रभु त्रय पीढ़िन जोई ।
सेवा कीन बनी वह सोई ॥
अब जरजरित भयो तनु मेरो ।
चतुराश्रम बढ़ि गयो घनेरो ॥
किहिं कारन प्रभु मोहिं बुलायो ।
सुनत रान कर पत्र झिलायो ॥
कहिये सुकवि समय अनुसारी ।
सब चाहत अनुमती तिहारी ॥
अथ तें इति पढ़ि पत्र बारहठ ।
सिर उठाय तब बोल्यो सद्भट ॥
निज के कुल की जो मरियादा ।
जानत हो तुम नाथ अबाधा ॥
जानत हू मो कों तुम बुझिय ।
कृपानाथ आदर कवि को किय ॥
पै कहिहौं निज मति अनुसारा ।
सुनिये आर्यन वन्स उजारा ॥

मेवाड़ का इतिहास हनुमतसिंह रघुवन्शी आगरा निवासी कृत में "बारहठ" लिखा है और महात्मा टॉडनामे के राजसिंह प्रकरण में राजकवि लिखा है।

मनहर

क्षात्रधर्म राख्यो रान लक्खन नें साका करि,
राख्यो रान लक्खे हिन्दू धरम सदाप को ।
राख्यो रान कुंभे शाह महमुद मालवी को,
राख्यो रान कर्ण अवरंग जू के बाप को ।
राखे रान सांगे धीर वीर पातशाह बन्ध,
जगत प्रसिद्ध नाम आज लौं प्रताप को ।
सबैं जग जाना वीर बाना निज व्रत राख्यो,
राना राजसिंह है घराना ऐसो आपको ॥
अष्टमी सदी तें नर पुंगव महीपन ने,
देवन विमान व्योम केउ बेर ढांक्यो है ।
केउ बेर रानन ने कीनी है भवानी तृप्त,
केउ बेर नारद को हास्य रस छाक्यो है ।
गनन संयुक्त महा भयद रणांगण में,
केउ बेर सीस सिव बीन बीन थाक्यो है ।
लाखन नरन रक्त पुरखन बहाय कर,
सींच सींच पहुवी कों हिन्दू-धर्म राख्यो है ॥
याही हेत भारत के गढ़न सों आज लग,
सबन सों ऊँचो चित्रकूट गढ़ भै रह्यो ।

लक्खन=महाराणा लक्ष्मणसिंह । साका=सब के सब मर मिटना ।
लक्खे=राना लाखा चूडा का पिता । बीन बीन=चुन चुन ।

प्रबल अनेक खल आये हैं यहाँ पै तोउ,
रानन के आश्रय सों सदय अभै रह्यो ।
मैं तो निज द्वारहठ कहौं सो सुभाविक है,
अखिल जिहान निकलंक यश छ्वै रह्यो ।
रावरे प्रसिद्ध पूर्व पुरखन की बीरता के,
कीर्तिस्तम्भ खरो वो कृपालु हेला दे रह्यो ।।

भिरे हैं लरे हैं रणछेत्र में झरे हैं पर,
कबैं ना डरे हैं देखि सुभट चकत्ता के ।
कीकरन छांह तरे परे हैं अनेक बेर,
भये ना खरे हैं जाय छांह शाह छत्ता के ।
तीन-तीन दिन के अनेक उपवास कीन,
रहे ना अधीन पै जलालुदीन सत्ता के ।
धरम बचायेबे के जठरा बुझायबे के,
ऊमरे प्रसिद्ध हैं जिहान रान पत्ता के ।।

एक छत्रि कन्या बरजोर ही यवन लेन,
सीसवद देखि घूंट जहर गिटेगो का ?
करुणास्वर प्रारथना करत रठौरनी है,
ताके ब्याहिबे को बप्प वन्सज नटेगो का ?

अभै=अभय । हेला=पुकारना । छत्ता=छत्र । कीर्ति स्तम्भ=चितौर का कीर्ति स्तम्भ ।

राजन के राजा रघुवंसी सब काल रहे,
आज पृथिवी तें वो प्रभुत्व ही मिटैगो का ?
सदा रन रत्ता दृढ़मत्ता रतनेश वंसी,
पत्ता को प्रपौत्र अवरंग तें सिटैगो का ?
आंखें आप भारती की नीची करि देहो कहा,
गोहिलन वंस आज गौरव गमेहो का ?
ऐसी भूप कन्या की करोगे अवहेलना तो,
हिन्दुन के निन्दनीय वाक्य ही खमेहो का ?
आरत पुकार भावी वामा की सुनोगे नाहिं,
रामा की विनय नाहिं हृदय जमेहो का ?
अबला अभागिनी रट्ठौरनी न तारो तब,
धर्मधुर लागी ग्रीवा नीची करि देहो का ?
पान मकरन्द अरविन्द के करन वारी,
भ्रमरी जमेगी कहा किंसुक के दल में।
शंकर को इच्छत जो महा जोगमाया वह,
डारिहैंगी बाँह कहा भस्मासुर गल में।
चातुरा वो चारुमती रावरे को चाहत जो,
बैठेगी अभागी कहा औरंग महल में।

पत्ता=प्रतापसिंह। रतनेश=रावल रतनसिंह जिसने पहिला साका किया। गोहिलन=गहलोत। खमेहो=सहन करोगे। रामा=चारुमती का काका रामसिंह।

बैठिहैंगी शेरनी का श्यामरंग मृग पास,
बैठेगी मराली कहा गिद्ध की बगल में ॥
कृष्ण भगवान कृत गीता के उपस्थित ही,
चारवाक वाक्य उर आर्यन मढ़ेगो का ?
रश्मि के निधान भानु भगवन के विद्यमान,
प्रबल जिहान महँ तिमर बढ़ेगो का ?
आपके विराजमान होते महारान आज,
चारुमती व्याहिबे को औरंग चढ़ेगो का ?
महत मराल के विलोकत ही राजसिंह,
आज राजहँसिनी को कौवा ले उड़ेगो का ?
रावरे वदन पर शान्त भाव दीखियत,
कैसे विभिचार भयो आज भुजबल में ।
सनातन धर्म कहा आज लुपजाय हैंगो,
सूर्य छिप जाय हैंगो कहा उदैचल में ।
मेरे जान आज ढसि जाय हैंगो आसमान,
हिम वसि जाय हैंगो बड़िवा अनल में ।
पूरण प्रकाश ग्रसि जाय हैंगो अन्धकार,
मेरू धसि जाय हैंगो आज रसातल में ॥
दीनन के बन्धू बप्पवन्सी है सदैव यह,
लोकन के चित्त पर सिक्का ढार राख्यो क्यों ?

चारवाक=अनात्मवादी, नास्तिक । विभिचार=भ्रष्ट आचरण ।

गरीब निवाज बनि व्यर्थ ही के कृपानाथ,
बापुरे गरीबन को धोका डारि राख्यो क्यों ?
हिन्दुन की लाज को उतार दीजे शीघ्रता सों,
नाहक भुजों पै तुम तोकि भार राख्यो क्यों ?
अबला स्वजाति कीही विनती न मानो तो, तो
शरणागत वत्सल को बानो धार राख्यो क्यों ?

कहा भयो वृद्ध मैं भयो तो नृप राजसिंह,
आत्मबल वृद्ध ना भयो है देह छीन में ।
विषय कुवासना तें हृदय हट्यो तो कहा,
सदा मन मेरो जुट्यो रहत अरीन में ।
द्वारहठ ह्वैके रण उत्सुक न ह्वैहौं कहा,
कहा ना बजेहौं तेग रावरे अधीन में ।
आपही के पुर्खन के अन्न तें बन्यो जो रान,
रक्त बहि रह्यो है हमारी धमनीन में ।।

लाइये न तनिक विचार देश काल जू को,
हानी धन ह्वै है यह हृदय धरीजे ना ।
मो कों तुम बूझत हो तातें सत्य कहौं बात,
धर्म कहँ धोका रघुवन्सी आप दीजे ना ।

तोकि=उठा ।

चारन हौं जाति तावें सत्य कहिबे की बान,
मेरे तीव्र बैनन पै रान आज खीजे ना ।
चलिके विवाहिये निशंक राजकुमरी को,
नाथ उठ जाइये विलम्ब नेक कीजे ना ॥

छन्द

सुकवि बैन ये चूभे नृपति उर ।
तीर गडे जनु अधिक भयंकर ॥
सभासदन प्रति कहिय रान तब ।
सम्मति सुकवी आप सुनी सब ॥
भटन बदी कवि कीन निवेदन ।
ताको हमहूँ करत समर्थन ॥
शीघ्रहि नाथ बरात बनाइय ।
रट्ठोरनिहिं ब्याहि ले आइय ॥

महाराना

रान कहिय तुमरी मति नीकी ।
पै कछु कहौं हमारे जी की ॥
जो कदाच अवरंग चढ़ि आवै ।
ताको रोकन कवन पठावें ॥
कहिय राव रतनेश सलूंबर ।
सुनिये अरज दास की नृपबर ॥

मैं अवरंग को रोकन जेहौं ।
वहिं ध्रुवांक नहिं आवन देहौं ॥

जब लग ब्याहि लेहु तुम रानी ।
तब लग फटक न देहु गुमानी ॥

यही कहा जब लग उदियापुर ।
आवहु कुशल आप करुणाकर ॥

कितनो हू परपंच करावहिं ।
पै अवरंग नहिं आवन पावहिं ॥

आप प्रसन्न चित्त चढ़ि जाइय ।
कतिक वरातिन अग्र पठाइय ॥

रान कहिय वर वीर राव तुम ।
या सों अधिक कीन कहा संजिम ॥

ऐसे हमरे निकट बहादुर ।
कहा सोक है अवरंग खल कर ॥

इम कहिके नरनाह भटन युत ।
दरसन हित इकलिंग चल्यो द्रुत ॥

सजिम=सजिम राठौड़ ने महोबा की लडाई में गिद्धनी को अपना कलेजा फेंक कर अपनें घायल स्वामी पृथ्वीराज की आंखें नोचते बचाया । सोक=चिन्ता ।

रतनसिंह का एक रात्रि के लिए सीख लेकर सलूंबर जाना

छन्द हरिगीतिका

इत रावने इक द्योस हित पुनि, सीख निज ग्रहकी लई ।
महारान परम प्रसन्न ह्वै घर जान की आज्ञा दई ।
रतनेश अमित उमंग सों बरवीर निज पुर में गयो ।
राका ससी सो राव भो अरु, नगर सागर सो भयो ॥

प्रभु चरन सेवा करत भट रतनेश को इक अब्द भो ।
आगमन काग उड़ावती तिय, द्योस वह उपलब्ध भो ।
घर घर बधाई बटत है अरु, गात गायकनी घनी ।
हड्डीहु फिरती महल में पिय रूप विक्रम गर्विनी ॥

दिन अन्त अन्तहनगर में जब राव प्रमुदित ह्वै गयो ।
सादर सुस्वागत सथ्थ हाडी, पीव मन उर में लयो ।
करिके जु भोजन दम्पती जब, गये शयनागार को ।
तब राव कह्यिय आपने निज हृदय के उदगार को ॥

जिहिं पत्र चारुमती लिख्यो निज रानी के प्रति सो कह्यो ।
ताकी अनूनय विनय वर्णन, भाट ज्यों करतो रह्यो ।

गायकनी=कलावतनी । हड्डी=हाडी रानी । अन्तहनगर=रनवास ।
राव=रावत की उपाधि । भाट ज्यों=भाट वंशावली पढ़ता है वैसे ।

अब कहिय रावत अन्त लग निज राज-बारहठ की कथा।
पुनि बदिय अपने वंसकी चली आत जो महती प्रथा॥

अरु राजकुमरी ब्याहिबे पृथना चढ़ी महारान की।
सब ही कही अरु आपने को, शाह रोकन जान की।
तब कहिय इम वीरांगना अति, श्रेष्ठ है दिन आज को।
उद्धार करनो 'चारु' को अरु कार्य है महाराज को॥

करि विजय स्वामी आप निश्चय, कुशलता सों आयहो।
निज स्वामी को जय अर्पि के प्रभु धन्यवाद सु पायहो।
तब कहिय रावत रतन ने जय तो अनिश्चित भामिनी।
मरनो अनिश्चित है नहीं, यवनान सेन घनी सुनी॥

तब बदिय रानी सोक नहिं तव अग्र महती फौज को।
गजवृन्द समता लहहिं का इक सिंह गर्जन औज को।
रखिके प्रभू शुभकामना, कर्तव्य को निर्वाहिये।
जस युक्त तन तें नाथ लाखन वर्ष अरि गन दाहिये॥

हमतो वराननि पालिहैं करतव्य अपनो है वही।
तुम हू तुम्हारी जाति को कर्तव्य पालहु कि नहीं।
हमको सु युवती जानि के परिहास नाथ करात हैं।
नहिं भूलती छिन एक हू कर्तव्य निज को ज्ञात है॥

टि॰ रानी की आयु उस शमय १८ साल व राव की २२ साल की थी।

कहि गये पूरव सुकवि सो हमतें हि नेक छुपी नहीं।
अब हू बहत है जाह्नवी भुवि गर्भ बीच लुपी नहीं।
सुनि उग्रवच निज तीय के कछु, राव ने स्थिरता लही।
पर अजहु भटके हृदय में सन्देह मात्रा बनि रही॥

जगि ब्रह्म मुहुरत वीरने नितनेम अपनो करि लियो।
अरु भटन बाजिन आपने आदेश चढ़िबे को दियो।
पुनि पाय भोजन रतन ने निज सस्त्र अस्त्रन सज्जये।
हय हींस गर्जन गजन की अरु वीर बाजन बज्जये॥

निज करन रानी नाह के कटि खर्ग प्रमुदित बांधती।
पति वीर बेश विलोकि के अभिमान करती है सती।
मिलि भेट तिय सों चुण्डहर अन्तिम विदाई लेत हैं।
निज करन रानी पान अपने नाह मुख में देत हैं॥

तब राव उतरत सीढियें द्वे एक फिरकर यों भनी।
कर्तव्य अपनो भूलियो जिन वीरजाया भामिनी।
तब राव-रानी चखन सों आदेश को उत्तर दयो।
फिर राव सीढिन उतरि के निज बाज के ढिग चलि गयो॥

है चौक में सन्मुख खरो रतनेश बाग उठाय कें।
हाडी विलोकत नाह को जालिन झरोखे आय कें।

बीरबाजन=नगारा।

अनुचरी इक इक थाल में दधि दूव श्रीफल ले खरी।
तिहिं सकुन-द्रव्य पदार्थ पै रतनेश की दृष्टि परी॥

करि सकुन भेट सुवीर ने 'रंगवेल' सों इम अक्खई।
हो राव अति ही बुद्धिवर पर मोह ने मति ढकई।
तुम जाय कहियो हड्डि सों मम वचन यह अनुगामिनी।
कर्तव्य अपनो याद में रखहू निरन्तर भामिनी॥

तुम जाइ लावहु याहि को उत्तर प्रतिक्षा में खरो।
तब लौं न आगे जाइहौं तुम शीघ्र हो पीछी फिरो।
सह थाल दासी दौरि के महिषी रतन की पहँ गई।
जहिं बानि रावत की हती वह यथावत ही कहि दई॥

सुनि हड्डि गुनि लिय स्वामि को मन उरझिगो अति मोह में।
कर्तव्य अपनो कर न पावहि क्योंन आवहि छोह में।
जब युद्ध पै चढ़ि जायँगे तबहू न मो कहँ भूलिहैं।
तातें कदाचित् नाह को रणक्षेत्र में मन डूलिहैं॥

तब ही हमारो मरन है इहिं बात निश्चय विधि कही।
अरु वीरगति पति पाइहैं तबहू सु मरनो है सही।

टि॰ सुना है कि सलूंबर की यह हाडी रानी, महाराना राजसिंह की रानी और जोधपुर महाराज जसवन्तसिंह की रानी जसमादे (रूठी रानी जिसने अपने पति के युद्ध से विमुख होने पर गढ़ के कपाट जड़वा दिये, बाद में दिल्ली के युद्ध में काम आई, ये तीनों बहिनें थीं।

हाडीरानी का स्व-हस्त शीश-छेदन

तब क्यौंन मैं पतिदेव के कर सीस को अर्पित करौं ।
अरु स्वामि को सन्देह सब ही एक ही छिन में हरौं ॥
पुनि हड्डि ने 'रंगबेल' सों मनकी सु इच्छा सब भनी ।
तुम हो हमारी सहचरी सिसुकाल की चिरसंगिनी ॥
अन्तिम तिहारी बड़ी सेवा मानि हौं 'रंगबेल' री ।
यह सीस मेरो थाल में निश्चिंत ह्वै कर झेल री ॥
'रंगबेल' तिय स्वभाव वश यह वचन सुनि सहिमा गई ।
तब राव-रानी क्रोध करिके उग्र बानी कहि दई ।
नहिं मानिहै तू 'बेल' री तो पूर्व तोकों मारिहौं ।
फिर सीस मेरो याहि बिरियाँ आप करन उतारिहौं ॥
तब 'बेल' री वह थाल अपनी स्वामिनी आगे धर्‍यो ।
पुनि रानि ने 'रंगबेल' सों उपदेश अंतिम इम कर्‍यो ।
इहँ सीस देकर जाय कहहू स्वामि सों तुम अनुचरी ।
आज्ञा तुम्हारी नाथ दासी पूर्व ही सिर पर धरी ॥
कर्तव्य अपनो हम कियउ सन्देह राउर त्यागिये ।
अब नाथ! राना कार्य हित रणक्षेत्र में अनुरागिये ।
इमि कहि रु रानी आपनो खग आपनी ग्रीवा धर्‍यो ।
सिर कट्‌यो कर अपन सों वह थाल भीतर गिर पर्‍यो ॥
वहि थाल शीघ्र उठाय के 'रँगबेल' रावत पै गई ।
सिर देखि के रतनेश आत्मा विकलता अति ही लई ।

पुनि आपनो ही दोष गुनि कें, धीरता विचलित भई ।
'केशव' लगावै कहा उपमा बात यह तो है नई ॥
कछु देर सों मन राव को चलि शान्ति आलय में गयो ।
उर बीच माया मोह को दृढ़ सदन हो वह ढहि गयो ।
द्वै दिवस तें भट आइके महारान सों सविनय नयो ।
यह उक्त श्रेष्ठ उदन्त पूरव रान ने हु सुनि लयो ॥
रनवास हू इहिं बात सुनि अभिमान किय तिय जाति को ।
सुनिके हि स्तम्भित ह्वै गयो अति क्रूर दल आराति को ॥

मनहर

जग में सदैवही आदर्श रही आरज्या है,
परम पवित्र जाकी पातीव्रत बान है ।
याही पुन्यभूमी सीता सती ने जनम लीनो,
हाडी रावरानी दीनो जाहि को प्रमान है ।
ऐसी नारियों तें वीरा नारिन की खान रही,
ताही को स्वदेश करे क्योंन अभिमान है ।
स्वामी हित सीस निज कर सों उतारि देत,
भारत में देवियें अजौं तो विद्यमान है ॥

कवि वचन

कोउ सती नाह के मरे पै जरि जाय चिता,
लोकन को नेक अपवाद उर लाई है ।

क्रोध सों विवस होय कोउ हठधर्म साधे,
कोउ मरजावत वियोग की सताई है ।
समता न पावै नरी किन्नरी सुरी हू कोऊ,
'केशव' बनावै तब कैसे कविताई है ।
स्वामी हित काट देत आपने करन सीस,
हाडी रावतानी की अनोखी रवताई है ॥

रानी जसवन्त की अतीव मन मोद पावे,
कमला फुलावै तन खरी कमधानी है ।
कोरमदे उमा भटियानी हू गुमान लावे,
पद्मिनी अमोघ हर्ष छावै चाहुआनी है ।
वामा नृप बाली की नितान्त पछतावै बैठी,
मन्दोदरि मुख कों बनावै गढ़रानी है ।
कट्यो सीस हाडी को विलोकि सती प्रेम लावे,
दांतन में आगुरी दबावै देवरानी है ॥

जोधपुर जसवतसिंह की रानी जसमांदे, दिल्ली युद्ध में काम आई। कमला=जयमल्ल राठौड की पुत्री कमला। कोरमदे=कोरमदे भटियानी उमा=रूठी रानी मालदेव की रानी। पद्मिनी=महाराना रत्नसिंह की रानी। तारा=बाली की रानी ।

कोरमदे मोहिल जाति की कथा टोड राजस्थान में है।

रावत रतनसिंह का शाही फौज रोकने जाना

दोहा

उदयनगर सों राव इत, चढ्यो वीर बलवान।
दश हजार सादिन सहित, पूरव कथित प्रमान॥
अकबरपुर सों आत है, रूपनगर को राह।
जाइ डट्यो रावत जहाँ, नगर सलूंबर नाह॥
रूपनगर वाहक जिनहि, रान विदाई कीन।
चारुमती प्रति प्रेम सों, स्वयं पत्र लिख दीन॥

चारुमती के नाम महाराना का पत्र

मनहर

श्रीमती रठौरनी तिहारो पत्र पढ्यो हम,
मोद मन पायो अब शीघ्र तुम्हें वरिहैं।
डरियो ना नेक तुम आतमघात करियो ना,
औरंग सों रणमें तिहारे हेत लरिहैं।
बनि कें बराती रूपनगर में उतरिहैं न,
शाही-भट सबैं खग घाट पै उतरि हैं।
तोसों मिलिबे को मन मेरो अति अस्थिर है,
सब ही कृपालु इकलिंग भली करिहैं॥

छन्द

मिल्यो पत्र यहँ चारुमती कों।
धैर्य भयो अति महासती को॥

रुक्मनि पायो यदूपती को ।
शिव सन्देश कि पारबती को ॥
रामसिंह मन भयो जनक गति ।
धनु तोरत देखे जनु रघुपति ॥
सबहि सहेलिन मोद बढ़ावैं ।
कुमरी को उबटन करवावैं ॥
अरु महलन महँ मंगल गावत ।
उर महँ मोद अधिक उफनावत ॥
इत राना ले चढ़े बराती ।
कवि पंडित आदिक अरु ज्ञाती ॥

युद्ध की आशंका से वरात की चढाई

डिंगल छन्द 'नीसाणी'

मद झरता केइ दे रह्या मातंग मचोळा ।
बापूकारे तोड़ भरे पग होळा होळा ॥
उडे तुरंग आकाश में ज्यूं उडण खटोला ।
करभ हालिया धरमपण ज्यां बेग अतोला ॥
सोहड़ चढिया साथ में सीहां सा टोला ।
केसरिया कीधां किता के अम्बर घोळा ॥
घूमे मतवाळा जठे अमलां छक छोळा ।
बणे वीर कायर कई मासा अर तोळा ॥

खुलिया सहनायां तणा पांना दलदोला ।
त्रंबक मोटा गड़ गड़े दल पीठ अडोला ॥
रखवाला संग हालिया चढ़ शंकर भोला ।
फोज रूप में जांनरा यूं थटे हबोला ॥

दोहा

केहर बारठ रे सहित, लीधाँ कुल भुज लाज ।
मदमसता कइ हालिया, कशमशता कविराज ॥

लग्न के दिन, रात्रि में चारुमती को चिन्ता

छन्द

मनहु बावरी इत उत डोलै ।
चिन्तातुर व्याकुल ह्वे बोलै ॥
उतरत चढ़त चांदनी बाला ।
पुनि रठौरनी भई विहाला ॥
सखी ! बरात अजौं नहिं आई ।
मग जोवत आंखें पथराई ॥
लगन अरध रात्री लिख दीनो ।
क्यों विलम्ब नृप इतनो कीनो ॥

अडोला=महाराना का यह प्रण था कि मुगल राज समाप्त होने तक नगारा फौज के आगे न बजाऊँगा । केहर बारठ=ग्रन्थ कर्ता के पूर्वज ।

सखि! मैं हौं सब भांति अभागिनि।
निज कुटुम्ब डसिबे को नागिनि॥
तुम लोकन हू कों दुखदाई।
विधना पापिनि मोहि बनाई॥
मैं नहिं जग में हाय जनमती।
तो परिजन क्यों व्यर्थ दमनती॥
मेरे हित भो कष्ट नृपति कों।
क्यों पठयो दल महामती को॥
किहि कारन राना नहिं आये।
गणितकार काहू भरमाये॥
कै कोउ व्यक्ति पोचमति दीनी।
कै पटराज्ञी भइ मन खीनी॥
कै अवरंग पत्र लिख दीनो।
पाणि ग्रहण मम बर्जित कीनो॥
कै मोको गिनि निपट अभागिनि।
तजी रान ज्यों कायर खागिनि॥
अटा चढ़ी डोलत मन खीना।
पोंछत अपनो बदन पसीना॥
पिछली निस हू लौं नहिं आवहिं।
तो मोकों नहिं जीवित पावहिं॥

इम मन गुनत बनी अकुलाई ।
बिनु जलकी सफरी की नांई ॥
एते महँ इक दासी आई ।
दौरत बोलत देहु बधाई ॥
सुतरसवार सबन समुझावत ।
रान बरात चली है आवत ॥
बहुरि श्रवन सुनि पर्‍यो नगारा।
उमड़ि परी उर पीयुस धारा ॥

बरात का नगर में आना

आय गये पुर में वरराजा ।
बजन लगे बहु मंगल बाजा ॥
प्रमुदित भे सब पुरजन घर घर ।
मनहु ज्वार बाढ्यो रतनाकर ॥
लग्न समय अब गणिकन हेरी ।
दम्पति मुदित भांवरी फेरी ॥
मिले जबैं दुहुँ वर अरु वरनी ।
वह बर समय जाइ नहिं वरनी ॥
रामसिंह अति स्वागत कीन्ही ।
दूसर दिवस विदाई दीन्ही ॥

याचक गनन रान सब पोषे ।
दान मान सों बहु संतोषे ॥
दिय दहेज रट्ठौर शक्ति भर ।
विनय किन्ह अति उभय जोर कर ॥
बूडत हाथ गह्यो करुणाकर ।
हमको किन्ह कृतारथ नृपवर ॥
आनंदित उदियापुर आये ।
सुघर सुवासिनि आन बधाये ॥
महलन दम्पति सुखद विराजत ।
तिन को देखि काम रती लाजत ॥
जब दुलहन सासुन पद लागी ।
आपन जानि बहुत बड़भागी ॥
सास असीस दीन सुविचारा ।
अमिट होहु सौभाग्य तिहारा ॥
पटरानी के पद पुनि बन्देउ ।
उभय ओर तें अधिक आनन्देउ ॥
कह पंवारि पति मम मति मूला ।
सदा रहहिं तोसों अनुकूला ॥
धन्यवाद की पात्र भई है ।
निरमल प्रभुता बहिन लई है ॥

धन्य जननि तो कों जिहिं जाई ।
युवतिन को निज बान सिखाई ।।
अन्तहपुर मुख देखन लागे ।
देखत ही अति मन अनुरागे ।।
कोउ न उपमा पटतर आवहिं ।
कहि उपमेय होत अरगावहिं ।।
देन लगे अब मुख दिखराई ।
सब कुटम्ब जन मिलि समुदाई ।।
पति मन दियउ सास अनुरागा ।
सौतिन दीन अखण्ड सुहागा ।।

दोहा

लाये कृष्ण उठाय कर, रुक्मनि बिनु चँवरी सु ।
राना लाये व्याहि कै, कृष्ण-दुर्ग कुमरी सु ।।
धरे रहे सामान सब, किय विवाह के काज ।
शाह रह्यो शिशुपाल ज्यों, मुख ताकत ही आज ।।
बैठि रह्यो अवरँग बली, मन को अधिक मसोस ।
वसावर रु गयासपुर, लेलीने इहिं दोस ।।
लागहिंगे अंगूर किम, वसुधा सीकर में सु ।
केशव कैसे लागिहैं, केरी कीकर में सु ।।
रतनसिंह रावत मरद, शाही सेन हटाय ।
उदयनगर धावन चुवत, अकबरपुर सों आय ।।

द्वितीय प्रकरण

(श्री द्वारिकाधीश व गोवर्द्धननाथ की मूर्तियों के बचाने का)

दोहा

भारत को शासक भयो, जनक बन्धवन जीत।
करन लगो हठधर्मि अब, औरंगजेब अनीत॥
कऊ जाति पर कउ नृपति, पूर्ण विजय जो पाय।
तो अनादि को नियम है, सुनहु सभ्य समुदाय॥
धर्म और साहित्य को, परिवर्तन करि देत।
पराधीन जिहिं जाति को, कुचलत अनय समेत॥
पहिले ही कण्डू हती, (फिर) केंवच लागी अंग।
करन अनय कटिबद्ध भो, अब उदण्ड अवरंग॥

बादशाह बनने के बाद औरंगजेब की आज्ञा

षट्पदी

अवरंग शासन काल साल द्वादस के अन्तर।
सत्रह सौ छब्बीस कढ़ी आज्ञा इमि सत्वर।
हिन्दुन मन्दिर मूर्ति पाठशाला गिरवा कर।
वहि ठाँ मस्जिद तुरत सुदृढ़ बनवाय देहु बर।

कण्डू=खुजली। केंवच=कौच की फली।

सनातन ग्रंथ पाठन पठन रोक दिन्न दशकंध गति ।
यहिं कार्य हेतु अधिकारि गन पठए प्रान्त सुप्रान्त प्रति ॥
इनने सहँसन मूर्ति और मन्दिर गिरवाए ।
मथुरा काशी कच्छ कोऊ बचने नहिं पाए ।
अधिक भए अप्रसन्न हिन्दु भारत के वासी ।
कहा करें वहँ जोर परी परतन्त्रहि पासी ।
महारान हिन्दु-सूरज पदक धारत रहियत धर्म धुर ।
अवरंग अनय को सीसवद् किय विरोध इन सक्ति भर ॥

दोहा

अंकुर जम्यो विरोध को, दहुँ कारन तें मूल ।
याके आगे लागिहैं, ऋतु आये फल फूल ॥

मेवल प्रान्त का दमन कर वह प्रदेश सारंगदेवोत मानसिंह को देना

षट् पदी

मेवल नामक प्रान्त वहाँ मेवार देश धर ।
वहिं के मीने लोक भए उद्धत उठाय शिर
लूटत साहन चोर बहुरि पुर गांव जरावत ।
करत उपद्रव फिरत दुष्ट दिश हू दिश धावत ।
जिन शीश भेजि महारान दल तस्कर गन बहु दमन किय ।
सारंगदेव भट मान को वहिं प्रदेश जागीर दिय ॥

सिरोही के राव अखेराज चीताखेड़े का की सहायता

अखयराज हो राव नृपति अर्बुद गिरि दानी ।
उदयभान सुत तास भयो उद्धत अभिमानी ।
औरंग सम पितु बन्ध करि रु शासक भो बिनु हक ।
सुनत सेन जिहिं शीश रान पठई सु न्याय रुख ।
भट रामसिंह रानावत सु सेनप पहुँच्यो कुमुक लिय ।
थपि अखय राज शासक अडिग उदयभान को उथपि दिय ॥

महाराना श्रीद्वारिकाधीश की मूर्ति को मेवाड़ में पधराना

लिखत विरोध न किन्ह, किन्न कारज में परिणत ।
वल्लभ सम्परदाय हती ब्रज देश मध्य स्थित ।
मूर्ति द्वारिकाधीश रही वह मुख्य सबन महँ ।
भक्तिभाव सों यहाँ अधिक लाये करि आग्रह
सुनि के उदन्त पतशाह यह हठधरमी उर अति दह्यो ।
यह मूर्ति तोरिबे हित यवन औरंग मुख ताकत रह्यो ॥

वीर विनोद महाराना राजसिंह भाग १ पृष्ट ४५२

श्रीनाथजी व द्वारिकाधीश की मूर्तियें मेवाड़ में पधराना राना राजसिंह भाग १ पृष्ठ ४५२-४५३

मनहर

राना राजसिंह ऐमें हिन्दुवन लाज राखी,
मनसा-जहाज राखी बोरि मुगलेश की ।
कीर्ति राखी उज्वल बनाय देश देशन में,
मोंछ राखी भौंहन मिलाय निज देश की ।
वीर कुलवान भारी छत्रिन की सान राखी,
बान राखी वंश परिपाटी अवधेश की ।
तान राखी कर में कृपान जग जान राखी,
आन राखी मूर्ति यहाँ प्रभू द्वारकेश की ।

टिप्पणी—महाराजाधिराज महाराना श्री जगतसिंह जी यात्रार्थ मथुरा वृन्दावन पधारते थे तब गोकुल में गोस्वामी गिरधरलाल जी से कठी बधवाई और आसोटिया गाव भेट किया। बाद में गोस्वामी प्रथम व्रज-भूषणलाल जी महाराज कुटुम्ब के झगड़े से ठाकुरजी को लेकर अहमदावाद चले आये। किन्तु वहा भी उन दिनों मुर्तियें तुड़वाने व मन्दिर गिरवाने के उपद्रव खड़े थे। तब इन्हों ने महाराना राजसिंहजी को लिखा। जिस पर महाराना ने सहर्ष मेवाड में आजाना स्वीकार कर आग्रह के साथ पधार आने को लिखा तब स० १७२२ में द्वारिकाधीश गोडवाड़ के सादड़ी गांव में अहमदावाद से पधार आये। सादड़ी से कूच होने पर बीच में महाराना ने अगवानी कर आसोटिया गाव में पधराये। कुछ दिन बाद जलका उपद्रव होने पर कांकरोली में पधार आने का हुकम हुआ स० १७५१ में पाल पर (रायसागर के किनारे पर) द्वारिकाधीश का मन्दिर बनवाया गया जिसमें पधराये, वह मन्दिर अभीतक मौजूद है।

छन्द मुक्तादाम

प्रभू अपने कर स्थापित किन्ह,
दुहृद्दन के उर में दव दिन्ह ।
लगी जनु सत्रुन के घर आग,
डस्यो अवरंग हि मानहु नाग ॥
करि बहु संपति लाखन भेट,
दई पुनि गांवन भूमि उरेट ।
यदूपति को निज मानिय इष्ट,
गुरू गउस्वामिय पूरन सिष्ट ॥
यहीं प्रतिमा सु अपूरव भव्य,
जहाँ नित पाकत है मख हव्य ।
बहू विधि ब्यंजन श्रेष्ठ बनन्त,
बहे नर कौन सु ताहि गिनन्त ।
विलोकत सुन्दर देव सथान,
पुरन्दर को मिटि जात गुमान ।
हजारन कोसन तें दिन रात,
सहस्रन दर्शक आवत जात ॥
बने धरमार्थ कितेइक धाम,
जहाँ बहु यात्रिय लेत अराम ।
जिमावत यात्रिन मुख्य प्रसाद,
कहा इन अग्र सु अमृत स्वाद ॥

मिले कछु जो व्रजवासिनि को हिं,
मिले नहिं इन्द्र सुहासनि को हिं ।
मिले मृदु लड्डुव गोधन को हिं,
मिले नहिं देवन सोधन को हिं ॥

यहाँ व्रजवासिन के बहु ओक,
लजे तिन देखि त्रिविष्टक लोक ।
यहाँ सुरभी रह अर्द्ध हजार,
द्रवे नित नन्दनि ज्यों पयधार ॥

कहूँ दिस तण्डत गोधन वृन्द,
कहूँ दिस गज्जत मत्त गयन्द ।
अखारन जूटत है बलवान,
किते हनु रूप वृकोदर मान ॥

बहू कवि कोविद या पुर सन्त,
पुरानन वेद पुरान पढन्त ।
यहाँ प्रभु मूरति भव्य अतीव,
अभी मुख बोलहिं जानत जीव ॥

विधर्मिन को मिट जात गुमान,
विलोकत भक्त भयो रसखान ।
पुरी ढिग सोभित राजसमुद्र,
भलो भुवि तालन में यह भद्र ॥

इतै सुठि सुन्दर सागर सोध,
प्रभू तजि आयउ क्षीर पयोध।
जिहीं जल उज्वल कों कउ काल,
पिये पय के भ्रम आय बिडाल॥
कवैं यहँ डारत दिर्घ हिलोर,
मनो नृप दानिय दान सजोर।
किधौं कवि ने किय काव्य किलोर,
समच्छर सुन्दर अच्छर जोर।
रुके जल बांधहि लौं टकराय,
मनो गुहिलोतन पै खल आय।
महाजल में पुनि होत विलीन,
भये खल जानि मनोरथ क्षीन॥
किधौं हरि पोढ़न को पयसिन्धु,
किधौं रतनाकर को लघु बन्धु।
बने बहु स्वच्छ रु सुन्दर घाट,
जहाँ पर बैठि करै द्विज पाठ॥
किलोलत मक्र रु मच्छ कितेक,
प्रभा रतनाकर की हर लेत।
जहाँ विहरे जल काकलि केक,
अहारत जीवन जीव अनेक॥

कहते हैं रसखान कवि यहां का कठीवध था।

कबैं जल धारत है मुनि सान्ति,
कबैं खल राज प्रजा सम क्रान्ति ।
सहे दुख शीत रु धूप सहेत,
तऊ सब प्रानिन कों सुख देत ॥
यही सब तालन को सरदार,
रहै मन को निस द्यौस उदार ।
बनाइय रान इहीं जग साख,
लगे इक कोटि इकावन लाख ॥
यहीं महँ बूडि चतुर्दस ग्राम,
अरु इन तारिय लाखन धाम ।
करे कृषि-लोकन को उपकार,
यही दुरभिच्छ विदारनहार ॥
चले निस द्योस यहाँ अरहट्ट,
चले कृषि सींचन श्रोत अमिट्ट ।
वरू अति कोउ बड़ो युरुपीन,
यहाँ नहिं मारि सकै मछलीन ॥
अबे चलिये नव चौकिन ओर,
जिहीं कर-कोरनि है बिनु जोर ।
प्रभा सुठि ग्रावन कोरन की सु,
भली सुठिता त्रय तोरन की सु ॥

युरुपीन=यूरोप वासी । बिनु जोर=बेजोड़ ।

जिन्हें लखि मोहित ह्वै मुनि सन्त,
जहाँ मकरध्वज वास करन्त ।
इहीं रचना कहँ देखि अभूत,
लगे लघु विश्वकर्मा करतूत ॥
जिहीं लखि लज्जिय देव पयोद,
दुर्यो किहिं ठौर अजौं नहिं बोध ।
यहाँ नव चौकिन के नव घाट,
जिन्हें नहिं तोरि सक्यो समराट ॥

श्री गोवर्धननाथ की मूर्ति का मेवाड में पधराना

महासुठि है व्रज देश अनूप,
तहाँ अवतीर्ण भये व्रज भूप ।
महा गिरि गोवर्धन्न मझार,
मिली प्रतिमा प्रभु नन्दकुमार ॥
जहाँ पर बल्लभ संपरदाय,
करे नित सेव अति मुद पाय ।
यहीं प्रतिमा कर तोरन चाह,
करी हठ धर्मिय औरंग शाह ॥
भजे गउस्वामि दमोदरदास,
लिये वह मूरति होय हतास ।

किधौं दसकंधर के डर देव,
चले सुरमन्दिर छोरि अजेव ॥

षट्पदी

बूंदी कोटा होय तीर्थ पुष्कर महँ आए ।
कृष्णदुर्ग गोस्वामि कियउ भोजन मन भाए ।
जोधनगर पुनि जाय मिले महाराज महामति ।
आदर कीनेउ अमित (पै) दई नहिं रक्खन स्वीकृति ॥
गोस्वामि किन्ह अनुनय विनय, सादर भूपन सबन सों ।
तिन को वृत्तान्त इम कहत हौं, कैसे डरिगे यवन सों ॥

दोहा

दिय कंठी परसाद इन, शिर धरि लीनो सोय ।
पाय लियउ मृदुता परख, होनी होय सु होय ॥
दामोदर नृपनन कहिय, तुम मोटे कुलवान ।
धर्म सनातन के धनी, बल्लभ मत तन त्रान ॥
हम बचनन शूरे रहे, तुम शूरे तरवार ।
हमरे वच छूछे परे, तुम पर दारमदार ॥
जब जब संकट धर्म पै, आयउ हिन्दुस्थान ।
तब तब तव पुरषान ने, टारयो तोकि कृपान ॥
त्रिहु वरणन ने छत्रियन, रक्खे रक्षा अर्थ ।
जो तुम रक्षा तजि दई, (तो) होवहि महा अनर्थ ॥

जब जब नास्तिक मत यहाँ , बहि बयार अति गर्म ।
तब तब तुम ही छत्रियन , रखेउ सनातन धर्म ॥
अब आयो अवरंग समय , अनय करत यवनेश ।
रखत शाह तुमरे रहत , हिन्दू मत तें द्वेष ॥
करत निपट दशकन्ध ज्यों , देव विप्र गौ घात ।
वेद पठन पाठन मिट्यो , सुर-मन्दिर गिरवात ॥
अरु बहुतेरे हिन्दुवन , किय मुसलिम बरजोर ।
माने नहिं जिन नरन को , मारे कंठ मरोर ॥
भारत पर शासन करत , यवन धारि अति ओज ।
तुम उतरे-मुख देश की , खबर न राखत खोज ॥
नये नये कर रखि दियउ , दीन हिन्दुवन शीश ।
तुम मदमाते भे रहे , निज मन में अवनीश ॥
तुमरे भारत देश की , दुरगति कीन अथाह ।
कैसे निद्रा लगत है , निस तुम को नरनाह ॥
जो नर अपने देश को , धरत नहीं कछु ध्यान ।
तिहिं को जीवन व्यर्थ है , टेरत शास्त्र पुरान ॥
देश विधर्मिन ने लियउ , तुम उनके आधीन ।
तातें भारत बहुत दुख , झेलत नित्य नवीन ॥
प्रतिमा प्रभुकी इन खलन , दई हजारन तोर ।
साह होय छुपि फिरत हम , जैसे कोउक चोर ॥

अब हम पैं गिरनौ चहत , दुखको प्रबल पहार ।
श्री प्रतिमा श्रीनाथ की , तापे याको वार ॥
इन प्रतिमा ठुकरान कों , जीनन शाह जराहिं ।
तापै पनहिन खोलिहैं , जो मल मूत्र फिराहिं ॥
तोरत मूरति हम त्वरित , मरजावहिं महाराज ।
या बिनु हमरे हाथ महँ , और न कछू इलाज ॥
दामोदर के जल भर्यो , लोयन कोयन मांहि ।
आप बिना अब अधिपती , कहहु कौन ठाँ जांहि ॥
हमको तुम रक्खहु यहाँ , सह मूरति श्रीमन्त ।
देशन-देशन आपको , बढ़िहै सुजस अनन्त ॥

राजाओं की दशा

कउ नीचो मुख करि नृपति , निज-ग्रीवा खुजलात ।
कोऊ अपनी पाघ को , फेर-फेर खिसकात ॥
कउ बनाय मुख रोवनो , अपनो कष्ट सुनात ।
कल हमरी नानी मरी , मातु अस्वस्थ रहात ॥
कउ कह मेरे सुभट गन , मो सों भये विरुद्ध ।
इनके बिनु तुमहू गुनो , कौन करहिंगे युद्ध ॥
पहिले सों ही शाह है , हम सों तो नाराज ।
तुम कों रखिबे सों भला , क्यों नहिं छूटहिं राज ॥

जान चहै जो यमपुरी , कै त्यागै निज राज ।
वहि रक्खे तुम को नृपति , गोस्वामी महाराज ॥
हम रक्खन असमर्थ हैं , परत आपके पाय ।
कृपा करि रु महाराज तुम , कहहुँ और ठाँ जाय ॥

मनहर

कोऊ कहै सूते मृगराज को जगावे कौन,
मांद महँ जाय कडु बोल दे बकारे को !
कोऊ कहै व्यर्थ मूढ़मित सों निमन्त्रण दे,
मरिबे के हेत यमराज कों प्रचारे को !
कोऊ कहै भूप मुचकन्द को जगावे कौन,
कोऊ कहै बज्र की अमोघ गति टारे को !
कोऊ कहै कौन अवरंग सों विरोध करे,
कोऊ कहै कारे के पिटारे हाथ डारे को !
कोऊ कहै तोपन के प्रबल प्रहार महँ,
कौन नर सम्मुह खरो ह्वै खोल छाती को ।
कोऊ कहै कौन बाढ़-नदी महँ कूदि परे,
कौन नर पकरे नितान्त आग ताती को ।
कोऊ कहै क्रुधित बनावे दुरवासा कौन,
कवन खिजावै अवरंग उतपाती को ।
कोऊ कहै बरबस काल-घर जावै कौन,
कोऊ कहै कवन बुलावे साढ़साती को ॥

दोहा

बहु रजवारन महँ फिरे , यह दामोदरदास ।
नृपन ओर तें भे गये, , अब स्वामी हत आस ॥
जानि गयो गोस्वामि अब , प्रतिमा बचिहैं नाहिं ।
ऐसी इच्छा जगतपति , कहहु कौन ठाँ जाहिं ॥

दामोदर के काका गोपीनाथ का उदयपुर आना

अन्य नृपन के वचन सुनि , ह्वै गोस्वामि निराश ।
राजसिंह महारान पै , आयो करिके आश ॥
भूमि दबी अघभार सों , समय जबैं दश शीश ।
प्रणतपाल भगवान पहँ , ज्यों आयो सुर ईश ॥
दे कंठी परसाद अरु , बोल्यो गोपीनाथ ।
बल्लभमत की वीरवर , लाज रावरे हाथ ॥
जाय-जाय अवलम्ब हित , जो-जो पकरी डार ।
सब ही तूटी सीसवद् , समय गती अनुसार ॥
यावदार्य कुल कमल रवि , राजसिंह महारान ।
हम कमलन की तव बिना , को मेटै कुम्हलान ॥

महाराना

कहिय रान श्रीनाथ को , आनिय गोपीनाथ ।
आन धरिय मेवार महँ , हमको करिय सनाथ ॥

एक लाख मम सुभट गन , तिन के तूटहिं माथ ।
ता पीछे अवरंग वह , आय लगावहिं हाथ ॥
गोपीनाथ प्रसन्न भो , सुनत वचन इम रान ।
मन इच्छित पानी पय्यो , जैसे सूकत धान ॥
किधौं जरी संजीवनी , मरणासन मुख दिन्ह ।
कै शंकर वरदान दे , अभय सुरन कहँ किन्ह ॥
दामोदर ने जब सुनी , रक्षक भो महारान ।
मुदित भयो जिमि मिलि गयो, जैसे निकस्यो प्रान ॥

मेवाड़ में श्री नाथजी का पधराना

तब आने श्री नाथ को , गोस्वामी गुणवान ।
लाये सम्मुह जाइ कै , राजसिंह महारान ॥
कछु दिन रक्खिय उदयपुर , मेदपाट नरनाथ ।
ग्राम नाम सीहाड़ ढिग , स्थापित किय श्रीनाथ ॥
छेत्र भयो यह बहु बड़ो , बड़ी भई यह धाम ।
काल पाय कै परि गयो , नाथद्वारा नाम ॥
निज मन्दिर बनवाय कर , किन्ह प्रतिष्ठा रान ।
लाखन की किय भेट नृप , इष्टदेव निज जान ॥

श्री गोवर्धननाथजी की मूर्ति का ब्रज में से मेवाड में पधराना ।

[वीर विनोद भाग १ पृष्ठ ४५३]

छन्द मुक्तादाम

बड़ी यहिं धाम अतीव विशाल,
अनूपम भारत में इहिं काल।
बड़े गउस्वामिय को अति मान,
गुरु गिनि राखत हैं महरान॥
यहाँ बहु देशन के नर नार,
प्रती दिन आवत जात अपार।
यहाँ सुरभी रह दोय हजार,
सबे व्यय राजन के अनुसार॥
यहाँ पर राजत कृष्ण भण्डार,
करे कुछ द्वेस कुबेर निहार।
पिसे कसतूरिय चक्किन ग्राव,
तहाँ पर लाखन खर्च सुभाव॥
यहाँ ब्रजबोलिय बोलत सुद्ध,
यहाँ पर लोक बड़े कवि बुद्ध।
बहे सरिता पुर पास बनारस,
करै रविनन्दनि को उपहास॥
यहाँ पर बागन कुञ्ज बहार,
जहाँ विहरे मनइच्छित मार।
यही पुर है नहिं वर्नन योग,
यही बुध लोकन देखन योग॥

दोहा

सुनी जबैं पतशाह ने, मूर्ति रखी महारान ।
रोम-रोम ज्वाला जगी, पूरन रोस उफान ॥
चारुमती के ब्याह की, मिटी जरन नहिं शाह ।
मूर्तिन के सम्बन्ध की, औरें लागी दाह ॥
बदला लेवे को त्वरित, हो उद्यत दिल्लीश ।
औरँ इक घटना भई, लहि इच्छा जगदीश ॥
अगनि रही सुलगत अधिक, ता पर बज्जिय पौंन ।
पुनि वा पर डार्‌यो सुघृत, भावी मेटे कौन ॥

तृतीय प्रकरण

(जजिया-कर के विरोध में बादशाह को महाराना का पत्र)

दोहा

नय बन्धन तोरे निपट , अति उदण्ड अवरंग ।
ज्यों डगबेरी तोरियत , मतवारो मातंग ॥
जिहिं जजिया अनुचित करहिं, अकबर रक्खे बन्ध ।
प्रचलित कीन्हों यहिं समय , औरॅगजेब मदन्ध ॥
विसद मास वैसाख पुनि , सत्रह सौ छत्तीस ।
कर-जजिया प्रारंभ किय , औरंग हिन्दुन सीस ॥
वह कैसो आदर करत , कैसो राखत हेत ।
हिन्दुन सों उन दिनन यह , कैसे जिजिया लेत ॥

(वंस भास्कर से)

छन्द

स्वपचन सों जिम्मी बुलवावत ।
घर सों नंगे पैरों लावत ॥
आमल बैठत गद्दी ऊपर ।
जिम्मी खरो रहै जोरे कर ॥

टिप्पनी—जिजिया की कर लगाने पर औरगजेब को महाराना राजसिंह का पत्र लिखना और बादशाह का क्रोध ।

(वीर विनोद राजसिंह भा० १ पृ० ४५९-४६०)

कोऊ हिन्दु प्रतिष्ठित सोऊ ।
यहँ बरताव न बाहिर सोऊ ॥
हाकिम बोलत ऐरे जिम्मी ।
जमा करावहु शीघ्र विधर्मी ॥
जजिया की वहँ पोंछ जु पावै ।
ताको जिम्मी कंठ बंधावै ॥

जिजिया मुसलमानी राज्य में रहने वाले तमाम हिन्दुओं से प्रति वर्ष लिया जाने वाला अपमानजनक कर था। इसके लिए मुसलमान धर्म के प्रर्तक मुहमद साहब ने अपने अनुयायियों को यह आज्ञा दी थी कि जो लोग मुसलमान धर्म स्वीकार न करे उन से तब तक लड़ते रहो जबतक वे नम्रता से जिजिया न दे दें। जब महमद कासिम ने सिन्ध पर अधिकार किया तब अबुखुफास कुतैवजिन मुसलिम वहाँ के हिन्दुओं पर जिजिया लगाने का प्रबन्ध करने के लिये भेजा गया। खलीफा उमर ने जिजिया देने वालों के तीन विभाग किये—धनवानों से ४८ दिरम्म करीब चार आने के मूल्य का सिक्का। मध्यम श्रेणी वालों से २४ दिरम्म और गरीबों से १२ दिरम्म प्रति वर्ष लिये जाते थे। उस समय १६ वर्ष तक ऊमर और काम करने में असक्त पुरुषों से यह कर नहीं लिया जाता था। फिरोजशाह तुगलक ने ब्राह्मणों से भी यह कर लेना शुरू कर दिया। बादशाह अकबर ने इसे लेना अन्याय समझ कर लेना बन्ध कर दिया। सौ वर्ष पीछे औरंगजेब ने फिर इसे जारी कर सख्ती के साथ वसूल किया। परन्तु उसकी मृत्यु के १३ वर्ष बाद मुगलिया सलतनत की नींव हिल गई तब फर्रुखसीयर को लाचार होकर इसको उठा देना पड़ा।

(इतिहास राजस्थान से)

यासों दुखित होइ बहु आरिय।
आवेदन करिबे की धारिय॥
एक बेर कालिन्दी तट पर।
जुरे हजारन तिहि ठाँ नरवर॥
जहाँ झरोखा दरसन को है।
भये प्रारथी आरत सों है॥
जजिया छोर देहु रव कीनो।
पै पतशाह ध्यान नहिं दीनो॥
दूसर शुक्र जुमा मस्जिद महँ।
हजरत जात नमाज पढ़न कहँ॥
किल्ले सों मस्जिद लौं लोकन।
भीर हजारन भई प्रान्त जन॥
जब मस्जिद की गैल रुकी है।
तब सुदृष्टि हजरत ने की है॥
हथ्थिन हूल देहु इन ऊपर।
आज्ञा दई शाह करुणा कर॥
कुचल गये गज-पदन बहुत नर।
कितने भाजि गये हा! हा! कर॥
तोउ जजिया-कर नाहिं उठायो।
हठधरमी कछु दया न लायो॥

यह घटना दिल्ली की कहते हैं।

और सख्ति बहु करिबे लागो ।
यापै अति तुलि गयो अभागो ॥
कोऊ पर कोऊ अधिकारी ।
करन चहत अप्रसन्न सुरारी ॥
परत न ताहि अन्य मग गहिबो ।
हो परियाप्त इतोहि कहिबो ॥
अमुक व्यक्ति हिन्दुन बहकावत ।
जजिया को अवरोध करावत ॥
तो मरघट महं ताको डेरा ।
साँच झूठ को करत निवेरा ॥
मुगल राज्य की हिन्दू जनता ।
व्यथित भई नहिं कोऊ सुनता ॥
ठौर ठौर महँ हिन्दु पुकारत ।
मुगल शाह स्वामी ह्वै भारत ॥
उठत गयो विस्वास शाह को ।
विप्लव बढ़िगो राह-राह को ॥
मरहट्टे छत्रि रु सिक्ख गन ।
भये विरोधी इन के जन-जन ॥
मुगल राज्य की नींव जमाई ।
अकब्बर शाह सुबुद्धि लराई ॥

जहाँगीर अरु शाहजहाँ पुनि ।
दृढ़ किन्हिय गुन पत्थर चुनि-चुनि ॥
सब्बल अनय लगाय सुकर्मी ।
शाह हिलाय दई हठधर्मी ॥
दीखन लगे उनहि निज जीवन ।
राज्य बिनास होन के लच्छन ॥
वह सम्राज उनहि मरिबे पर ।
बिखर गयो अरु बढ़िगो घर-घर ॥
केवल अवरँग नीति हुतासन ।
रह्यो नहीं मुगलन को शासन ॥
हिन्दुन पर जिजिया लगिबे की ।
पाई खबर रान सुविवेकी ॥
घोर विरोध किन्न हिन्दुनपति ।
पत्र लिख रु दिय अपनी सम्मति ॥

औरंगजेब के नाम महाराना राजसिंह का पत्र

छन्द

हौं रहौं आप सों यदपि दूर ।
पै चहौं भलाई निज जरूर ॥

सब्बल=पत्थर गिराने का औजार । निज=आपकी ।

महाराणा का जजिया के विरोध में औरंगजेब को पत्र लिखना

(वीर विनोद महाराना राजसिंह भाग १ पृष्ठ ४६०-४६१)

निम्नोक्त सत्य बातन सुध्यान ।
दिलावत आपको हौं निदान ॥
हम किन्ह कछुक सेवा सहाय ।+
ताको सु स्मरण करवाहु राय ॥
जासों प्रजा रु निज आपकी सु ।
भलाई होहिं दिल्ली अधीश ॥
हम सुनी हितैषी मम विरुद्ध ।
योजना ह्वै रही करन युद्ध ॥
तिहिं मांझ आपको अधिक अर्थ ।
व्यय भयो सुन्यो है वहाँ व्यर्थ ॥
खूटिगो उक्त कारन सु कोष ।
चहत हो भरन हिन्दुन मसोस ॥
तिहिं पूर्ति हेत जजिया वसूल ।
करन को चहत सो करत भूल ॥
पूर्वज सु आपके मुगल शाह ।
महमूद जलालुदीन शाह ॥
अकबर सुन्याय नय को जहाज ।
बावन सु वर्ष लौं किन्न राज ॥

इस चिट्ठी को देखते ही बादशाह आग बबूला हो गया
(वीर विनोद राजसिंह भाग १ पृष्ठ ४६३)
+ फतैयाबाद की लड़ाई में औरंग को १००० सवार दिये थे ।

प्रत्येक प्रजा कों दिय अराम ।
सबन के रही सुख शान्ति धाम ॥
ईसाइ मुसाई दाउ दीन ।
मुसलिम रु विप्र नर नास्तकीन ॥
सब पर कृपा जु रक्खिय समान ।
पद जगद्गुरू को लिय महान ॥
स्वरगीय निरूदिन जहाँगीर ।
मन को उदार अरु अति गंभीर ॥
प्रजा की करिय रक्षा प्रवीन ।
अरु राजवर्ग को शान्ति दीन ॥
शासक जु रह्यो बाईस साल ।
हिन्दुवन दुख नहिं दिय दयाल ॥
सुप्रसिद्ध आप पितु शाहजाँह ।
सुख लियउ प्रजा जिन छत्र छांह ॥
बत्तीस वर्ष लौं राज्य कीन ।
प्रजा को अधिक हि शान्ति दीन ॥
आपके पूर्वजन के जु काम ।
उन्नत उदार सिद्धान्त ग्राम ॥
इहिं राखि जिधर वे धरत पाव ।
उधर ही विजय संपति मिलाव ॥

उन्हों ने देश किल्ले नवीन ।
अधिक ही कियउ अपने अधीन ॥
आपके समय महँ बहु प्रदेश ।
गये हैं निकरि दिल्ली नरेश ॥
ह्वैजाहि रहे तिनको निकार ।
अब बहुत बढ्यो है अनाचार ॥
आपकी प्रजा पद तर हमेश ।
कुचली सु जात है देश-देश ॥
साम्राज्य आप प्रत्येक प्रान्त ।
कंगाल ह्वै गये अति असांत ॥
घटि रही प्रजा नित प्रान्त-प्रान्त ।
बढ़ि रही असान्ती है नितांत ॥
बसि गई गरीबी राजभौन ।
रक्षा 'ब अमीरन करहिं कौन ॥
सेन है आपकी असन्तुष्ट ।
भे गये सबै बिवसाई भ्रष्ट ॥
मुसलमी बहुत है नहिं प्रसन्न ।
हिन्दुव जु दुखी हैं बिनु असन्न ॥
बहुत ही लोक निस द्योस शाह ।
दहुँ बेर पान की रखत चाह ॥

पद तर=पद दलित । 'ब=अब ।

आप पर क्रुद्ध ह्वै अरु निरास ।
सिर पीट-पीट डारत निसास ॥
कंगाल-प्रजा ऐसी स्वदेश ।
वाहि सों लेत जजिया धनेश ॥
बहु क्रूरभाव करियत वसूल ।
आमिल अनेक तनु फूल फूल ॥
ऐसे नरिन्द्र को महत मान ।
कहाँ लौं रहहिं बडपन गुमान ॥
उदीची अवाची तलक सोर ।
ह्वै रह्यो यहीं को चहूँ ओर ॥
हिन्द को शाह कंटक विसेस ।
हिन्दुवनहु तें करि धर्म द्वेस ॥
सन्यस्त विप्र भोजक महान ।
धार्मिक जु पुरख हैं हिन्दुवान ॥
तिनसों हिं करत जिजिया वसूल ।
जिहिं मान लीन यह नय वसूल ॥
आपनी श्रेष्ठ तैमूर वन्स ।
प्रतिष्ठा ध्यान नहिं करत अंस ॥
एकान्त रहत है साधु सन्त ।
वैराग्य धारि जो वन बसन्त ॥

उदीची=उत्तर दिशा । अवाची=दक्षिन दिशा । सन्यस्त=सन्यासी ।

उन पै अतीव सेना बटोर ।
दिखावन चहत है अपन जोर ॥
जे धर्मग्रन्थ हैं आपके सु ।
जिहिं पै विसास निज को विसेखु ॥
आपको वहीं बतलाय देहिं ।
वह तो कदापि नहिं पक्ष लेहिं ॥
है मनुज मात्र को ईश एक ।
पढ़ि लेहु धर्म ग्रन्थन हरेक ॥
खुदा है नहीं तुरकान को हि ।
राम है नहीं हिन्दुवान को हि ॥
उनकी निगाह महँ मूर्ति सेव ।
अरु मुसलमीन में नहीं भेव ॥
रंग को रह्यो अन्तर दिखाय ।
सो भयो उनहि के हुकम पाय ॥
सबन को वही पैदा करन्त ।
करता न दोय जो जग धरन्त ॥
मस्जिदें आप महँ यवनराज ।
वहिं नाम ले रु पढ़ियत नमाज ॥
मूर्तियन अग्र घंटा बजन्त ।
वहिं नाम प्रार्थना करत सन्त ॥

करता=ईश्वर ।

यहिं हेत धर्म कउ को उठाय ।
देनो सु कहा नहिं है अन्याय ॥
है करन ईश इच्छा विरोध ।
तुम देखि लेहु निज हृदय सोध ॥
कोउ चित्र वनावे कलाकार ।
तिहिं फार डारनो अनाचार ॥
निरमान कियउ जिहिं व्यक्ति चित्र ।
अप्रसन्न कहा नहीं होहि मित्र ॥
कउ सुकवि कहिय सो बात सत्य ।
या में जु कछ नहिं है असत्य ॥
ईश्वरी काम आलोचना हिं ।
निरबुद्धि होय नर सो कराहिं ॥
हमरे सुलिखन को इहीं अर्थ ।
जजिया लगाय कीनो अनर्थ ॥
है न्याय और नय के विरुद्ध ।
नहिं कहहिं श्रेष्ठ बुद्ध रु अबुद्ध ॥
ह्वजाहिं देश यातें दरिद्र ।
मिटि जाहिं स्वयं अभिमान भद्र ॥
अरु नई बात है गुनहु आप ।
कानून हिन्द के हु खिलाफ ॥

फारडारनो=फाड़ डालना । निरमान=निर्माण ।

निज धर्म यदी हैं विवस आप ।
(तो) मानिये शाह तजि कें प्रलाप ॥
है रामसिंह मुखिया सबोंन ।
उन सों वसूल कर लेत क्यों न ॥
फिर लेहु आप हम सों नरेश ।
हम करत स्वयं आग्रह विसेस ॥
हम सों वसूल करिबेहि मांहिं ।
आपको कष्ट कछु कम लखाहिं ॥
मक्खिन पिपीलिका हरन प्रान ।
नहिं काम वीर को है निदान ॥
आश्चर्य हमें है बड़ो एक ।
मंत्रिन सलाह नहिं दई नेक ॥
प्रतिष्ठा न्याय पै नजर डार ।
नहिं कियउ बजीरन कछु विचार ॥

—महाराणा राजसिंह

दोहा

पत्र पठायो रान यह, मुनसिन दियउ सुनाय ।
सुनत हु लागी शाह के, अङ्ग-अङ्ग प्रति लाय ॥
मेदपाट पर चढ़न को, किय निश्चय मुगलेश ।
औरें इक घटना भई, प्रभुकर पाय निदेस ॥

रामसिंह=जयपुर का राजा। कष्ट कम=व्यग्य है। पिपीलिका=चींटियें।

(राजसिंह भाग १ वीर विनोद पृष्ठ ४६२)

चतुर्थ प्रकरण

(जोधपुर महाराज अजितसिंह को शरण रखने का)

षट् पदी

जोधपुरप जसवन्त, ज्ञान आगर गुणग्रामी ।
हिन्दुन शासन हिन्द, सदा चाहत अभिरामी ।
कोऊ कारन पाय, शाह नाराज रहत नित ।
काबुल महँ जमरूद, कियउ थाने पर वहिं स्थित ।
रहि अष्ट वरस महाराज यहँ, स्वर्ग गयो बिनु संतती ।
भे गई अनाथ मरु देश की, प्रजा सहित सुन्दर छिती ।।

रठ्ठौरन शिर ढह्यो, मनहु अब मेरु अचानक ।
तनिगे सोक वितान, भये औंधे निज आनक ।
सत्रह सौ पैंतीस, मरन पायो महराजा ।
चले मरूधर ओर, सबै रठ्ठौर समाजा ।
त्रय रानि हती महाराज संग, एक रानि जायो अजित ।
लाहौर नगर महँ आइ के, ठहरि गये सिसु के सहित ।।

यहँ सुनिके यवनेश, पूर्व बदले के कारन ।
कियउ खालसे देश, भेजि ऊंचे अधिकारिन ।

ले आवहु सिसु यहाँ, रानि युत सबै त्यागि डर ।
दिय निदेस दिल्लीस, कपट मुनि कपट घाट घर ।
चलि दुर्गदास सोनिंग युत, संकित सोकित मन सुघर ।
सब ही समाज सिसु के सहित, ले आये दिल्ली शहर ॥

कृष्णनगर को वहाँ एक दीरघ अति आलय ।
ठहरि गये रट्ठोर तदपि मन शाह कपट भय ।
कोतवाल को दई अनख आज्ञा यवनेश्वर ।
नूरगढ़ी ले जाउ रानी जसवन्त पुत्र कर ।
जो करे हुकम अवहेलना ततो दण्ड देवहु त्वरत ।
यह सुनत सर्व रट्ठौर भट क्रुधित भये रन मत्त युत ॥

किधौं सोर साबात आगि लगि गई अचानक ।
किधौं लंक महँ बढ़ी योग पवमान धधक धक ।
निद्रावश मृगराज शीश डारे किन कंकर ।
दक्ष जग्य विध्वंस हेत पटकी कि जटा हर ।
यहि विधि प्रमत्त ह्वै कमधगन पक्खर डारिय हय गयन ।
हर हर सुशब्द महादेव सों गूञ्ज उठ्यो सबहि गयन ॥

गयन=गगन ।

पहिले हु प्रच्छन्न अजित को मरुधर कढ्ढेउ ।
खीची मुकंद्दास× नाम नग कंचन मढ्ढेउ ।
शेष रहे निज भटन किन्न अति युद्ध भयंकर ।
द्वै रानी खग झार जाइ जसवन्त लगी गर ।
अरु अन्य तियन को मारि कर मुगल सेन बहुत हि हनी ।
केउ मरे केउ घायल भये लोहू तैं दिल्ली सनी ॥

घायल दुरगा आदि युक्त चालीस सवारन ।
मारवार में गये नाम युत कीर्त्ति उवारन ।
कोतवाल को अजित जबैं नहिं दिल्ली पायो ।
समवयस्क इक सिसु आइ घोसी तें लायो ।
अरु कहिय नृपति है अजित यहि छोरि गये रट्ठौर यहँ ।
आपनो दोष टारन अरथ, जाय दियउ अवरंग कहँ ॥

नाम महमुदीराज शाह दीनो इसलामी ।
जेबुन्निस कों सौंपि दियउ वहँ भारत स्वामी ।
इतैं गये रट्ठोर अजित ले साथ धन्वधर ।
किन्तु वहाँ अधिकार शाह कर लीन अनय कर ।

× अजितसिंह को निकालना मुकन्ददास खीची का प्रसिद्ध है। लेकिन वास्तव में गाम सुरपालीया का नादू गोत्र का चारण मनोहरदास ने सपेरे का वेश बनाकर निकाला था। इसका विस्तृत वर्णन 'दुर्गादास चरित्र' में लिखा है।

तब दुर्गदास सोनिंग ने पत्र लिखेउ महारान प्रति ।
अरु अजित सरण राखन अरथ कीनी अनुनय विनय अति ॥

महाराणा के नाम राठौड़ सरदारों की अर्ज़ी गोडवाड़ के गांव वीसलपुर से लिखी

षट् पदी

सिद्ध श्री महारान, धर्म हिन्दुन के रक्षक ।
वैनतेय प्रभु सदा, यवन आगे तुम तक्षक ।
तुम हिन्दुन के भानु, हिन्दु सब रहे कमलगन ।
वरणाक्षर सब जाति, आप ऊँकार दीन धन ।
उपमेय आप उपमान पुनि, भारत के हिन्दु नृपति ।
सह दुर्गदास सोनिंग भट, वन्दत हैं चितौर-पति ॥

कुशल रावरी सदा चहत, हम नाथ निरन्तर ।
कृपादृष्टि बिच भूप, नेक जिन डारहु अन्तर ।
नृप तुमरे पुरसान, हिन्दुमत भारत राखिय ।
तासों हिन्दूपती विरद सब हिन्दुन भाखिय ।
अरु राखि लियउ हिन्दू धरम सरण रखेउ पतशाह गन * ।
प्रभु राखि लेहु नृप अजित को विनय करत हम आप सन ॥

---

* महमुद मालवी या शाहजादा खुर्म को शरन रखे ।

हम संकट महँ परेउ, शाह चलि रह्यो वितिक्रम।
कियउ खालसे देश कहत हैं नृप कों कृत्रिम।
खरचहु सों बहुतंग जंग में मरे सुभट गन।
द्वै रानी मरि गई रखन हित महा लाज धन।
कमधज समस्त अहसान यह मानहिंगे जुग-जुगन अप।
हमरी सुकीर्ति अरु देश भुवि तुम रक्खन सामर्थ नृप॥

पढ्यो पत्र महारान क्रोध अति बढ्यो शाह पर।
मढ्यो हृदय महँ मोद प्रबल कमधजन-नाह पर।
निज पुरषन की नीति राखिकर पत्र पठायो।
जो घनिष्ठ सम्बन्ध सबन को परिचय पायो।
आज आप कल हम महीं सम्मिल हम तुम लाज निज।
ले आउ अजित महाराज कों सुभट सब हि संकोच तजि॥

दुरगदास सोनिंग अजित ले गये रान पहँ।
पूर्व रीति अनुसार मिल रु कीनो सु अदब जहँ।
सब जेवर के सहित एक हाथी दस घोरे।
दश हजार दीनार नजर किय खाय निहोरे।
तरवार एक रत्नन जटित इक कटार मनियन जरी।
रट्ठौर राज की ओर तें नजर निछावर फिर करी॥

राजसिंह महारान ग्राम द्वादस को पट्टा।
दियउ केलवा नगर जहाँ जल ताल अमिट्टा।

अति सनेह सों अजित राखि लीनो सहपरिकर ।
रट्ठौरन सों कहिय रान बलवान नृपतिवर ।
रट्ठौर और सीसोदियन जबें भयो है संघटन ।
सम्मुह न शाह ह्वै है सहज सुभट रहहु निश्चिंत मन ॥

सुनी खबर यह जबें शाह भारत के शासक ।
मावत नहिं उर आग क्रोध सों उठी धधक धक ।
तुरत लिख्यो इक पत्र शाह अवरंग रान प्रति ।
कृत्रिम अजित कबन्ध यहाँ भेजहु तुम भूपति ।
उत्तर न दीन महारान कछु उक्त इहीं फरमान को ।
तब दियउ शीघ्र पठवाय पुनि औरे एक निशान को ॥

याहू को नहिं दियउ रान तोऊ प्रति उत्तर ।
तबें तृतिय नोसान भेज दिखरायो अति डर ।
तदपि नहीं परवाह शाह-पत्रन की कीनी ।
निपट हिन्दुवन-नाह राह अपने कुल लीनी ।
तब बदिय शाह नींद न तजत रान आपनी अरन तें ।
ताकी उडाय देहौं तुरत शाही घोरन खुरन तें ॥

दोहा

सुनियत है पतशाह ने, भेजेउ एक अमीर ।
तानें आय रु रान सों, संभाषण किय वीर ॥

वीर विनोद में लिखा कि राज माता देवड़ीजी भी अपने पुत्र अजीतसिंह के साथ आई थी ।

जो कहिलाई शाह ने, प्रति उत्तर नृप दीन।
ताको हम उद्धृत करत, सुनिये सुकवि प्रवीन॥
सञ्जय लायो धर्म पहँ, दुर्योधन संदेश।
तैसे पठयो रान पहँ, उपालंभ मुगलेश॥

उक्त अमीर का वक्तव्य

अमीर—

मनहर

शाह कहिलाई बन्धु शेवा सों खतूत है न,
मेरे सदा मित्र रहे मिश्र अरु रोम है।
भारत के हिन्दू इसलामिन के दास कहै,
शासक सदैव मम चकत्ताई कौम है।
हजारों रईस पाट चूमिके सलाम करि,
सबै आमखास बीच चलत विलोम है।
हमारे विरोधी जिन राजन को राखि लेत,
राना राजसिंह तुम्हें एतो कहा जोम है॥

महाराना—

हमें तो कछु न जोम उनको रह्यो जो अती,
बोलत है मिथ्या और कहत नमाजी है।
राना राजसिंह तुम राजन को कैसे रखो,
उनकी नितान्त एतो व्यर्थ एतराजी है।

रहे हैं सरण यहाँ महमुद मालवीय,
रखे रान सांगे और बहादुर बाजी है ।
जान में अजान में हमारे जान भूल रहे,
सरण यहाँ पै रहे उनके पिताजी है ॥×

अमीर—

शाह कहिलाई मेरी मंगनी सों शादी कीन,
मूर्तिन लुकाय बनि रहे बलवण्ड है ।
जजिया-विरोधीपत्र जामें कटु शब्द लिखे,
का को नृप एतो बड़ो राखत घमण्ड है ।
कृत्रिम अजीत कहँ खैलन छुपाय राख्यो,
जीव अरु जीविका को ताके हित छण्ड है ।
मेरे निज पानि के निसान को न ध्यान रखे,
राना राजसिंह भए अधिक उदण्ड है ॥

महाराना—

याही को उदण्डता प्रमाने पातशाह तब,
कहा गिनेंगे शाहजहाँ के उथाप को * ।

× उनके पिताजी अर्थात् शाहजहाँ, शाहजादे की हालत में खुर्रम नाम से प्रसिद्ध थे तब उदैपुर महाराणा कर्णसिंहजी ने जगमन्दिरों में रखे थे और कर्णसिंह से पगड़ी बदल भाई हुए उनकी पगड़ी कसूमल विक्टोरिया हॉल में पड़ी है ।

* वालिद साहब को गद्दी से उतार कर आगरे के किले में ७ वर्ष कैद रखे थे ।

कीनो हमने तो चारुमती सों स्वयंवर है,
प्रतिमा न राखी राख्यो धर्म निज आपको।
बालक अजीत मरुधीश जो यहाँ पै रहे,
कृत्रिम नहीं है ये तो बेटा निज बाप को।
उनके निसानन पै ध्यान नहिं दीन्हों सो तो,
कौन प्रतिउत्तर दे व्यर्थ के प्रलाप को।

दोहा

इम कहियो पतशाह सों, हमरो दोष छमेहु।
उत्तर आप निसान को, तब नहिं तो अब लेहु॥

अमीर—

शाह कहिलाई वन्सवारे को विध्वंस कीनो,
जमने न दीनों वहाँ रावल के पांव को।
डूंगरपुरेश गिरिधारी कों भगाय दीनों,
निपट तपाय रह्यो अजहू लौं घाव को
और हू अनेक नर नारिन रुलाए तुम,
काहे को बनायो उर ऐसो भूप ग्राव को।
मेरे पास आयो वाको देख्यो मुरझायो मुख,
कष्ट अति दीनो हरिसिंह महाराव को॥

ग्राव=पत्थर।

महाराना—

लोकन को कष्ट देयबे की मम टेव तोऊ,
अनुचित स्वारथ को मैंने उर धास्यो ना ।
मैंने ज्येष्ठ बन्धु ताको नगर फिराय कर,
ह्वै के निरदई सांझ परे पर मास्यो ना ।
प्यारो जो अनुज ताको और फुसलाय कर,
आसवी छकाय पुनि कारागृह डास्यो ना ।
सुहृद सुजान आप छमा करि दीजे शाह,
पानी के पियासे * निज बापको बिडास्यो ना ॥

अमीर—

शाह कहिलाई तुम पूर्ण खुरराटे लेत,
तिन कों मिटाय हौं तबै ही सुख पाय हौं ।
बंबिन धुराय और सिन्धुन सुनाय कर,
दिल दहलानवारी तोपन दगाय हौं ।
घोरन के पौरन को आहट श्रवन डारि,
शेष के सिरन लागी पृथिवी डिगाय हौं ।

---

* आगरे के किले में बृद्ध शाहजहाँ, औरंगजेब की कैद में था तब पानी न मिलने से औरंग को कहलाया कि बेटा तुम से तो हिन्दू अच्छे हैं कि मरे हुए बापों को भी पानी देते हैं अर्थात् श्राद्ध में जलांजलि देते हैं। तू मुझ जीते हुए बाप को भी पानी नहीं पिलाता। बादशाह के पीने के पानी में गफलत थी इन्तजाम न था। शाहजहाँने कहा—

ऐ पिसतो अजब मुसलमानी। जिन्दा जान सब आब तरसानी।
आफरीं बाद हिन्दुआँ अहरबाब। मुद गारादि हिन्द दायम आब ॥

बैंडे गजराज वीरघण्टन बजाय कर,
राजसिंह तुम्हें गाढनिद्रा तें जगाय हौं ॥

महाराना—

राजा शिवराज कर तिन्द्रा को छुराई उन,
ताको फल पायो और स्वयं पुनि पाय है ।
सिक्खन जगाये सुप्त छत्रिन उठाये शाह,
गिनती के द्योसन में तिन सों अघाय है ।
मोहू को जगायबे को आय है जो पातशाह,
आखिर को आय कर पूर्ण पछताय है ।
हौं तो देश सेवा महँ निरन्तर लागि रह्यो,
जागि रह्यो ताको पुनि और का जगाय है ।

उक्त अमीर का पातशाह से निवेदन करना और राणा पर आक्रमण

दोहा

उत्तर सुनि महारान को , उफनि क्रोध अवरंग ।
लाय लगी सब वदन महँ , अङ्ग अङ्ग प्रत्यंग ॥

पंचम प्रकरण

(युद्ध)

षट् पदी

देशन-देशन पत्र भेज दीने अब हजरत ।
नृपगन और नबाब सबहि आवहु सूबाजुत ।
मेदपाट पर सदल चढ़न चाहत हम सत्वर ।
यह उदन्त सुनि पर्‌यो घरन-घर सबन नार नर ।
खुलि गये सिलहखाना अखिल, झरत सांन निस द्योस नित ।
कायर सु भाजि इत उत गये वीर भये प्रमुदित अमित ॥

सझे टोप सन्नाह मिली भट मूंछ भुँहारन ।
करी तूट बकतरन भीर अति परी लुहारन ।
कोउक जाफर रंग केऊ धारे नीलांबर ।
हूरन व्याहन हेत मौर बन्धे कउ नरवर ।
केउक इरानि केउ काबुली केऊ तुरकी देश के ।
अवरंग हुकम हाजिर भये फनन नवावत सेस के ॥

हाथी

साटमार पुचकार अंग रज झार रुमालन ।
चित्र बनाये सीस रंग सिन्दूर जंगालन ।

आलमगीर की मेवाड़ पर चढ़ाई (वीर विनोद भाग १ पृष्ठ ४६३)

बहु मोदक डलवाय पाय तरछौं से पानी।
फौजदार विरदाय चरन हेतिन गहि पानी।
गुञ्जार करत मधुकर श्रवन लंगर खींचत पीन को।
गज नीठ नीठ बाहिर कढे, करि आगे करणीन को॥

कतिकन कसे हवद कतिक गज गाह उठाये।
कसि अंबक कउ पीठ बहुत विरदाय बढ़ाये।
जरी बाफता झूल सझे कंचन आभूषण।
जिहिं सुण्डन फटकार चमकि जावत हय पूषण।
इमि इन्द्रप्रस्थ बाहिर विपुल फौजदार चढ़ि चढ़ि खरे।
कज्जल पहार कि यमल गन कै बद्दल जल के भरे॥

घोड़े

चर सु दुबागन तुकि हयन गहि लाये बाहिर।
खानदान अरु जाति खेत जिन के जग जाहिर।
रंग अंग सौन्दर्य कोर नहिं सकत चितेरा।
अरु उपमा हित सुकवि फिरत खावत भटभेरा।
जो देखि लेय पाण्डव नकुल (तो) राई लौंन उतारही।
चिल्ला कमान इक धाप महिं कंठ कुरंगन डारही॥

आभूषण नग जटित सुघर सझि दिये सईसन।
इन कों इज्जत जिती तिती नहिं मिलत रईसन।

हेतिन=बरछीएँ।

चमर उड़त जिन बदन शाह जी कहिके बोलत ।
झझकत अपनी छांह चढ़न मन रवि को डोलत ।
जे पाइ इशारे रान के कूद जात हवदन करी ।
ऐसे हयन्द ʻगन पर यहाँ एक लक्ख पक्खर परी ॥

तोपें

चढ़ी चरक्खन तोप लोप कर देत गढ़न कहँ ।
कऊ मक्र अहि-मुखी कउक गजसिंह बदन जहँ ।
खींचत वृषभ अनेक पिट्ठ लागत गज टल्ले ।
ह्वै लुलायु बलिदान और तूटत अज छिल्ले ।
तोऊ न चलत है विनय बिनु भटन मनोरथ कापिनी ।
माननी तीय सम मचलती चली दोय सत पापिनी ॥

जिनके गोलंदाज बहुत कर हते फिरंगी ।
उनने केऊ बेर जीत लीने जुध जंगी ।
अरध घरी महँ बीस फेर जिनके करि डारत ।
वहीं ठौर लगि जात, जहाँ पर लक्ष विचारत ।
रण महँ चलात गोले तबै परत जात दीरघ गली ।
मेवार देश मारग महत यों सतघ्नि रन महँ चली ॥

रान=जांघ । फिरंगी=अंग्रेज, जहाँगीर के जमाने में भी आगये थे। देखो राजस्थान इतिहास ।

वृषभ करभ खर खचर चले पुनि सकट हजारन ।
खान पान सामान और वित्तान उपारन ।
बहु सिविका नरयान मुख्य हुरमान विराजन ।
बैठन हित रथ चले मन्त्रि मुल्लान महाजन ।
वैद रु हकीम वर नाइने और चिकित्सक अति भले ।
वाहन अनेक सजि सजि सुभट, मेदपाट मारग चले ॥

गुज्जर सों सुलतान आय करि जोस अकब्बर ।
मउजिम दक्षिण छोर चल्यो असमान घिसत सिर ।
कामबक्ष सुत वीर पूर्व तें हयन उठाये ।
पुनि सूबापति और देश देशन तें आये ।
सब मिले आय दिल्ली शहर, भूमि धूमि डगमग भरी ।
हलचल सु होत इम मुगल दल, भुवि मण्डल खलभल परी ॥

वेलदार चलि दियउ करन मग सरल पहारन ।
गहे हत्थ कुद्दाल छुद्र नदि पटिवे कारन ।
सहँसन चलि कुठ्ठार वृच्छ अवरोधन काटन ।
सहँसन जनन लगाय कियेउ सर पद्धर घाटन ।
यों करि प्रबन्ध रन पण्डितन, रनकंकन रव झनझनी ।
सुयोधन जान सम्राट की चलत भई चतुरंगिनी ॥

चढ्यो शाह अवरंग परी अति चोट नगारन ।
नीली ध्वजा निसान खुले पिट्ठन बड़ वारन ।

सत्रह सौ पैंतीस भाद्रपद शुक्ला अष्टमि ।
दिल्ली सों अजमेर शीघ्र चलि दियउ पराक्रमि ।
वहिं द्योस अकब्बर + भेज दिय पालम कसबे सों चतुर ।
हमरे पूर्व पहुँचहु तुरत, शाह कहिय अजमेरपुर ॥

दोहा

शाह त्रयोदस दिवस महँ, आयेउ पुनि अजमेर ।
आना सागर पाज पर, डेरे दीन सवेर ॥

छन्द मुक्तादाम

सुनी जब रान चढ्यो अवरंग,
बढ्यो मुख जोस रु जंग उमंग ।
सबैं कुमरान अरू सरदार,
बुलाइय वीरन को दरबार ॥
जमे जयसिंह रु भीम कुमार,
गिरप्पुर को जसवन्त उदार ।
जम्यो महरान जु वन्सज भाव,
महा मतिमान रु वीर स्वभाव ॥
जम्यो महराज मनोहर सीह,
त्यूँ ही बलवान दलेल सु सीह ।
अरू अरिसिंह अरीन निपात,
वही महरान हि को लघु भ्रात ॥

+ छोटा शाहजादा अकबर ।

जम्यो चव पुत्रन सों परिषद्,
उतारनहार सु म्लेछन मद्द ।
जम्यो भट सब्बलसी चहुआन,
लिये पद राव बड़ो बलवान ॥
जम्यो मकवान सु चन्दरसेन,
कभी मुख कातर सब्द कहे न ।
जम्यो पुनि रावत केसरिसीह,
वही सुत गंग सँयुक्त अबीह ॥
त्युँही मकवान सु जैत पटैत,
कबैं नहिं वीर तज्यो रन-खेत ।
मिल्यो परमार सु बैरियसाल,
यथारथ नाम सु बैरिनकाल ॥
अरू महरावत जो महसीह,
करी अरि को वह शोभित सीह ।
बड़ो पुनि राव बली रतनेश
जिहीं बल जानत हो जवनेश ॥
पुनी भट श्यामलदास महान,
हतो जयमल्ल प्रपौत्र जवान ।

महाराना राजसिंह का युद्ध योजना के लिए सरदारों को बुलाना और महाराणा का भाषण व पुरोहित गरीबदास की उक्ति ।

(वीर विनोद भाग १ पृष्ठ ४६४-४६५)

अरू वर रावत मान सु वीर,
जिहीं बल जानत हो जहँगीर ॥
हतो भट केसरिसिंह चुहान,
महा रन-पण्डित रू गुणवान ।
अरू सकतावत मोखमसीह,
जिन्हें उपमा न निरर्थक सीह ॥
तहाँ द्रुगदास मिल्यो कमधज्ज,
बँधी भट सोनिंग पायन लज्ज,
पराक्रम पुञ्ज सु विक्रमजीत,
हतो वह पाण्डुन वन्स अजीत ॥
रह्यो भट ह्यां रुकमांगद राव,
बड़ो महरानहु को उमराव ।
महाबलि झल्ल कुली जसवन्त,
सऊ खल वृन्दन तोरक दन्त ॥
दिलावर गोपियनाथ रठौर,
सपूतन शूरन को सिरमौर ।
महेचय वन्श जम्यो अमरेश,
अरू कुल खिच्चिय रामनरेश ॥
महामति डोड तन्यो महसिंह,
जिन्हें लखि भाजत बब्बरि सिंह ।

वीर विनोद भाग १ पृष्ठ ४६४ ।

डव्यो पुनि मन्त्रि दयाल सु दास,
हतो वह जैनिय धर्म उजास ॥

दोहा

अब्बु मलक अजीज हो, नामक इक बलवान ।
भयो उपस्थित इहिं सभा, मुस्सलिमान पठान ॥

उपस्थित सरदारों के स्थानों की सूची

जसवन्तसिंह डूंगरपुर का स्वामी
महाराना अमरसिंह का तीसरा पुत्र भावसिंह
महाराना कर्णसिंह का छोटा पुत्र गरीबदास
बेदलेवालों का पूर्वज
सादडी वालों का पूर्वज
बानसी वालों का पूर्वज
देलवाड़े वालों का पूर्वज
बीजोल्या वाला
बेघूं वाले कालीमेघ का पुत्र
सलूंबर रावत रुगनाथसिंह का पुत्र
प्रसिद्ध राव जयमल्ल का वन्शधर बदनोर का स्वामी
कानोड़ वालों का पूर्वज
पारसोली का
भींडर का
प्रसिद्ध राव दुर्गादास आसावत

सोनिंग विट्ठलदास चांपावत राठौर*
सोलंकी रूपनगर का
कोठारिय वालों का पूर्वज
गोगूदे के कान्हसिंहका पुत्र
घाणेराव का स्वामी
नीबड़ी महेचा राठौड़
सरदारगढ़ वालों का पूर्वज
दयालदास मंत्री संघी गोत महाजन जैनी
अब्बु मलक अजीज पठान शाहजादा
(मुगलों की नाइतफाकी से यहां आगया था)

---

*यह सोनिंग विट्ठलदास चांपावत मारवाड़ के राजा रिड़मल के पुत्र। चांपा से चांपावतों की शाखा चली, चांपा का प्रपौत्र माडण और गोपालदास का पुत्र विट्ठलदास था। महाराज जसवन्त के समय उसकी सेवा में रहा। उसके ३५०००) की आय के पाली आदि के ३३ गांव थे। उस के पुत्रों में से सोनिंग था महाराज जसवन्त की सेवा में रहा। उसकी मृत्यु के बाद दुर्गादास व सोनिंग महाराजा अजीतसिंह को लेकर महाराणा राजसिंह के पास आया। अजीतसिंह के मारवाड़ चले जाने के पश्चात् दुर्गादास के साथ राठौड़ों का मुखिया बन कर लड़ा। फिर स० १७३८ में देहान्त हो जाने से उसका भाई अजनसिंह उसके स्थान में राठौड़ों का मुखिया होकर लडता रहा। वह उसी साल काम आ गया। बाद में उस के पुत्र शक्तिसिंह को बाकरा आदि गांवों की जागीरदारी मिली।

दयालदास मत्री ओसवाल जाति के सिंगवी गोत्र तेजा का प्रपौत्र जगु का पौत्र राजा का चतुर्थ पुत्र। उसने राजनगर के समीप पहाड़ी पर बहुत व्यय से सगमरमर का आदिनाथ का चतुर्मुख जैन प्रासाद बनवाया।

युद्ध किस जगह करें व कैसे करें, महाराणा के यह पूछने पर सरदारों व पुरोहित गरीबदास की उक्ति

दोहा

जब जुरिगो दरबार इम, परामर्श के हेत ।
उमरावन भृत्यन भटन, राना भाषण देत ॥
रहन सहन नर तियनको, धर्म कर्म निज जात ।
शासन होत विधर्मियन, परिवर्तन ह्वे जात ॥
शासन कहूँ विधर्मिगन, जो ह्वेजावहि नित्य ।
खान पान शिक्षा बहुरि, बदल जात साहित्य ॥

महाराणा का वक्तव्य

सभासद सर्व सुनो सरदार,
जिहीं भुज झूल रह्यो रन भार ।
यहीं तुमरो प्रिय भारत देश,
यहीं तव जन्म-मही रु स्वदेश ॥
यहीं भुवि मातु हि के तुम पुत्र,
यहीं भुवि के सब मित्र कलत्र ।
यहीं भुवि तें तुम पालन होत,
यहीं भुवि तें निज कीर्ति उद्योत ॥

यहीं भुवि तें तुम जन्म गहन्त,
यही भुवि तें तुम मुक्ति लहन्त ।
भये पुरषा निज बीर अनेक,
परे भट जुझि यहाँ सविवेक ॥

यहीं भुवि में बहु जौहर वृत्त,
किये अरु पूर्ण रहे दृढ़ मत्त ।
यहीं भुवि सोभित है कुरु खेत,
यहीं भुवि वीर भये रु विजेत ॥

यहीं भुवि मध्य हिमाद्रि पहार,
यहीं पर देव नदी जल धार ।
यहाँ पर राजत तीर्थ अनन्त,
जहाँ पर संतत संत बसन्त ॥

यहाँ पर बन्सज राजत राम,
यहाँ कुल कृष्ण अरू बलराम ।
यही निज आरिय भूमि पवित्र,
जिन्हें किय शत्रुन ने अपवित्र ॥

जहाँ लग शासक हिन्दुन भूप,
रहे तब लौं रहि शान्ति अनूप ।
जबै चढ़ि आयउ बाबर शाह,
उन्हें त्वर रोकन को नरनाह ॥

पितामह भूप चढ़े संगराम,
प्रभू गति पाय भयो विधि वाम ।
जिन्हें खल देत तबैं विष जो न,
ततो करतो त्वर बाबर गौंन ॥
अकब्बर सों कुल धर्महि सोध,
कियो महरान प्रताप विरोध ।
भये अरि के सब भूप अधीन,
रह्यो परताप सु तोउ स्वधीन ॥
चढ्यो जहँगीर जबैं मुगलेश,
अठारह युद्ध किये अमरेश ।
रह्यो सरनागत शाहजहान,
यहीं पर कर्ण रख्यो महरान ॥
मर्‍यो जब शाहजहाँ पतशाह,
बढ्यो चहुँ पुत्रन राज्य उमाह ।
चह्यो रह पक्ष बड़े सुलतान,
वही विनती हम दीन न ध्यान ॥
चह्यो रह पक्ष त्यूँ ही अवरंग,
लिखे बहु पत्र जु लोभ प्रसंग ।
इसे हम दीन सु सेन * सहाय,
सु तो तुम जानत हो समुदाय ॥

* दक्षिण में एक हजार सेना की सहायता दी थी ।

यहीं किय भारत को अधिकार,
किये उपकार हि पै अपकार ।
हजारन मूर्तिन दिन्ह तुराय,
हजारन मन्दिर दीन गिराय ॥
हजारन म्लेछ किये हिंदुवान,
हजारन तीयन भो अपमान ।
अनेकन राजन की दुहितान,
विवाहत हैं अपने सुलतान ॥
कऊ नृप को कहि कृत्रिम × देत,
सबैं धन देश बली हरलेत ।
अरू जजिया-कर दीन लगाय,
तिहीं दुख हिन्दु रहे विललाय ॥
रही उत हिन्दु प्रजा जिहिं राज,
बची जिनकी नहिं संपति लाज ।
तबैं जजिया-कर को सु विरोध,
कियो हमने हित भारत सोध ॥
तिहीं पर क्रोधित ह्वै अवरंग,
चढ्यो बढ़ि आवत जंग उमंग ।
कियो अति हिन्दुन जाति अकाज,
चल्यो तुम को फिर मारन काज ।

× जैसे—जोधपुर महाराज अजीतसिंह ।

यहीं पर याहि न देहु हटाय,
ततो करिहै बहु देश अन्याय ।
रह्यो तुमरो मुख भारत जोय,
तुम्हीं पर दारमदार सँजोय ॥
सदा तुमरो निज धर्म सँग्राम,
कथ्यो प्रभु कृष्ण महा अभिराम ।
धरे तुमरे बल मुण्डन माल,
सदा शिव भूतन नाथ कृपाल ॥
रखैं तुमरी नित ही वहँ आस,
जिन्हैं नर-आमिष की अभिलाष ।
सबैं नवलक्खनि योगनि सोय,
खरी अपने निज खप्पर धोय ॥
यहीं पर जो तुमरे पुरखान,
बहाय रु रक्त रखी कुल कान ।
उपस्थित है तुमरी यहिं बेर,
धपावहु गिद्धन सत्रुन गेर ॥
सुनो मम भाषण सर्व हि आर्य,
भयो यह युद्ध यहाँ अनिवार्य ।
तथापिय पूछत हौं तुम कों सु,
बताइय युक्ति यहीं हम कों सु ॥

यही रन कौन विधी किहीं ओर,
किये पर लागहि अप्पन जोर।
कही सरदारन ने कर जोर,
सुनो महरान सु भूपन-मौर॥
सबै हम जानत छत्रिय धर्म,
अरू सब ज्ञात हमें रन-कर्म।
अरू यह हू हम जानत और,
किये पुरषान यहाँ रन घोर॥
बहाय रु रक्त भये बलिदान,
रहे भट रक्षक देश निदान।
अजौं वह सूकि गयो नहिं खून,
अजौं वह बात भई न जबून॥
रही दुव पीढिन में कछु सांति,
भई रहि पीढिन पीढिन क्रांति।
भये रन आदि सदा हम सर्व,
अहो निस खोजत हैं रन-पर्व॥
रणांगण सत्रुन मार मरन्त,
यहीं सम तीर्थ न और गिनन्त।
रह्यौ अवरंग अतीव कृतघ्न,
किये इन भारत में अति विघ्न॥

मौर=मुकुट।

सदा चलि आवत है इहिं रीत,
अनीतिन की नहिं होवहिं जीत ।
उढावहिं शंकर को गज-खाल
अरू पहिरावहिं मुण्डनमाल ॥
बजावत हैं नहिं व्यर्थ हि गाल,
बहावहि रक्तन नालन खाल ।
करें चतुरंगिनि सत्रुन हीन,
वरैं बहु वीरन जो अछरीन ॥
हरें नहिं जो अवरंग गुमान,
ततो नहि धारहिं हत्थ कृपान ।
मही नहिं पाटहिं रुण्डन मुण्ड,
नहीं खग धप्पहि झुण्डन झुण्ड ॥
नहीं जगदंब डकारन खाय,
ततो मुख नांहि दिखावहिं आय ।
अरी गन के हम तोरहिं दन्त,
प्रभू अब आप रहैं निसचिन्त ॥

पुरोहित गरीबदास का वक्तव्य*

पुरोहित दास गरीब सुजान,
कही समयोचित बात प्रमान ।

*यह बड़े पुरोहित पालीवाल थे ।

प्रभू महरान सुभाषण दीन,
तिहीं कर आप समर्थन कीन ॥
सु तो निजके यहँ योग्य हमेश,
रही तुमरे भुज लाज स्वदेश ।
यथारथ ही तव खग्गन जोर,
रह्यो यह देश सबें शिर मोर ॥
तथापि जु प्रश्न कियो महरान,
तिहीं नहिं उत्तर दीन निदान ।
किहीं बिधि युद्ध करैं किहिं स्थान,
तुम्हें यहि पूछत है महरान ॥
कही रतनेश सु राव सहेत,
सु तो तुम क्यों 'ब नहीं कहि देत ।
बदी तब पूज्य पुरोहित अन्त,
भली सब ही करिहैं भगवन्त ॥
तथापिय देश रु काल निहार,
बलाबल सत्रुन को सुविचार ।
कियो अब चाहिय अप्पन को सु,
महा अरि जोर उत्थपन को सु ॥
बड़ो बलवान यही अवरंग,
किये इन भीम अनेकन जंग ।

रहे इनके हय लक्ष प्रमान,
अरू हमरे चतुरांश समान* ॥
भले इन साथ फिरंगिय लोग,
तिन्हें कर तोपन को सु प्रयोग ।
हमें करनो इहि उक्त उपाय,
चहे लरनो नहिं यूथ बनाय ॥
पहारन को पुनि ओट निहार,
करे नित धावन बारहि बार ।
बढाय रु भील निजी पुरसार्थ,
सबैं उन लूटिय खाद्य पदार्थ ॥
मॅगावहि खाद्य कहूँ अरि सोध,
तऊ करिये उनको अवरोध ।
करैं इनको सब भांतहि तंग,
जहाँ तहँ ठान अनेकन जंग ॥
अरू पुनि लूटिय शाह प्रदेश,
तबैं हम पावहिं लाभ विसेस ।
प्रभू परताप गही यहि राह,
पराजित भो सु अकब्बर शाह ॥
यहीं विधि भूप करि अमरेस,
भयो जहँगीर न लाभ विसेस ।

---

*शाही सेना में एक लाख, हमारी सेना छबीस हजार ।

करादृय सून्य उदैपुर नग्र,
अरू ढिग प्रान्त प्रजाहि समग्र ॥
मिले नहिं ह्यां उनकों त्रण अन्न,
तबैं दुख पावहिं पूर्ण यवन्न ।
अर्‍यो मन वीरन के यहि दाव,
कही नृप हू यह नेक उपाव ॥

महाराना का भोमट में जाना

षट् पदी

सब परिकर संयुक्त रान बढ़िगे गिरि दच्छन ।
पहिले दिवस वितान, तने चव कोस फरासन ।
देवी माता गिरन मिले भुम्मिय गन धरि धक ।
पानरवा रु जवास मेरपुर जूरा आदिक ।
औरहु अनेक पल्लीपती आय भये सम्मिल किते ।
जैसे समुद्र महँ आइयत नदि नाले बरसात के ॥

जिनके संग अनेक भील आये धनुधारी ।
गची बकतर ठौर कमर महँ कसी कटारी ।
तरकस बंधेउ पीठ धवन पत्रन शिर तुररे ।
सदा रहत हैं नरम युद्ध बेराँ अति करारे ।
जिन सहज रंग श्यामल बदन आनि आनि प्रभु पद नये ।
चिरदास भील महारान के भीम रूप हाजिर भये ॥

प्रिय जिन अधिक पहार प्रिय सु जिहिं मदिरा आमिष।
प्रिय तस्करपन जिनहिं प्रिय सु जिन सदा वीर रस।
प्रिय जिन मद्दल नाद प्रिय सु जिन गजिया गायन।
प्रिय जिन फेंटे लाल प्रिय सु तिन कों तन घायन।
इक प्रिय जु नहीं तन उनहि को स्वामि काज अरु देश हित।
भट भील आय हाजिर भये थई थई बोलत अमित॥

मनहर

कारे हैं कुरूप बटवारे हटवारे पूरे,
राम-राम ठौर मार-मार रटवारे हैं।
सहज स्वभाव जाको सन्तत शिकारी बान,
आमिष अहारी पर सुद्ध घटवारे हैं।
माधवीय मदिरा के पीवन अमिट वारे,
प्राय अठवारे लूटि लेत हठवारे हैं।
लोकन के माल छीन करें बटवारे नित्य,
लंबी लटवारे सीस फेंटे बटवारे हैं॥

भीलनियें

घुटनों तलक जाके पायल ठनंक पांव,
रुनक झुनक होत जात नेवरिन की।
छोटी-सी उढोनी सीस छोटी जिहिं बेनी रही,
नथुनी कथीर और छोटे गाघरिन की।

बीरता उदारता रु धीरता हि उनकी पै,
सौ सौ बेर वारडारौं सुन्दरी सुरन की ।
हजारन सबरीन अपने पतिन साथ,
आइ हैं करन सेवा घायल नरन की ॥
वन के अनेक फूल फल हैं जिनहिं प्रिय,
जाकी सदैव जन्मभूमि कन्दरिन की ।
सीधी-सी पहुवि जैसे गिरन पै दोरि जात,
त्यों ही चपलाई साख साखन फिरन की ।
कबौं बढ़ि जात हटिजात कबौं युद्ध महँ,
देखि गति एक कपि भीलन लरन की ।
रावन पै करन चढ़ाई रामचन्द्र पास,
उपस्थित भई सेना मानो बन्दरन की ॥

मेर आदि

सीने टेक देत हैं सतघ्नी चलतीन पर,
वीर रस भीने बली मीने खैरवारे के ।
खून के बिना न वस्त्र लेत हैं बटाउन के,
मादक चढ़ाये हैं चढ़ाये धनुवारे के ।
कमर कटारे बांधि आये हैं कटारे वारे,
पछिन के माभी और चौथें लेन वारे के ।
शेर-से लखात समसेर लिये कन्धन पै,
हाजिर भये हैं फेर मेर मेरवारे के ॥

षट् पदी

हते पचास हजार भील मीने रु गरासिय ।
तिन को आज्ञा तुरत रान इहिं भांति निकासिय।
अयुत-अयुत दल झुण्ड करि रु सब घाटन रोकहु ।
अरि दल आय न जाय आय तो धनु कर तोकहु ।
अरु रसद खान सामान सब लूटि पठावहु मम पहीं ।
सूचना यहाँ भेजहु तुरत, नये उपद्रव ह्वै कहीं ॥
वही स्थान सों भूप नैनवारा महिं आये ।
अन्तहपुर दुहुँ नृपन पूर्व ही यहाँ पठाये ।
सरदारन-परिवार दुहूँ देशन के यहिं ठाँ ।
जिन को रक्षा भार रान आपन लिय वहिं ठाँ ।
बीसक हजार असवार अरु सहँस पचीस पदाति मिल ।
योजना युद्ध की इम करि रु भोमट में रहियत अखिल ॥

दोहा

उदयनगर गांवन सहित, प्रजा वर्ग को रान ।
शैलन में बुलवाय लिय, करि के युक्ति महान ॥
इत अवरंग अजमेर सों, दे खिल्लत गज दान ।
कार्तिक शुक्ला तीज को, पठयो तहबर खान ॥
तिहिं को पुनि फरमान दिय, नेक न करहू देर ।
मांडल आदिक परगने, जाय करहु तुम जेर ॥

नैनवारा=एक कसबे का नाम ।

सात हजार सवार दिय, हसन अली के संग।
कहिय प्रथम तुम रान सों, जाय जुरहु भट जंग॥
अगहन शुक्ला नवमि को, चढ्यो शाह अवरंग।
हलबत्ती दिस-दिस भई, कसे तुरंगन तंग॥

बादशाह की मेवाड़ पर चढाई

षट् पदी

ठननंकिय गज घण्ट हींस हैवर हननंकिय।
झननंकिय पखरालि राग सिन्धुन रननंकिय।
भननंकिय नभ गिद्ध परिन नेवर छननंकिय।
टननंकिय बड़ बंब मूछ शूरन फननंकिय।
अति भार परत चतुरंग दल भुम्मि धुज्ज घूमन भरी।
नागिनि हि भूरि भ्रम डारती हय गन बागन उप्परी॥

बररक्किय सन्नाह करी जिनकी बररक्किय।
फररक्किय नीशान हृदय कायर धररक्किय।
लररक्किय फन सेस खपर योगिनि खररक्किय।
घुररक्किय बड ढोल पिट्ठ कच्छप चररक्किय।
जय और पराजय हेत अति परी हिन्द महँ खलभली।
इहिं भांत सेन पतशाह की मेदपाट मारग चली॥

मेदपाट महँ आय पुर रु मांडल गढ़ मांडल।
चित्रकूट बदनोर भैंसरोर हि भेजे दल।

जीरन और दसोर प्रान्त नीमच कप्पासन ।
उंटाला महँ कियउ राजनग्रहि कूशासन ।
पुनि स्वयं उदयपुर शहर महँ सेन भेज जितवित असित ।
क्रम-क्रम हि शाह इन प्रान्त पर कर दीने थाने नियत ॥

पातशाह का देवारी के घाटे पर आना

दहबारी के द्वार सेन आई अब सत्वर ।
तहाँ दरवाजे बन्द सुदृढ़ पाये यवनेश्वर ।
कितिक रान सरदार मरन हित बैठे दृढ़मत ।
तउ खल अररन तोर जोर युत पैठे जित तित ।
गोरा कबन्ध भट वीर वर, बलू दासवत झरि पर्‌यो ।
रावत खुमान सारंगदे लग्गे घावन बहु लर्‌यो ॥

महाराना के पहाड़ों में जाने की बादशाह को खबर

दोहा

ता पीछे पतशाह सों, खबरनवीसन आय ।
अरज करिय दच्छिन गिरन, राना गयो पलाय ॥
शाह कहिय जय सूचना, है इहिं खुदा करीम ।
इसलामिन आतंक तें, भाजि गयो भट भीम ॥

कवि वचन

पै हजरत जानत नहीं, कछु दिन हि की देर ।
बेशरमी सों भाजि कें, स्वयं जाहि अजमेर ॥

हसन अली का राना का पता लगाने जाना

हसन अली को भेज दिय , पता लगावन हेत ।
कहाँ रहत है रान वहँ , अपनी सेन समेत ॥

इधर महमुद आजम को उदयपुर भेजना

अरु मुहमद आजम पठय , इतैं उदैपुर स्थान ।
खांनेजहाँ रु ताजखां , संग रुहिल्लाखान ॥
इन जाय रु देख्यो शहर , खाली घर सब सून ।
नज़र परै नहिं नार नर , करे कवन को खून ॥
इक इक्का सादूलखां , ताज खान इक शूर ।
जहँ मन्दिर जगदीश को , चले गिरावन क्रूर ॥

नरू बारहठ का वृत्तान्त

सहर सून्य करिके नृपति , गये पहारन ग्राम ।
पौल पात्र पीछे रह्यो , नरू बारहठ नाम ॥
अब ज्यों ही जाने लगो , नरू रान के पास ।
कियउ एक सरदार ने , यासों कछु परिहास ॥
जहिं दरवाजे पर सुकवि , तोरण घोरा लेत ।
आज रहेगो सून्य वह , तुम ताको तजि देत ॥

सुना है नरू का परिहास डोडिया ठाकुर ने किया था ।

कहिय नरू सरदार सों, याद दिलाई पूर।
हम तो अब रहि हैं यहीं, आप जाइये शूर॥
तोरन घोरा यहिं लियो, यह मेरी प्रिय पौर।
मम मरिबे पीछे यहाँ, आवहि सत्रु बहोरि॥
सहमि गयो सरदार तब, करहू कविवर माफ।
हमने तो परिहास किय, ऐसी करहु न आप॥

कवि वचन

तदपि न हठ छोर्‌यो सुकवि, डटिगो तोरन पौर।
तुलसीमञ्जर के सहित, शिर पर धारे मौर॥
कल्ला कांगस आदि ले, निज संगी बाईस।
मंच ढारिके बैठिगे, जहाँ चौक जगदीस॥

शहर शून्य करना व बारहठ नरू का २२ आदमियों सहित मारा जाना।
(महाराना राजसिंह भाग १ पृ० ४६६-४६७)

टिप्पणी—औरंगजेब नामे में लिखा है—२२ आदमी मांचा तोड़ बड़े मन्दिर के पास बैठे हुए थे। वो एक एक करिके आते और शाही फौजको मार के मारे जाते। इन २२ में कुछ तो लाछूड़े के राठौर (जोडिया ठाकुर) थे। शेष नरू के कुटुम्बी व एक कल्ला कांगस गूजर जो इनके गांव (सैंणोद) का रहने वाला था। कहा जाता है कि कल्ला किसी काम के लिए अपने गांव से अपने ठाकुर नरू के पास आया हुआ था। युद्ध के समय नरू, कल्ला को अपने घर जाने की सीख देने लगा। परन्तु कल्ला ने कहा—मैं इस समय नहीं जाऊंगा और बड़ी बहादुरी से काम आया। उसके वंशज अभी सैंणोद में रहते हैं। यह युद्ध सं० १७३६ माघ कृष्ण ८ को हुआ था।

तिरपोलियों के पास नरू बारहठ का सिर गिरा और वह लड़ता हुआ जगदीश-मन्दिर के उत्तर दरवाजे के पास गिरा।

सुनी बत्त यहँ रान जब, किय आग्रह बुलवान।
नट्यो सुकवि उत जाइबे, डट्यो रह्यो बलवान ॥

नरू का वक्तव्य

मनुज को जहँ तहँ मरन, कै घर कै भाराथ।
तब मैं अपनी पौर को, कैसे छोरौं नाथ ॥
चाँद पौर ह्वे ताजखां, आयो प्रबल पठान।
नरू बारहठ ताहि सों, पकरी वीर कृपाण ॥
सुकवी तोरन पौर सों, आयो लरत बलीश।
तिरपोलिन के पास में, ताको तूटो शीश ॥
लरत-लरत धर धर पर्‍यो, जित मन्दिर जगदीश।
तिनहि दाहिने पार्श्व है, वह स्मारक कवि-ईश ॥
बन्यो रह्यो वहिं ठौर पै, एक समाधी चिन्ह* ।
समय पाय इसलामियन, पीर स्थापना किन्ह ॥
सेस रहे इकवीस भट, तिन महँ कछु राठौर।
इक गूजर कांगस-कला, नरू कुटम्बी और ॥
इक-इक करि तुरकनन लरि, परे खेत रनधीर।
मारे केते मुगल गन, मोटे मीर अमीर ॥

---

*तिरपोलियों के पास नरू का शिर गिरा। इसका धड़ लड़ता हुआ जगदीश के उत्तर दरवाजे के पास करीब २०० कदम पर जहाँ चबूतरा है। जिस पर मोका पाकर मूसलमानो ने पीरजी बना दिये।

खेत परे इनके परे , मन्दिर के कछु ग्राव ।
इनके जीवित नहिं लगो , इसलामिन को दाव ॥
वही काल महँ कउ सुकवि , छन्द बनाये दोय ।
ताको इहि ठाँ लिखत हौं , सुने रहे हम सोय ॥

प्राचीन गीत नामक छन्द

कहियो नरपाल़ आवियां कटकां,
धूंण छड़ाल़ धरा पै घोल़ ।
पौल वडा गज वाज पामतौ ,
पड़ते भार न छोड़ूं पोल़ ॥
राजड़ कियो राण छल़ रूड़ो ,
कांनो दे नीसरूं कठे ।
अरि घोड़ो फेरण किम आवे ,
(मैं) तोरण घोड़ो लियो तठै ॥
आखा पील़ा करे ऊजल़ा ,
सौदो रवदां कल़ह सझ ।
कर मण्डियो नेग कारणे ,
कमल़ ऊडियो तेग कज ॥
उदियापुर सोदे अजरायल ,
कलमां हूँ भाराथ कियो ।
दत लेतो आवे दरवाजे ,
देवल जावे मरण दियो ॥

षट्पदी

सबल लिखे पतशाह, राण धरती रीसायो ।
उदियापुर उपर उमंग अवरंग चढ़ आयो ।
मुगलाँ हूं रण मण्ड छोह वीरारस छायो ।
सौदे ब्रन सणगार सांपड़े खाग सँभायो ।
अमरवत नाम राखण अमर दल विच उर दरियाव रो ।
पड़ियो नरू पड़ियाँ पछे देवल दांणे राव रो ॥

पातशाह का उदैसागर जाना और हसनअली का लापता होना

दोहा

शाह उदैसागर गयो, देखन को दरियाव ।
गिरवाये त्रय मन्दिरन, अपने सहज स्वभाव ॥
हसन अली महारान दल, पता लगावन हेत ।
गयो रह्यो दक्षिन गिरन, शाही भटन समेत ॥
पै लापत्ता यह भयो, भई बहुत दिन देर ।
एक पक्ष लौं शाह कों, खबर मिली नहिं फेर ॥
तातें शाही सेन महँ, भय छायो अति भीम ।
कहन लगे जित तित सभय, निर्बल व्यक्ति गनीम ॥

हमतो पहिले ही कही , यहै पहारी देश ।
हमरो बल नहिं चलहिगो , उक्त ठौर पै लेश ॥
रजपूतन को अरिन पर , अति छायो आतंक ।
कऊ उपस्थित होत नहिं , पता लगान निशंक ॥

तुराकी मीर की अर्ज

तबैं तुराकी मीर ने , अरज कराई आय ।
चर को आज्ञा जो मिले , (तो) पता लगावौं जाय ॥
आज्ञा पाय रु चलि दियो , ले कछु चौकीदार ।
द्वै दिन सों पीछो फिर्यो , पता लगाय पहार ॥
याके साहस पर अमित , ह्वै प्रसन्न पतशाह ।
पद वृद्धी कर दीन पुनि , सब बिधि किन्ह सराह ॥

राठौर अणंदसिंह केलवे वालों के पूर्वज का मारा जाना

शाहजादा मउज्जम के , राजनगर की राह ।
बढ़न पहारन बीच सों , कीन योजना शाह ॥
राजसिंह महारान ने , उक्त खबर को पाय ।
रक्षा राजसमुद्र हित , दीने सुभट पठाय ॥

मुगलन की मुठभेर में, आणँदसिंह कबन्ध।
जैतमाल भट झरि पर्‌यो, कुल अभिमान सबन्ध॥

शाहजादा अकबर को ४००००) का सरपेच देकर उदयपुर की लड़ाई पर नियुक्त करना

दोहा

शहजादा अकबर सुभट, ले शिरपेच महान।
उदयनगर की राह पर, भयो नियत बलवान॥
तहबरखां को साथ लिय, बढ्यो उदयपुर ओर।
वहिं ठाँ सों इकलिंग दिस, चल्यो वीर सरजोर॥
मग आमेरी गांव ढिग, भट प्रताप करगेट।
बल्ले छत्रि भदेस बर, भई इनहि सों भेट॥
कीनो छत्रिन आक्रमण, अकबर शिर दल जोर।
द्वै हाथी करगेट-पति, छीन लीन बरजोर॥

टिप्पनी—राज समुद्र की पाल को न तोड़ डाले, इस आशका से महाराना ने कई सरदारों को उसके रक्षार्थ वहाँ भेज दिये। परन्तु जब उन्हें गरीबदास (कर्णसिंहोत) के पुत्र श्यामसिंह के द्वारा यह पता लगा कि बादशाह मन्दिरों को तुड्वाता है, तालावो को नहीं। तब महाराणा ने भेजे हुए सरदारों को पत्र लिखवा कर वापस बुलवा लिया। उक्त पत्र में भूल से वणोल के ठाकुर राठौर श्यामलदास केलवे वालों के पूर्वज काका राठौर अणदसिंह का नाम लिखना रह गया, सब सरदारों के चलते समय उसे भी चलने के लिये कहा गया परन्तु उसने उत्तर दिया कि मेरा नाम पत्र में नहीं लिखा गया इस-

अरु द्वै करि बल्ले गनन ने , छीन लिये करि जंग ।
भारवहे केउ ऊंट लिय , कितनेएक तुरंग ॥
सब सामान नरेश के , नजर कीन इन आय ।
धन धावन चूवत सुभट , प्रभु के लागे पाय ॥

उदयपुर के शाही थाने पर आक्रमण *

षट् पदी

उदयकर्ण चहुआन, राव कुट्ठार दुर्ग कर ।
अरु भ्राता अमरेश, सझे सन्नाह वीरवर ।
झार-झार तरवार, मार लीने बहु सत्रुन ।
रह्यो हाथ रण-खेत, भाजि केउ गये यवनगन ।
वीरता देखि उनकी विहद, रान भये सुप्रसन्न मन ।
द्वादश सु गांव दीने तुरत, मोद बढ़ावन भटन जन ॥

लिये मैं यहीं रह कर लड़के मरूगा । वह अपने साथियों समेत वहीं रहा और शाही सेना से लड़कर मारा गया । जिसकी सगमरमर की छत्री नौ चौकी के दरवाजे के बाहर महाराणा ने बनवायी जो अबतक यहाँ विद्यमान है ।

*यह आक्रमण कोठारिय रावत रुकमांगद के पुत्र उदयभाग और उनके भाई अमरसिंह चौहान ने केवल २५ सवारों से किया था ।

कुट्ठार=कोठारिया [गांव का नाम]

राजनगर के शाही थाने पर आक्रमण

दोहा

महकम पूरावत्त अरु, सांगा किसनावत्त† ।
सकतावत आदिक सबल, घली भटन मिल घत्त ॥
मरे सु बहुतेरे यवन, छत्री बीस रु दोय ।
राजसमँद जल लाल किय, अपनी तेगन धोय ॥

महाराना की एक टुकड़ी पर हसनअली का आक्रमण

दोहा

परी हती महारान की, ठौर-ठौर पे सेन ।
एक अनी पर हसन अलि, आय पस्यो जय लेन ॥
खाद्य पदारथ शिविर कछु, लगे हाथ सो लाय ।
नजर कियउ पतशाह के, बीस करभ भरवाय ॥
और कहिय पतशाह सों, हसन अली वहिं बेर ।
पौंने दो सत मन्दिरन, हमने दीने गेर ॥
ह्वै प्रसन्न हजरत अमित, बहुत ही कीन्ह सराह ।
शाही आलमगीर को, पद दीनो पतशाह* ॥

---

† यह आक्रमण सबलसिंह पूरावत, सांगावत, किसनावत और सक्तावतों ने मिल कर किया ।

* हसनअली का उदयपुर में व आस-पास प्रांत के १७५ मन्दिरों का तुड़वाना और बादशाह का प्रसन्न होकर हसन अली खां बहादुर आलमगीर शाही का खिताब देना ।

महाराना की पहाड़ी प्रदेश की फौजों पर हसनअली का आक्रमण

षट् पदी

हसन अली चढ़ि गयउ, सहित त्रय सहंस सवारन× ।
पैदल पंच हजार, लेय बढ़ि चल्यो पहारन ।
पूर्व विजय कर लोभ, कोस द्वादस लौं आये ।
तिन पर खग्गन तोकि, छत्रियन ह्यन उठाये ।
सलूंबर राव रतनेस पुनि महासिंह रावत मरद ।
केशरीसिंह चहुआन मिलि कलमन शिर झारिय करद ॥
तिहिं ठाँ भोलानाथ निकर आये सु पहारन ।
नूतन मुण्डन माल, करन धारन के कारण ।
नारद बीन उठाय, तार लागे झनकारन ।
हाथ उदर पर फेर, योगिनी खात डकारन ।
इमि रंग जमत आहव अमित महारथी अब रन तज्यो ।
हसन अलि भटन कटवाय कर, तोबा तोबा करि भज्यो ॥
हसन शाह सों आय, जोर कर कियउ निवेदन ।
मुगल सैन बहु हनी, शक्तिशाली इन हिन्दुन ।

× पूर्व विजय से प्रेरित होकर हसन अली ने ३२०० सवार और ५००० पैदल सेन लेकर महाराना की पहाड़ी प्रान्तों में स्थित फौज पर विफल आक्रमण किया ।

कलमन=मुसलमानों । करद=तलवार ।

ठौर ठौर खल झुण्ड, अपन सहचरन प्रचारत ।
जहाँ जाय हम तहाँ, तहाँ हमको वह मारत ।
पहारी देश है अति विकट, पत्थर कंकट जितहि वित ।
नहिं ठहरि सकत हम ठौर कउ, ये परिचित हम अपरिचित ॥

दोहा

इहीं समय काफिर अधिक , भये रहे बलवान ।
देश काल को देखि कै , चलिबो उचित निदान ॥

बादशाह का अजमेर के लिये कूच

दोहा

परामर्श अनुसार तब , गिरद उड़ाई गैंन ।
शाह चले अजमेर को , ले अंग रक्षक सेन ॥
भई विजय नहिं प्रथम ही , राना भयो न जेर ।
केऊ कारन चलि दिये , जहाँपना अजमेर ॥

मनहर

कछू दिन और मेदपाट में ठहर पाते,
(तो) बेगमान दारा की अत्यन्त मोद पावती ।

बादशाह का चितौड़ से अजमेर चला आना सं० १७३७ चैत्र शुक्ला ३ अजमेर पहुँचा ।

(वीर विनोद भाग १ पृष्ठ ४६७)

ह्वेतो शाहजहाँ को बिहस्त में अपार सुख,
साहित्य संगीत औ कला की बलि आवती ।
महारानी मलका नितान्त करि हाय त्राहि,
महा शोक-सागर में गोते नित खावती ।
जहाँपना सोच अजमेर को न जाते तो तो,
उदयसमुद्र पै समाधि बनि जावती ॥
शाह भय खाय अजमेर को सिधारत ही,
बड़े-बड़े सेनप सिधारे पदधारी है ।
सूबापति और केऊ मुल्ला मौलवी हू चले,
मीर औ अमीर चले केते बलकारी है ।
कविन की भई नक्का रोवै केउ झूरि झूरि,
केती रहि गई हूर अकनकंवारी है ।
औरंग अनारी कहँ बेर-बेर गारी देत,
साथ में सिधारी जयकामना बिचारी है ॥
बहुत निशा लौं मृगनैनी मोती पोय रही,
कहीं सोय रही वह निद्रा की खुमारी में ।
रात्री काल हू में निरबुद्धि खोजे भूलि गये,
सेनापति कूदि गये फौज के अगारी में ।
बैठनन वारी सतखण्डे महलान मध्य,
बन्ध भई बैठी देवरौंन की कमारी में ।

देवरौंन=देवड़े राजपूत । कमारी=फाटक ।

मान के सहित रान आमरे पठाय दई,
एक यहाँ हुरम + रही जो देवबारी में ॥

जेब्बुन्निसा और मलका के सामने बादशाह की हृदय-वेदना प्रगट करना

मनहर

दृश्य देवबारी को भर्यो है निज आंखिन में,
भीमता पहारन की सोऊ कढ़ि जावे ना ।
जोर जंगलीन को बिलोक्यो जबें जेबुन्निसा,
तब तें हमारी पल पलक मिलावे ना ।

+ जो हुरम गफलत से यहाँ रह गई थी उसको महाराना ने इज्जत के साथ आमरे भेज दी । क्योंकि यह हिन्दुओं का स्वाभाविक गुण है । पहिले भी महाराना प्रताप ने नवाब खानखाना के जनाने को पीछा उनके पास भेज दिया था । मुसलमान बादशाह कभी ऐसा नहीं करते थे । शिवाजी की सख्त हिदायत थी कि मुसलमान स्त्री अपनी फौज के हाथ पड़ जावे, वो उसे इज्जत के साथ छोड़ दी जाय । वर्तमान मुसलमान गुण्डों को इससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये । इस हुरम के विषय में महात्मा टॉड ने लिखा है कि जो हुरम साहबा महाराना ने बादशाह के पास इज्जत के साथ लौटा दी थी उसका नाम औरंगजेब ने महाराना को चिढ़ाने के लिए उदैपुरी बेगम रखा और 'वीर केसरी' नन्दकुमार देव शर्म्मा लिखित पुस्तक के पृष्ठ ४६२ की टिप्पणी में लिखा है—उदैपुरी बेगम कामवक्ष की जननी औरंगजेब की बेगम गोरगोरिया की रहने वाली किसी ईसाई की लड़की थी । पहिले यह औरंगजेब के बड़े भ्राता दारासिकोह की बेगम थी । दारासिकोह ने

खान में न पान में न खुदा की इबादत में,
साहित्य संगीत में हू मन बिरमावे ना ।
विकट पराजय सों बामा ख्वामगाह बीच,
मलका हमारे को प्रगाढ़ नींद आवे ना ॥

मलका की मर्जीदान दासी नवीना के सामने बादशाह की हृदय—वेदना प्रकट करना

मनहर

ऐहू नहीं यहाँ स्वच्छ सुन्दर बिछोना है न,
ऐहू नहीं मालती के सुमन बिछावे ना ।
ऐहू नहीं यहाॅ घनसार को न लेपन है,
ऐहू ना अतीव मूल्य सौंधा छिरकावे ना ।

इसको किसी गुलामों के बेचने वाले से खरीदी थी। जब औरगजेब ने अपने बड़े भ्राता दारासिकोह को मरवा दिया तब यह औरगजेब की बेगम हुई। यह निष्पक्ष मुसलमान लेखकों ने भी मुक्त कठ से स्वीकार की है। सैयद महमुद लतीफ ने अपनी पुस्तक पंजाब के इतिहास में भी उस लेख में यही हाल लिखा है, जो अभीतक प्रकाशित नहीं हुआ है।

टिप्पणी—महात्मा टोडने अपने ग्रन्थ राजस्थान इतिहास में लिखा है कि महाराणा राजसिंह, राठौड दुर्गादास और छत्रपति शिवा के उपद्रवों से औरगजेब इतना घबडाया था कि जनानखाने में भी वह आराम से नहीं रह सकता था।

ऐहू ना यहाँ पै रागरंग को अभाव रहे,
ऐहू ना चिराकन में इतर जरावे ना।
विकट पराजय सों मैं हूं गमगीना रहौं,
नेक जहाँपना को नवीना नींद आवे ना॥

बड़े-बड़े बीर बांके सूबादार लोकन की,
प्रान्त है पहारी तातें दाल गलती नहीं।
बहुत प्रयोग कीनो सत्रुन सिपाहन पै,
जीवन की संगी छल चाल चलती नहीं।
राना राजसिंह जू सों कबैं तो विजय पावें,
नेक जहाँपना की मुराद फलती नहीं।
मिली रही एते दिन मद में नवीना अब,
अँखियाँ खुली हैं ता तो फेर मिलती नहीं॥

जाके तनु लागे नायतान को न काम रहे,
कारन रुदन बने सत्रुन घरन की।
चलत अमोध जब मानो सदावृत्त खुली,
मांसहारी जीवन के पोषन भरन की।
भीम मझधार बीच काहू की न रोकी रुके,
नवका अनोखी रन-सागर तिरन की।

नायतान=चिकित्सकों। सदावृत्त=सदावर्त, नित्य दीन दुखियों को अन्न बांटना।

सुन री नवीना यह बैनतेय बेग के-सी,
कैसी तेज तेग है निगोड़े काफिरन की ॥

सबै बेर एक-सी न होत है नवीना सुन,
कबैं आफताब जू को ग्रह हू गिलत है।
भारत सम्राट महारान तें पलायन ह्वै,
अचला हू कबैं भुवकंप तें हिलत है।
लाखन की सेना मुठी भर सों परास्त होत,
खुदा की महान गति किन तें टलत है।
शेर को नवीना मिल जात है शिकारी-शूर,
सेर कों कबैंक दोय सेर हू मिलत है ॥

नवीना का वक्तव्य

वालिद नहीं है वृद्ध आगरे में बन्ध करे,
देत ना रहेगो जाको खाना अरु पाना है।
बान्धव नहीं है दारा बापरो बिचारहीन,
दुनियाँ सों कर देगो तुरत रवाना है।
अनुज नहीं है यो मुराद भोली सूरत को,
कारागृह डार देंगे करिकें दिवाना है।
नवीना वदति मलका सों सत्रु शाहन को,
पत्ता को प्रपौत्र यह राजसिंह राना है ॥

बैनतेय=गरुड़ ।

कवि वचन अन्योक्ति

मनहर

मोरन मचाई सोर घोर घरराये घन,
दौर दौर धुरवा मही सों आनि भिरगे ।
संपा चमकात मॅडराये नभ मंडल में,
अध्व गन धाय-धाय भौनन में दुरिगे ।
दच्छिन दिशा को पौंन बज्जत ही केसोदास,
पानीहीन वारे इत उत कों निकरिगे ।
यह आये वह आये उमड़ घुमड़ आये,
लूम झूम आये पर बदरा बिखरिगे ॥

दोहा

अकबर को यहिं छोरि कर , शाह गयउ अजमेर ।
ता पर धावा करत हैं , छत्री बेर अबेर ॥
प्रान्त-प्रान्त महँ देश पर , सहसन लेय सवार ।
शाह गये पै डटि रहे , जहँ तहँ थानेदार ॥

शाही थानेदारों पर महाराना के राजपूतों की चढ़ाई

मनहर

बंबिन बजाय दीने हयन उठाय दीने,
झण्डे खुलवाय दीने लाल रंग शान के ।

अध्व=यात्री, पथिक ।

गिरन गुंजाय दीने सिन्धुन गवाय दीने,
खप्पर भराय दीने योगनिन पान के ।
आमिष अहारिन को अधिक अघाय दीने,
पत्थर पटाय दीने कबरिस्थान के ।
घाय दीने खलन बहाय दीने रक्त खाल,
छत्रिन उठाय दीने थाने मुगलान के ॥

शाही अफसरों की पहाड़ों में लड़ाई पर जाने व थानादार बनने में इन्कारी

मनहर

गामन की धामन की रीझ हू चहत नाहिं,
हाथी और घोरन की कहो कौन बात है ।
भूरि भय पाय राजपूतन की तेगन तें,
अष्ट गुनो वेतन दिये हू नटि जात है ।
हसनअली-से बली पहारन जाइबे कों,
भारबरदारी कर बहाना बनात है ।
थानादार करिबे को सुनत कहूंक नांव,
पीन-पीन मुनसीन जूरी चढ़ि आत है ॥

भारबरदारी=उत्तरदायित्व पालन करनेवाला । पीन=पुष्ट, मोटे ताजे । जूरी=जूड़ी, बुखार ।

स्वयं महाराना का बदनोर तक धावा

[दोहा

अकब्बर पर धावा कियउ, स्वयं राजसी रान ।
पहुंचि गये बदनोर लौं, भारत प्रबल कृपान ॥

अकबर की आशंका

आशंका पूरन भई, अकबर की इहिं बेर ।
हमें असंभव दीखियत, रहनो हू अजमेर ॥

कवि वचन

दिन-दिन हू बढ़तो गयो, रजपूतन को जोर ।
बढ़त नहीं भय खाय कउ, यवन पहारन ओर ॥

शाहजादा अकबर की फौज के लिए बनजारे लोक मालवे से १०००० बेल अन्न के लाते हुओं पर महाराणा के सरदारों का भील व मीनों को भेजना

षट् पदी

अकबर सेन निमित्त, अन्न लावत बनिजारे ।
गोधे अयुत प्रमान, चित्रगढ़ के ढिग ढारे ।
तिन पर मैनन गनन, भटन भीलन पठवाये ।
तरकस बन्धेउ पीठ, हाथ धनु ही गहि धाये ।

मुख थई-थई बोलत सवर, टण्डा ऊपर झुकि परे ।
ले लट्ठ भिन्दिपालन करन, भट बनिजारे हु भिरे ॥

दुहुँ दिस घायल नरन, तीय जन पानी पावत ।
मुक्तामुक्त जु शस्त्र, गिरे जिहिं आन झिलावत ।
अपने-अपने पतिन, बोल दे-दे बिरदावें ।
कुण पन पीठ उठाय, निजन डेरन महिं लावें ।
इमि होत युद्ध घमसान अति, रान-चरन निज विजय लहि ।
मेंनन रु भील गन भटन ने, लूटि लियउ टँडा सबहि ॥

कँवर भीमसिंह का शाही सेना पर आक्रमण

दोहा

इते अचानक चढ़ि गयउ , बलनिधि भीम कुमार ।
मुगलन के थाने हने , झार-झार तरवार ॥
लूटि लेत भट रसद को , जो अकबर के आत ।
यवन क्षुधातुर सत्रु गन , बहुत रहत बिललात ॥
जो आवत अजमेर सों , कबहुक कछु सामान ।
चलत रसाला ताहि के , कढ़ी संग किरपान ॥
अकबर पठई शाह पै , लिख अरजी अजमेर ।
मिलत नहीं मम सेन को , खाना है दुहुँ बेर ॥
जे मन्दिर तोरे हते , मुगलन धर मेवार ।
ताको बदला लेन को , चढ्यो भीम धक धार ॥

शाही शासन में हतो, जितो देश गुजरात।
भीम चढ्यो तिन पर भयद, घलन खलन सिर घात॥
ईडर को विध्वंस करि, आगे बढ्यो सुबीर।
लूटि लियउ बड़नगर को, प्रतिहिन्सा की पीर॥
लीनी मुद्रा दण्ड महँ, पुनि चालीस हजार।
तदनन्तर अहमद नगर, लूट लियउ धक धार॥
छीन लीन द्वे लक्ष को, महावीर सामान।
इन बदला सुर मन्दिरन, लिय पूरन बलवान॥
एक बड़ी त्रय सत लघू, मस्जिद दीन गिराय।
पितु पाँवन वन्दे कुमर, बहुरि वहाँ तें आय॥

मंत्री दयालदास का मालवे पर धावा

मनहर

जैनमत धारी और दया पालिबे की जाति,
हृै के तोरि डारी तन कंकट करी-करी।
साह चढ़ि गयो शाही मालव के थानन पै,
जिनको लखाय दीनी विकट घरी-घरी।
लूखे मुख वारी लुकै जंगलन झारी महँ
सूके कंठवारी सेन भाजत डरी-डरी।

साह=महाजन।

मंत्री ना दयालदास सत्रुन पै पारी दया,
गिद्ध नभचारिन पै अमित दया करी ॥

दोहा

केतिन के सिर दण्ड किय, कहुँअक लूट कराय ।
केते लाये ऊंट यहँ, सोने के भरवाय ॥
मार-मार मुगलान को, दक्षिन दियउ पठाय ।
मंत्री ने निज राज्य के, थाने दियउ बिठाय ॥
मालव महँ दिय मस्जिदन, बहुतेरी गिरवाय ।
मोलवीय मुल्लान को, पुनि मुण्डन करवाय ॥

बादशाह ने अजमेर से १२००० सवारों के साथ रुहिल्लाखां को लड़ाई पर भेजा जिस पर राठौड़ श्यामलदास बदनोरवाले का आक्रमण

छन्द मुक्तादाम

जयम्मल-वंसज जो बदनोर,
चढ्यो इत श्यामलदास रठौर ।
घमंक्किय गुध्घर पक्खर घोर,
ठमंक्किय त्रंबक सोर कठोर ॥
ढमंक्किय ढक्कर गायक ढोल,
गयन्दन पीठ पताकन खोल ।

चमंक्किय सेल अरू किरपान,
झमंक्किय तोड़न बूर कृसानु ॥
बढ़ी अब शूरन की हलवत्त,
मढ़ी इत हूरन की खलवत्त ।
चढ़ी रज घोरन पौरन गैंन,
मढ़ी महतावन की अब सैन ॥
बजी पुनि खग्गन की खननंक,
लगी जनु झल्लरि की झननंक ।
लगी फिर बानन की सरराट,
भई अब हूरन की हरराट ॥
परी अब लोथन जोटन जोट,
ढरी बनिजारन की जनु पोठ ।
फिक्कारत फेरुक ऐंचत अन्त,
ड्कारत योगिनि वृन्द फिरन्त ॥
लिये सब अप्पन सथ्थ समाज,
निसा महँ आय डटे नटराज ।

दोहा

कीनो भीषण आक्रमण, दृढ़मति श्यामलदास ।
भाजि गयो खल भीत ह्वै, छोरि विजय की आस ॥
तेग लिये लम्बी फिरत, रखत सदा मुख रत्त ।
बोलत नहँ सीधे बयन, नित मदिरा महँ मत्त ॥

महारथी राखत मुरट , नाम रुहिल्लाखान ।
जाकों रह वीरत्व को , मन महँ बड़ो गुमान ॥
ले सवार द्वादश सहँस , पुर मण्डल के पास ।
पर्‌यो हतो अरु करत हो , हिन्दुन को उपहास ॥
ता पर श्यामलदास ने , झारी बीर कृपान ।
भाजि गयो जिय लेय के , छोरि बड़ो अभिमान ॥
अपन पराजय की यवन , उतरे मुख अभिराम ।
अवरंग सों अजमेर में , कीनी जाय सलाम ॥
सेस सेन इक रात्रि महँ , छोरि भगी सामान ।
खरे रहे निज ठौर पै , बंधिन सहित निसान ॥

वानसी के सक्तावत केसरीसिंह के पुत्र गंगदास का चितौड़ के पास की शाही सेना पर ५०० सवारों से आक्रमण

षट्पदी

गंगदास चढ़ि गयउ, लेय अध सहँस सवारन ।
परे हते चितौर दुर्ग के पास मुगलगन ।
कियउ आक्रमण कँवर, महा भीषण सकतावत ।
योगिनि खपर भराय तृप्त कीने खग जित तित ।
भाजिगे किते कायर मुगल, केते भये सहीद भट ।
सोसनी रंग , काली भई लाल भई पहुमी निपट ॥

अष्टादस गजराज उभय घोरे कउ ऊंटन ।
रजपूतन लिय छीन, प्रचुर सामान भटन गन ।
ह्वै प्रसन्न महारान कँवर पद ताहि समप्पिय ।
सोवृन भूपण सहित एक घोटक रु गांव दिय ।
उत्साह भरे बीरन वदन कायर गन उर दुख भरिय ।
सनमान करत इम सुभट को और भटन मन उभरिय ॥

राजकुमार गजसिंह का वेगूं थाने पर आक्रमण

दोहा

वेगूं थाने पर चढ्यो, भट गजसिंह कुमार ।
लेकर निज विश्वास के, उभय सहस्र सवार ॥
कछुक रार करि गमन किय, थानापति सहि घात ।
रंगास्वामी भाजियत, जैसे उरद दिखात ॥
पहिले दिन रजपूत गन, दिय उठाय तुरँगान ।
दूसर दिन मुगलान दल, रह्यो न नाम निशान ॥

राजकुमार जयसिंह का घोसूंडे के पास की शाही सेना पर १३००० सवार २०००० पैदलों से रात को आक्रमण

नीशानी

राजकुमर जयसिंह ने, दल इते बनाया ।
त्रय दस सहँस तुरीन कों पाखर पहनाया ॥

प्यादे बीस हजार ने कर मूंछ मिलाया ।
अरु बैंडे हथ्थीन पै नेजा फहराया ॥
पीढ मतंगों गायकन अंबाल घुराया ।
हयन ठान अरु गजन सों आलान छुराया ॥
चढ़न युद्ध पै कायरन निज जीव चुराया ।
बीरन गन आकास सों उतमांग भिराया ॥
भ्रातृज भगवतसिंह ने गुण सत्व उडाया ।
चन्द्रसेन मकवान ने अहि फैंन चढ़ाया ॥
सबलसिंह चहुआन का वीरत्व बढ़ाया ।
चूंडावत रतनेश भट घन रोस घुमाया ॥
जाको हो हरवह्ल को अद्यावधि दावा ।
सकतावत गंगदास इत खगराज खुलाया ॥
शाह स्वयं रणभूमि में परिचय जिहिं पाया ।
कमधज गोपीनाथ के वीरा रस छाया ॥
रणकोविद निज वन्स का सन्तान सुहाया ।
बैरीसाल पँवार को बन्दिन बिरदाया ॥

भगवतसिंह, महाराना के भ्राता अमरसिंह का पुत्र । चन्द्रसेन=सादड़ी वालों के पूर्वज । सबलसिंह बेदले वालों का पूर्वज । रतनसिंह सलूंबर का । गंगदास बानसी का । गोपीनाथ घाणेराव का । बीजोल्या का बैरीसाल । केसरीसिंह पारसोली का ।

(बीर विनोद भाग १ पृष्ठ ४७२)

बंसज विक्रम भोजका विजयी पद पाया ।
केसरिसिंह चुहान तन बक्तर नहिं माया ॥
सत्रुन पै निज क्रोध जिहिं पूरन उफनाया ।
सकतावत मुहकम्मसी महाराज कहाया ॥
जाने खल दफनान हित खड्डेन खुदाया ।
रुकमांगद रावत मरद रस रौद्र रंगाया ॥
बहु बिरियाँ इन वीर ने पलचरन धपाया ।
खीची राव रतन्न ने धनु बान उठाया ॥
मानसिंह सारंग दे कर मूठ मिलाया ।
यह रावत नरवद्द का निज पौत्र सुभाया ॥
जग्गावत माधव सुभट कर खग्ग तुकाया ।
सक्तावत भट कान्हजी रण मोद जिताया ॥
झल्ला जसवंतसिंह जो वर वीर सुभाया ।
बहुत भटन को जिहिं सुभट रण-पाठ पढ़ाया ॥
जैतसिंह मकवान जो रण खेत कुमाया ।
केती बिरियाँ भोज्य ज्यों तुरकन दल खाया ॥
केते बीरन गनन ने बकतर पहनाया ।
केते जन अति मोद सों तुरैन लगाया ॥

मुहकम्मसिंह, भींडर का। रावत रुकमांगद, कोठारिये का। खीची राव रतन, गागरोन का जागीरदार। मानसिंह कानोड का। माधवसिंह आमेट का। कान्हसी चीताखेड़े का। जसवतसिंह गोगुदे का। जैतसिंह देलवाड़े का।

तुलसी मंजर सबन ने निज सीस चढ़ाया ।
गीता कर गुटकान को निज भुजन बंधाया ॥
मुक्ति हेत बहु नरन ने गंगोद अचाया ।
रामायन भारत श्रवन सुचि पाठ सुनाया ॥
जंगी घोरन खुरन की खुरतार खनंकी ।
सुर-मन्दिर घरियार ज्यों गज-घंट ठनंकी ॥
तन्त तरंगिनि पै सरस सिन्धुन रननंकी ।
बैंडे तेज तुरीन पै पखरालि झनंकी ॥
उडी गिरद आकास में रवि आभा ढंकी ।
घोरन की बागें उठी खागें खननंकी ॥
व्योम रणांगण जाइबे गिद्धिनि गननंकी ।
या गति सों जयसिंह की चतुरंगिनि हंकी ॥
करि कें भीपण आक्रमण मुगलान जगाया ।
हर-हर श्री महादेव सों असमान गुंजाया ॥
उत अकबर कर सेन हू अल्लाह मचाया ।
लोथन पर लोथें परत रनछेत्र पटाया ॥
रक्त नरन हय गयन सों गढ्ढेन भराया ।
मुण्डमाल नटराज को नूतन पहनाया ॥
निस में हू मुनिराज ने भल बीन बजाया ।
अरध रात्रि में योगनिन वर रास रचाया ॥

घरियार=मन्दिर की घण्टा ।

क्षेत्रपाल गन छलछलत खप्पर भरवाया ।
आप अघाय रु साकनिन कछु और पिलाया ॥
हूरन एक हजार सों वर हाथ मिलाया ।
सेसन को मुगलान ने रण में विलखाया ॥
भट अकबर रणछेत्र सों पखरैत पलाया ।
नीठ-नीठ अजमेर का मारग उन पाया ॥
एक सहंस मुगलान को बिहिस्त पठाया ।
शाही दल के त्रय गजन इन मार गिराया ॥

दोहा

गहि लीने उमरावनन, हय हाथी पंचास ।
अरु डेरन रहवास के, किये तोरके नास ॥
छीन लीन पुनि छत्रियन, नक्कारा नीशान ।
इन लीनो अजमेर को, मारग इक मुगलान ॥

शाही सेना की भगदड़

मनहर

टंकी हू कमान रही म्यान में कृपान रही,
भाजि मुगलान रही सेना चहुँ कोर में ।
छाती हहराय रही देह थहराय रही,
दाढ़ी फहराय रही पवन झकोर में ।

वीर विनोद भाग १ पृष्ठ ४७२-४७३ ।

चाली जयसिंह की है तेग तन सत्रुन को,
सुद्ध हू रही न बुद्ध ऐसी दौरा दौर में ।
पाय रही खूंटी में रु जीव रह्यो मूठी में रु,
जामा जमदाढ़ों में पजामा रह्यो डोर में ॥
चहर सके न राजपूतन की तेगन को,
ठहर सके न वर वीर भीम रन में ।
मुतंजन वहाँ कहाँ कोफतों के ढेर कहाँ,
बेर हू मिलत नांय निसा बेर वन में ।
चाली है अमोघ समशेर जयसिंह जू की,
बनी है विषम बेर ऐसी मुगलन में ।
दौरि दौरि थाके अजमेर हू मदीना भयो,
हीना सन्यो भटन पसीना भयो तन में ॥
जबैं जयसिंह के तुरंगन की बाग उठी,
जागि उठी नागिनी है खुरन घमंका तें ।
भूरि भय पाय मुगलान दल भागि रह्यो,
लागि रह्यो दूर अजमेर गढ़ लंका तें ।
केउ कलराय एक एक सों चिपट गये,
कायर निपट गये केऊ दीर्घशंका तें ।
भारी दल सत्रुन को खारी नदि डाक रह्यो,
पाक रह्यो नहीं है पजामा लघुशंका तें ॥

कोफतों=कोफ्ता, कूटे हुए मांसका कबाब। दीर्घशंका=दस्त, टट्टी।

ऐसे मुगलान दल आहव को छोरी गयो,
मृग है दवासों कि हवासों बेर पात है।
छोरि गये डेरन तुरंग उष्ट तोपन कों,
साथ में लये न पुत्र पोते ताव भ्रात हैं।
हाथन की गेरी वस्तु नेरी पै न दीखत है,
आपत्ति की घेरी यों अँधेरी मिली रात है।
बीज सत्यानासी के बुए जो दोऊ हाथ लुने,
जय अभिलासी वे उबासी खाये जात हैं॥

भागे हुए शाही सिपाहियों का वार्तालाप

(उर्दू मिश्रित)

काफिरन घोरन के पौरन बजत मीयाँ,
मैं तो सुनते ही नव दोय ग्यारा कहिगो।
सुनो सुलतान खां इमान की कसम खाऊं,
मेरे जान वहाँ आसमान आनि ढहिगो।
कोऊ कहे शाहजादे बाद हम आये भाई,
कोऊ कहे मेरे यार! मैं तो वहीं गहिगो।
कोऊ कहे मेरो रहिमान मेरे साथ आयो,
कोऊ कहे बड़ो मीयां डेरन में रहिगो॥
बड़ी तनख्वाह ना इनाम इकराम चाहौं,
रूखे अरु सूखे टुकरेन घर पाऊंगो।

जो पै ये खुदानखास्ता दुबारा चढ़ाई करें,
जानकर यार ! मैं बिमार बनि जाऊंगो ।
एते पै दबाव डारे खामखा रिसालदार,
बिना रुजगार मैं तो नामा ही कटाऊंगो ।
नबी कहे कसम खुदाकी मेरी जिन्दगी लौं,
मैं तो फेर कभी मेदपाट में न जाऊंगो ॥

बादशाह की अकबर पर नाराज़गी

दोहा

अकबर पर निज हार सों, शाह भयो अप्रसन्न ।
नयो न ख्वाजा पीर सों, अधिक भयो मन खिन्न ॥
अकबर को फरमान दिय, छोर जाहु मेवार ।
होत पराजित खलन सों, तू सठ बारम्बार ॥
मरुधर रन पर जाइयो, लेकर तहबर खांन ।
ठौर तिहारी आय हैं, अब आजम सुलतान ॥
अपमानित अकबर चल्यो, मारवार तजि मान ।
बरके घाटे होय कर, लेकर तहबर खान ॥
शुक्ल पक्ष आषाढ़ की, दसमी कियउ पयान ।
चलत हरावल महँ रह्यो, तहबर खान जवान ॥

नयो=नमन ।

सोजत मारवाड़ में अकबर का पड़ाव फिर लड़ाई

ठौर-ठौर पै छत्रि गन, करत रहे हैरान ।
श्रावण शुक्ला तीज को, सोजत पहुँचे आन ॥
पर्‍यो रह्यो इक मास लौं, शाही सेन पड़ाव ।
अकबर अरु तहव्वीर खां, बिनु उद्योग उपाव ॥
अब शाही आज्ञा मिली, अकबर को इहिं बेर ।
सुत देसूरी राह सों, जावहु कुम्भलमेर ॥
हैं ठहरे वहिं प्रान्त महँ, हारे हुए रठौर ।
तिन के ऊपर आक्रमण, कर हू जाय कठोर ॥
पै न भयो पालन कछु, वहँ शाही फ़रमान ।
अब तब करते ह्वै गये, पुनि द्वै मास प्रमान ॥
मरिबे के डर सों मुगल, आगे बढ़त न एक ।
प्रत्येकन को सेनपति, दीने लोभ अनेक ॥
तहवर खां जावन गिरन, नट्यो सु वीर नितान्त ।
रजपूतन के लरन सों, भयो बहुत ही क्लान्त ॥
जब अकबर तहवीर पै, डार्‍यो अधिक दबाव ।
तब सूबापति साथ में, चल्यो ठिठुकते पाव ॥
आश्विन शुक्ला चतुर्दसि, द्वादश सहस सवार ।
अकबर औघट गिरन महँ, लेय बढ्यो धकधार ॥

फिर लड़ाई

शाही सेना की देसूरी की तरफ से आने की खबर मिलने पर महाराणा का राजकुमार भीमसिंह को युद्ध पर भेजना

दोहा

किियउ आक्रमण कँवर ने , भीम गती लहि भीम ।
चली सजोर असीम खग , सम्मुह भये गनीम ॥
मेड़तिया आहव बढ्यो , कमधज गोपीनाथ ।
नरन रक्त इच्छुक चली , सब योगिनि इन साथ ॥
सोलंकी विक्रम सुभट , बीर पाण्डवन गोत्र ।
चढ्यो धपावन पलचरन , पाटन भीम प्रपौत्र ॥
त्यों ही दुरगादास अरु , सुभट चढ़े सोनिंग ।
शिव नन्दी पर चढ़ि चले , घोटत छोरी भंग ॥

मनहर

चाली है उताली भीम कुमर भटाली चमू ,
बाजन विशाली पखराली झननाटे है ।
चढ़ी जे सरंगिन के तार रननाटे होत,
घाटे घाटरे के महँ खग्ग खननाटे है ।
अच्छरिन नूपुर के पूर छननाटे बाजे,
गिद्धि गन पंखन के गैंन गननाटे है ।

भीम=बनेड़े वालों का पूर्वज । गोपीनाथ=घाणेराव का । विक्रम सोलकी=रूपनगर का । घाटे घाटरे के=जीलवारे का घाटा ।

मूंछ फननाटे धनु तीर सननाटे तहाँ,
घण्ट घननाटे हय हींस हननाटे है ॥
शंकर बनावै मुण्डमाला कर आपन सों,
सिंगी हित लावे कर कबू मेखरी पै है ।
गावे जोगमाया कबू रण में रचावे रास,
कबू खिज जावे साकिनी की हेकरी पै है ।
क्षेत्रपाल खोहन सों कबहु उतरि आवे,
कबू चढ़ि जावै अरावलि के गिरि पै है ।
मोरने घुमावे और मुरज चढ़ावे तार,
नारद बजावे बीन बैठे टेकरी पै है ॥
देश अरु स्वामी के निमत्त महावीरन को,
साहस बढ्यो है अति केते डोकरेन में ।
योगिनीन बृन्द के पिलायबे कों सत्रुन को,
छलाछल रक्त भर दीनों पोखरेन में ।
केते भीरु मन को डुलावत रणांगण तें,
केते छोकरेन और केते रोकरेन में ।
केते ही बिहिस्त बसें केतिन को नीर नसे,
केते ही अमीर घुसें जाय धोकरेन में ॥

मेखरी=मेखली, एक प्रकार का पहनावा जिसको गले में डालने से पेट और पीठ ढकी रहती है । हेकरी=हैंकड़ी, अक्खड़पन । टेकरी=टीला । धोकरेन=धोकड़े के वृक्ष, जो पहाड़ों में होते हैं ।

ऐसो रन कीनो भीम कंवर पहारन में,
शंकर सुकावे तहाँ मेखला तरी को है।
नारद मुनिन्द्र हू बिचारे सबें भीजि गये,
तोपन की झार में तपावै तूमरी को है।
लथ्थपथ भयो जोगमाया पलटावै चीर,
शीश को सुकावे माता खोल रखरी को है।
साकिनी दसन भीर लहँगे की दामन को,
डाकिनी निचोरे मुख मोर चूनरी को है॥

दोहा

होत युद्ध यहि भांत सों, भागो तहबरखान।
छीन लीन इन छत्रियन, शाहीदल सामान॥
छत्रिन के इम आक्रमण, हिम्मत दीनी तोर।
तहबरखाँ आवन गिरन, साहस कियो न और॥

शाहजादा अकबर की पराजय से बादशाह को चिन्ता

उक्त पराजय की खबर, सुनी जबैं पतशाह।
सकल सनोरथ विफल भे, मिटि मनको उत्साह॥
जीत सक्यो महारान सों, समर नहीं सम्राट।
लेख पराभव उन दिनन, लिख दिय खुदा लिलाट॥

सोची अवरंग शाह ने , भये उपद्रव भीम ।
इतें सिक्ख गन तुलि रहे , इत मरहट्ट गनीम ॥
मरुधर के रट्ठौर इत , इत राना सरजोर ।
सब पै जय पैबौ कठिन , कीने जतन करोर ॥
के तो बनजावहि कब्बर , के उलटावहिं राज ।
ये काफिर मुगलान की , बोरहिं चलति जहाज ॥
तातें राना सों त्वरित , सन्धि करन में सार ।
बिगरी बात बनाइबे , अवरंग किन्ह बिचार ॥
कीनो विचार हू नहीं , छेर दियो प्रस्ताव ।
होनहार भवितव्य पै , काको चलत उपाव ॥
रहत रान संलग्न रन , अपनें वीर स्वभाव ।
तातें कायर गन सदा , डरियत कूकर भाव ॥
कायर रन चाहत नहीं , नहीं स्वामी नहीं देश ।
रक्षा अपने प्राण की , करियत रहत हमेस ॥
राखत जे नहिं स्वामि की , भक्ति देस सों प्यार ।
हम हु देत उन नरन को , बार बार धिक्कार ॥
करे अन्न क्षयकार इक , नाहक रुंधत नार ।
कायर नर रहि जगत में , व्यर्थ करे भुवि भार ॥

बादशाह का अजमेर चला जाना । वीर विनोद भाग १ पृष्ठ ४७२

जाके तनु के लगि गयो , कायरता को रोग ।
केशव ऐसे नरन को , मुख नहिं देखन योग ॥
कायर कहँ सोभित नहीं , नहीं मूंछ नहिं पाग ।
पकरि लियो नहिं शण्ड गन , सो उन को सौभाग ॥
कायर नर में हू नहीं , नारी में न गिनाय ।
नखत त्रिसंकू ज्यों सदा , टरे रहत नभ पाय ॥
कायर खग्ग न कढ़त है , नहिं कटार नहिं कूंत ।
पै वहँ भावुक नरन सों , काढ़त अपने कूंत ॥
बीर-काव्य के सुनत ही , कायर मन दुख पाय ।
धनवानन को देखि के , ज्यों दरिद्रि अकुलाय ॥
कवियन को कायर कहत , करि करि झूठ बखान ।
व्यर्थ हि हमरे तुम समर , मरवाये पुरखान ॥
कायर सुकविन कों कहत , वा बिरियाँ हम होत ।
तो तो तुमरे काव्य की , छुवा न लागत छोत ॥
शूरन को अछरान के , झूठे लोभ बताय ।
पुरखा हमरे मूढ़नहिं , व्यर्थ दिये मरवाय ॥

कवि वचन

कायर कर निज देश नहिं , नहिं कायर कर गोत ।
कायर और सुवीर नर , सब देशन महँ होत ॥

मेद्पाट यद्यपि सदा, है सुभटन की खान।
पै काबुल महँ होत नहिं, कहा जनम गदहान॥
रान पास निसदिन रहत, बीर सधीर अनेक।
पै भावी वस तें रहे, नर कायर दो एक॥
राजन को नहिं चाहिये, रखन क्षुद्र जन पास।
क्षुद्रन के रहिबे महीं, कबहुक होत बिनास॥

महाराना के हाथ से हिन्सा

इक रानी इक द्वारहठ, पुनि इक राजकुमार।
एक पुरोहित आपनो, महिपति दीने मार॥

इस प्राश्चित निवारणार्थ राना का पण्डितों से पूछना

पूछिय राना पंडितन, मेरो निवटे पाप।
प्रायश्चित याको कहा, युक्ति बतावहु आप॥

पण्डितों का मत

अशु पीपर महँ बैठि कर, दग्ध करहु तुम देह।
तब ताको अघ मिटहिगो, सास्त्रन को मत एह॥

तथा बनाइय इक उद्धि, अधिपति दीरघ आप ।
जासों ह्वै पालन जियन, तासों मिटिहै पाप ॥
कै मरिये महारान रन, करत कटारन युद्ध ।
सीधे सुरपुर जायहो, मग न होहिं अवरुद्ध ॥
तब राना के मन जची, उभय पण्डितन युक्ति ।
उद्धि बनावन रन मरन, मन चाही ह्वै मुक्ति ॥
बनवायो तब रान ने, दीरघ राज-समुद्र ।
कोटिन जन पालन करन, सब तालन में भद्र ॥

कटारों से युद्ध की योजना

अब कीनी नृप योजना, मरन महा रन खेत ।
चढ़ी कटारिन सांन पै, युद्ध करन के हेत ॥

इस अरसे में महाराना का नैणवारे से कुंभलगढ़ जाना

कुंभलगढ़ जावत भयो, ओडा ग्राम मुकाम ।
भाग्य जोर अवरंग के, हाय बन्यो विधि वाम ॥
अवरंग हो अति ही कुटिल, तदपि भाग्य को जोर ।
अनायास बनते रहे, केते कार्य कठोर ॥

रान निकट रहते हते, जे कायर अकुलीन।
दुष्टन अपने जियन हित, भोजन में बिष दीन॥
अर्द्ध मुहूरत में नृपति, कीनो स्वर्ग पयान।
हिन्दुन घर हा हन्त भो, सत्रुन हर्ष महान॥
विक्रम संवत जानिये, सत्रह सौ सैंतीस।
कार्तिक शुक्ला दशमि को, गये धाम जगदीश॥
कृपापात्र हो रान को, आसकरन्न कवि पात।
इहिं विष भोजन पात ही, सोऊ भयो निपात॥

प्राचीन पद्य

ओड़ाँ रतन संहारिया, राजड़ आसकरन्न।
वो हिन्दुवाणी सेहरो, वो सेहरो बरन्न॥

वरन्न=चारण वर्ण।

टिप्पणीः—आसकर्ण खेमपुर का दधवाड़िया गोत्र का चारण महाराणा का बहुत ही कृपापात्र एव विश्वस्त था। जिसे महाराणा भाई आशकर्ण कहा करते थे। कहा जाना है कि महाराणा बड़े सवेरे व्यायाम कर नास्ता किया करते थे। इसी नास्ते में ज़हर होने से और नास्ता आशकर्ण को भी खिलाने से इसका भी देहान्त हो गया।

(राजस्थान इतिहास से)

महाराना के महत्व के काम

(राजस्थान इतिहास से)

राजनगर की पहाड़ियों के मध्य होकर गोमती नाम की नदी बहती थी। वहाँ बन्ध बन्धाने का प्रबन्ध महाराणा अमरसिंह ने किया। परन्तु बन्ध टिक न सका। फिर राजसिंह ने कँवर पदे के समय जेसलमेर रावळ मनोहरदास की पुत्री से विवाह करने जाते समय इस मौके को देखा तो उसके अन्दर इतने गामों की सीम आती थी:—

(धोयन्दा, सनवाड़, कांकरोली सेंवाली, पसूंद, भगवान्दा, मोरचणा, खेड़ी, छापर खेड़ी, तासोल, मण्डावर, भांणा, लुहाणा, बांसोल, गुडली, मंढा) की सीम आती थी। गद्दी विराजने के पश्चात् सं० १७१८ मार्गशीर्ष रूपनारायण दर्शनार्थ जाते हुए तालाव बनाने का निश्चय किया। इस तालाव के बनाने में तीन बातें प्रसिद्ध हैं—कोई कहते है कि जेसलमेर जाते समय नदी के बेग ने महाराणाको तीन दिन तक रोक रक्खा, जिसे बन्ध बन्धवा कर रोक दी। कोई कहते हैं कि उसने एक पुरोहित, एक चारण उदैभाण बारहठ, एक राणी और एक कँवर को मारा था जिसकी हत्या निवारणार्थ पण्डितों की सम्मति से यह तालाव बनवाया गया। कोई कहते हैं दुर्भिक्ष पीड़ित प्रजा की रक्षार्थ बनवाया। अस्तु, कैसे ही हो काम प्रारम्भ हुआ। तालाव के बन्ध की खुदाई का

काम वि० सं० १७१८ माघ बदि ७ को प्रारम्भ हुआ। बहुत बड़ा काम होने से कई विभाग कर एक-एक विभाग एक-एक सरदार आदि को बांट दिया गया। नींव में पानी आजाने से कई अरहटों से पानी निकाला गया। श्रावणादि वि० सं १७२१ बैशाख सुदी १३ को पुरोहित गरीबदास के पुत्र रणछोड़दास के हाथ से नींव का पत्थर रक्खा गया। काम बन जाने के बाद संवत १७३१ श्रावण सुद ५ को लाहौर गुजरात सूरत के बनाये हुए जहाज तालाव में डाले गये। फिर सं० १७३२ माघ सुदी ६ को प्रतिष्ठा का कार्य प्रारंभ हुआ। अष्टमी को महाराणा ने उपवास किया और नवमी को निज भाइयों, कँवरों, राणियों, चाचियों, और अपने वन्श की पुत्रियों, भगिनियों तथा पुरोहित गरीबदास के सहित मण्डप में प्रवेश कर वरुणादि देवताओं का पूजन किया। नौ कुण्डों में अग्नि स्थापित की और हवनादि काम प्रारंभ हुआ। उस दिन रात्रि का जागरण हुआ। दूसरे दिन परिक्रमा का काम शुरू हुआ। मार्ग समान (समभूमि) और कंटक रहित कर दिया गया। नंगे पैरों चलना प्रारम्भ किया। उस परिक्रमा में राणियें, राज-परिवार, राजसेवक आदि सब साथ थे। आगे-आगे वेद पाठी ब्राह्मण वेदमन्त्र उच्चारण करते हुए चलते थे। पांच दिन में १४ कोस की परिक्रमा समाप्त होने पर पूर्णिमा के दिन पूर्णाहुति समाप्त हुई। उस दिन महाराणा सोने का तुलादान कराते समय अपने पौत्र अमरसिंह को भी अपने साथ तुला में बिठाया

तुला में १२००० तोले सोना चढ़ा। पटराज्ञी सदाकुंवरी जो बीजोल्या के राव इन्द्रभान की पुत्री थी चादी की तुला की। पुरोहित गरीबदासने सोने की की। गरीबदास के पुत्र रणछोड़ दास ने, राव केशरीसिह पारसोली वाले, टोडे के राजा रायसिंह की माता ने और बारहठ केशरीसिंह ग्रन्थकर्त्ता के पूर्वज ने चाँदी की तुलाएँ कीं। इस गरीबदास को इस उत्सव में १२ गाव तथा अन्य ब्राह्मणों को गाव तथा भूमि आदि दिये। चारणों आदि को ५५२ घोड़े व १३ हाथी दिये। अपने मित्र सम्बन्धी राजाओं में से जोधपुर के राजा जशवन्तसिह, राव भावसिंह बूदी के, बीकानेर के स्वामी अनूपसिंह, रामपुरे के चन्द्रावत खेमसिंह, जेसलमेर के रावल अमरसिंह, डूगरपुर के रावल जसवन्तसिंह, जो इस समय उपस्थित था और रीवा के राजा भावसिह के पास इस उत्सव के उपलक्ष्य मे एक-एक हाथी दो-दो घोडे और जरदोजी शिरदोजी शिरोपाव भेजे। टोडे के रायसिंह की माता को उसके कँवरों के लिये एक हथनी दी। डोसी भीखू प्रधान व राणावत रामसिंह को जो तालाव के काम पर नियत थे एक-एक हाथी व शिरपाव दिये। इस उत्सव के दर्शनार्थ बाहर से ४६००० ब्राह्मण व अन्य लोग आये जो भोजन वस्त्रादि से सन्तुष्ट किये गये। इस तालाव के बनाने में १५१००००० रुपये व्यय हुए। इसके नौ चौकी नामक बन्ध पर ताकों में बडी-बडी २५ शिलाओं पर राजप्रशस्ति काव्य खुदा हुआ है, जो भारत भर में सब से बड़ा लेख है। महाराणा में क्रोध की मात्रा

कुछ अधिक थी। किसी कार्य को करने के पहले उस पर वह अधिक विचार न करता था। क्रोध में आकर महाराना ने राजकुमार, राणी, पुरोहित और बारहठ उदयभान की हत्या कर डाली। इतना होते हुए भी वह बड़ा दानी था। स्वयं कवि तथा विद्वानों का आदर सत्कार करने वाला था। महाराना राजसिंह का बनाया हुआ निम्न लिखित एक छप्पय राजसमुद्र के पास महल के झरोखे के पूर्व-पश्चिम में खुदा हुआ है।

महाराना का बनाया हुआ छप्पय

कहाँ राम कहाँ लखण, नाम रहिया रामायण ।
कहाँ कृष्ण बलदेव, प्रगट भागोत पुरायण ।
बालमीक सुक व्यास, कथा कविता न करंता ।
कुण सरूप सेवता ध्यान मन कवण धरंता ।
जग अमर नांव चाहो जिके, सुणो सजीवण अक्खराँ ।
राजसी कहे जग राण रो, पूजो पाव कवेसराँ ॥

महाराणा के साहित्य-गुरु का परिचय

दोहा

यह लक्खा को पुत्र अरु, टहला गांव निवास ।
हो नृप को साहित्य-गुरु, चारण नरहरदास ॥
कवियन पर उपकार किय, रचि अवतार चरित्र ।
कविराजन को रवि सुकवि, अरु राजन को मित्र ॥

लक्खा का परिचय

यह लक्खा, रोहड़िया बारहठ गांव नांनणाई परगने साकड़ी (मारवाड़) का रहने वाला था। यह बादशाह अकबर के पास भी रहता था। कहते हैं कि बादशाह ने उसे बड़ी जागीर भी दी थी। उसके दो बेटे नरहरदास और गिरधरदास थे।

मनहर

राजसिंह जू के आर्यमात्र ह्वै रहेंगे रिणी,
क्षात्रधर्म सनातन गेह को उजासरो।
सेना एक लक्ष पंच कोटि की स्वदेश आय,
रानी-सम्पदा को रह्यो उदेपुर सासरो।
शाह अवरंग को सदैव ही हृदय साल,
बेर-बेर सत्रुन को दाबत रह्यो गरो।
भारत को नेता वीर च्यार ही समाजन को,
राजन को और कविराजन को आसरो॥

ह्वतो जो न राना राजसिंह को अयुक्त हठ,
दारा को बिछोरि जो न खलु अपनावतो।
काहू के कहे पे विसवास जो न करि लेतो,
सेवा सों तनिक भ्रातृ भाव जो बढ़ावतो।
सहसा करन हू में ह्वतो जो अधीर नांहि,
अग्रिम बिचारिबे में नेक मन लावतो।

दिल्ली तें विधर्मिन को आसन उलटि जातो,
औरंग को शासन अवश्य उठि जावतो ।
ह्वेती जो न हाय जसवन्त की अकाल मृत्यू,
ह्वेतो अवसान जो न राजसिंह रान को ।
ह्वेतो विहि बेर जो न शेवा को निकट काल,
महादेश दच्छिन के जंगी तन-त्रान को ।
ह्वेतो जो कछूक त्रिहुँ राजन में संघटन,
ह्वेतो जो बिलन्द भाग्य दीन हिन्दुवान को ।
(तो) तीनों ही महीप एक दिन में उठाय कर,
फारस में फेंक देते झण्डा मुगलान को ॥

महाराना की सख्त मिजाजी

वीर विनोद भाग १ पृष्ठ ४४४-४४५ में लिखा है कि महाराणा के पास बादशाह शाहजहाँ का एलची चन्द्रभान आया उस समय महाराना शाहाना दरबार कर विराजे। उस वक्त हुकम दे दिया गया था कि कोई ताजीमी सरदार पीछे से न आवे। अगर आवेगा, तो हम ताजीम नहीं देंगे। बारहठ उदयभान ने कहा कि आज के दिन शाही एलची के सामने ताजीम न हो, तो फिर इज्जत के लिये और कौनसा दिन होगा। महाराना दरबार किये हुए विराजे थे कि बारहठ उदयभान मना करने पर भी आया और मामुली के मुआफिक आशीर्वाद दिया। लेकिन

महाराना नहीं उठा तब बारहठ ने नाराज होकर मारवाड़ी भाषा मे निशाणी छन्द कहा जिसके आखिरी मिश्रे ये हैं—

गया जगतपति जगतसी जगका उजवाला ।
रही चिरमठी वापड़ी कीधे मूँह काला ॥

महाराना इस कविता को न सुन सके और गुस्से में आकर एक लोहे का गुरज जो पास रखा था बारहठ के सिर पर मारा जिससे वह वही मर गया। इन्हीं महाराणा की राणी ने अपने बेटे सरदारसिंह को युवराज बनाने के लिए बड़े कुँवार सुलतानसिह को उसी गुरज से मरवा डाला। उसके लिए महाराणी ने सोतिया डाह से प्रपंच रच कर मरवा डाला जो प्राय: सोतिया डाह से ऐसा होता है। फिर थोड़े दिनों के बाद अपने पुरोहित को उसी राणी ने पत्र लिखा कि सुलतानसिंह को शक दिला कर महाराणा से मरवा डाला। अब दरबार को जहर दिलाना चाहिए जिससे कि मेरा बेटा राज्य का मालिक बने। पुरोहित ने उस कागज़ को अपनी कटारी के खिसे में रख दिया। पुरोहित के पास एक महाजन दयाल नामक नोकर था। उसकी शादी किसी महाजन के यहाँ गाव देवाली मे हुई थी जो कि उदयपुर से दो मील के फासले पर है। एक दिन त्योहार पर दयाल अपने मालिक पुरोहित से छुटी लेकर सुसराल जाने को था। रात होने के कारण पुरोहित से एक शस्त्र मागा। पुरोहित ने अपनी कटारी दे दी। वह रात को अपने सुसराल गया और

वहाँ एक घर में ठहरा। वह कटारी का खीसा खोल कर उस कागज को बाचने लगा। बाचते ही वह वहाँ से दौड़ा और उदयपुर आया। आधी रात के समय महाराणा को जरूरी काम की अरज के बहाने से बाहर बुलाया और कागज नज़र किया। महाराणा ने भीतर जाकर गुर्ज से उस रानी का भी काम तमाम किया और पुरोहित को बुलाकर उसी गुर्ज से मार डाला। कुँवर सरदारसिंह जो इस बात से बिलकुल बेखबर था कुँवरपदे के महल में ही ज़हर खाकर मर गया और मरते समय यह सोरठा लिख कर अपने सिर के पास रख दिया।

पाणी पिंड तणाह, पिंड जाताँ पाणी रहे।
चीतारसी घणाह, सपना ज्यूं सरदारसी॥

इसका अर्थ यह है कि इज्जत बदन की है। परन्तु बदन जाय और इज्जत रहे तो उसे आदमी ख़वाब की तरह याद करेंगे। कँवर सरदारसिंह की पूजा संभूनिवास के पास कँवरपदे के महल की छत्री में अबतक भी होती है और लोग करामाती बातों के विचार से उनको देवता के समान मानते हैं। वि० सं० १७३७ कार्तिक शुक्ला १० को महाराना राजसिंह ने कुम्भलगढ़ परगने के ओडा गाम में अन्तकाल किया। इनके देहान्त के बाबत अक्सर लोगों का खयाल है कि इनको ज़हर दिया गया। ज़हर देने में यह कारण बताते हैं कि तेज मिजाजी के कारण लोगों की नाराजी। दूसरे महाराणा का यह विचार था कि राणी,

पुरोहित, कुँवर और बारहठ के मार डालने का पाप दूर करने के लिये लड़ाई में जाना चाहिये। इस से लोगों की यह राय थी कि इन्हें तो यह पाप उतारना है, लेकिन दूसरे हजारों लोगों की जान देकर देश को क्यों बरबाद करते है। अगर ऊपर लिखी हुई बातों से महाराना को ज़हर दिया गया हो तो ताज्जुब नहीं है। तीसरी यह बात भी ज़हर देने की ताईद करती है कि महाराणा ने हुक्म दिया कि कोठारिये में पूर्व चोगान में तलवार बरछे और कटारों से लड़ मरना चाहिये। यह सोच कर शाहजादा आजम को लिख भेजा। उसने भी खुशी से कबूल कर लड़ाई की तैयारी की। क्योंकि उसको महाराणा पर लड़ाई कर फतह पाने की बहुत आरज़ु थी। आखिर बादशाही फौज रुकमगढ़ के पास आ पहुंचा। परन्तु महाराणा को सब मुसाहिबों ने रोका और कहा कि अपनी सब फौज पहिले इकट्ठी करनी चाहिये, फिर लड़ना चाहिये। इस पर महाराणा ने कहा कि मुसलमानों को मैं बुला चुका हूं। उनसे झूठा पड़ूगा। जिस पर कोठारिया के रावत रुकमांगद ने कहा कि आपके एवज में लड़ूंगा और वह बहादुर सरदार उसी प्रकार अपने राजपूतों समेत लड़ने को जा पहुंचा। बड़ी बहादुरी के साथ लड़ाई की। कोठारिये वालों का बयान है कि वह सरदार मारा गया। इसके बाद महाराणा नेणवारे गाम से निकल कर कुम्भल जाते प्रातः काल को औडा गाम में पहुंचे। वहाँ खिचड़ी तैयार करवाई और दधिवड़िया चारण खेमराज के बेटे आसकर्ण को (जिसे

महाराणा भाई कह कर पुकारते थे) साथ लेकर जीमने को बैठे, थोड़ी देर बाद दोनों का देहान्त हो गया। इस बात पर भी कवि का बनाया हुआ दोहा प्रसिद्ध है।

प्राचीन दोहा

ओडा रतन संहारिया , राजड़ आसकरन्न।
वो हिन्दुवानी बादशाह , वो बादशा वरन्न॥

इनका जन्म वि० सं० १६८८ कार्तिक कृष्ण द्वितीया को मेड़तिया राठौड़ राजसिंह की बाई जनादे बाई के गर्भ से हुआ। महाराणा का छोटा कद, बड़ी आंखें, चौड़ी पेसानी और गेंहुआ रंग था। मिजाज अत्यन्त तेज लेकिन किसी मौके रहम भी करते थे। ऐस आराम व फइयाजी अधिक पसन्द थी। दूसरे की सलाह पर कम चलने वाले और खुद बहादुर थे। इनके समय में प्रजा प्रसन्न और खजाना भरपूर था। धर्म के पक्के और परलोक का विचार रखते थे। इन्हों ने ब्राह्मणों को बहुत दान दिया। लाखों रुपये चारण कवियों को इनायत किये। इनके खोफ से मुलाजिम डरते रहते थे। तो भी राजपूत सरदार सच्चे खैरख्वाह और बहादुर थे। महाराणा ने इन ऊपर लिखो बातों के पाप से छुटकारा पाने के उपाय ब्राह्मणों से पूछे तब ब्राह्मणों ने धर्मरीति तीन तदबीरें बताई, पहली यह कि सूखे हुए पीपल के पेड़ पर बैठ कर अग्निदेव में जलकर मरना चाहिये, दूसरी, कोई बड़ा एक तालाव बनवाना, तीसरी, कटारों से लड़ाई लड़

कर मारा जाना। महाराणा ने पिछली दो बातें स्वीकार की। इसी कारण यह राजसमुद्र तालाव बनवाया और उस दयाल का दरजा बढ़ाकर अपना प्रधान बनाया। वीर विनोद भाग १ पृष्ठ ४४६ में लिखा है कि राजसमुद्र की प्रतिष्ठा के समय महाराणा ने अपनी पाटवी राणी और कुँवर समेत सुवर्ण की तुला की और पुरोहित गरीबदास ने सोने की, उसके बेटे रणछोड़ ने चादी की तुला की। टोडे के राजा रायसिंह की माता ने व सलूबर के राव केसरिसिंह चहुआन और बारहठ केसरीसिंह ने चांदी की तुला की। इसी जलसे में तालाव का नाम राजसमुद्र, (राय सागर) पहाड़ पर के महल का नाम राजमन्दिर, शहर का नाम राजनगर रखा गया।

दोहा

जैसी परम उदारता, तैसोइ क्रोध महान।
रीझ खीज महारान में, दोऊ हती समान॥

ये महाराना रीझ व खीज दोनों नहीं पचा सकते थे।

मनहर

खाय जातो केते उन क्षत्रिन को खोज-खोज,
पाय जातो वीरन संयुक्त चतुरंग क।
सिक्ख सतनामिन की हड्डियें चबाय जातो,
जैसे हरी यक्ष भक्ष करत कुरंग के।

बापरे गरीब राफजीन को निगल जातो,
बिना ही लगाए लोंन मिरच लवंग के ।
राना राजसिंह रण आमिये खिलाय कर,
खटे कर देते जो न दांत अवरंग के ॥

बाबर की बेर महामाया को पदार्पण भो,
सांगा मंत्रवादी देख दूर ही भगी रही ।
प्रबल सहारा भो जलालुदीन अकबर को,
(पे) धूनी प्रताप की तें ठिठुक ठगी रही ।
राना राजसिंह जसवंत शिवराज बेर,
कबौं सोय गई कबौं जेमती जगी रही ।
गई ना निगोड़ी पराधीनता सुथान पाय,
भारत की देह हाय डाकिनी लगी रही ॥

पृष्ठ १९२ में छपे हुए कुछ शब्दों के अर्थ—

वैनतेय=गरुड़ । सतनामिन=सतनामी नामक एक साधु-सम्प्रदाय जो कि सशस्त्र दादू पंथियों की तरह मजहब के लिए लडते थे और हिन्दू-जाति के थे । हरीयक्ष=सिंह ।

राफजीन=राफजी, मुसलमानों की एक कौम जिसे बोहरे कहते हैं । मुसलमानी धर्म से इनका धर्म कुछ भिन्न है । शाहजादा सूजा राफजी हो गया था । सुगल=मदिरा या अफीम पीनेके बाद मुंह साफ करने के लिए जो मीठी, चरपरी वस्तु मुह में लेते हैं उसे सुगल कहते हैं, यह फ़ारसी का शब्द है । आमिये=कच्चे आम ।

अंत प्रशस्ती

दोहा

केशव करत समाप्त अब , पूरण यह वृत्तान्त ।
ॐ तत्सत अलख हरि , शान्त शान्त पुनि शान्त ॥
जन्म भूमि मेवाड़ है , सोन्याणा मम गाम ।
हौं चारण जाती सुहृद , केशव मेरो नाम ॥
मम भ्राता आत्माति नहिं , सद्गति युत दंसाति ।
ॐ तत्सत अलख हरि , शान्ति शान्ति पुनि शान्ति ॥
विक्रम संवत् द्वै सहॅस , आठ बरस उपरान्त ।
अगहन शुकला चतुर्दशि , भो पूरण वृत्तान्त ॥

नोट—अन्त प्रशस्ती का तीसरा दोहा काव्य-प्रणेता की रचना नहीं है ।

विरह बावनी

भाई कहियो भँमर ने, हरि-रस मने सुणाव।
रमाकान्त लागो पढण, आसू झरत अमाव॥ १॥

अन्त समय में गोरादान के प्रति कहा—

बेटा धीरज राखज्यो, तो तो जासी पार।
नीतर थारो डूबसी, यो सारो परवार॥ २॥

घर खेती छोड़ो मती, कठिण समस्या आय।
अरथ तणो इण समय में, और न कोय उपाय॥ ३॥

पीपळ री लकड़ी पड़ी, दाह काज बाधीह।
आधी म्हारे राखज्यो, दातारे आधीह॥ ४॥

मनें कियो (कह्यो)

खाधे जाणो सब कहे, बेटा पोतारेह।
यो मोको है आँपणे, सङ्ग हुँ आपाँरेह॥ ५॥

दादाजी हूं आप सू, लड़तो सदा अतीव।
दुख पावे इण देह मे, जिण सू म्हारो जीव॥ ६॥

जावू कर हरि जाप, दादाजी जिण देश में।
आज्यो बेगा आप, बीछड़तां कहिया बचन॥ ७॥

चढियोड़ा खुरसाण, जे बुझियोड़ा प्रेमजल ।
ये नावक रा बाण, सदा हिये मो सालसी ॥ ८ ॥

हूं लडतो हम्मेस, थू म्हा सू अडतो नहीं ।
(था मे) रोस तणो लवलेस, कदिय न दीठो भ्रातवर ॥ ९ ॥

हूं तो तोडुणहार, करतो देर न भ्रातवर ।
तू कञ्चन रो तार, रात दिवस बदतो रह्यो ॥ १० ॥

भलपण अणथग भार, तू भुज ऊपर तोलतो ।
हूं ओछलो अपार, लड़तो निस दिन ही लछा ॥ ११ ॥

भाई थू लड़ियो नहीं, हूं लडियो कहि बार ।
तैं तो राख्यो ही अधिक, सदा प्रेम-व्यवहार ॥ १२ ॥

सगलाँ सू मिल भेट, ॐ मंत्र उचार कर
मारो निज मा पेट, छोड़ गयो संसार ने ॥ १३ ॥

(हूं) करतो भहम अपार, (दिन) आखोई नह देखतो ।
(अब) दीखे नॅह दीदार, (म्हारो) हेर हेर रोवे हियो ॥ १४ ॥

पूर्ण सहोदर-प्रीत, अधिक निभाई आज लग ।
करतो मने नसीत, नेह निभावण री निपट ॥ १५ ॥

मनखाँ रो मन राखणो, तने याद हो तात ।
दिल गैराँ दुखावणो, भूलोड़ो हो भ्रात ॥ १६ ॥

गालू हिमगिरि गात, काशी री करवत कटू ।
तोपण तो सम भ्रात, मिले नहीं लछमालसी ॥ १७ ॥

सब ही जोड़ समाज, पोळ लछा तू बेठतो ।
ओ दरवाजो आज, (मने) खावा दोड़े खेमरा ॥ १८ ॥

चलसी अवगत चाल, दुसह जमानो देखने ।
(जद) लडकाँ ने लछमाल, हिम्मत कवण बंधावसी ॥ १९ ॥

तू जावण सुरलोक, फजराँ माळा फेरतो ।
या हतणी यो चोक, (मने) खावा दोड़े खेमरा ॥ २० ॥

किती बड़ाई हूं करूं, तूं पूरण गुणग्राम ।
थारो दीधो जोतसी, लछमण सार्थिक नाम ॥ २१ ॥

मने दुखी नहँ चावतो, थारो सहज सुभाव ।
अब मारो दुख मेटवा, एकारूं फिर आव ॥ २२ ॥

छोड गयो फूली थकी, बाड़ी अमरा ईह ।
कल्पव्रक्ष तू सूखगो, बाडीरो भाईह ॥ २३ ॥

कुळ में कतराईह, जाँणाँ मा बेटा जणे ।
(पण) तो जसड़ा भाईह, कोयक होवे लछमणा ॥ २४ ॥

गाम दूसरे जावतो, जद हूं जोतो वाट ।
पाछो आवण पोळ रा, (अब) हरि जड दिया कपाट ॥२५॥

अतिशय आछाईह, साचाई राखी सदा ।
भूलूं किम भाईह, जीवू जितरे जगत में ॥ २६ ॥

लाख मुखाँ जस ले गयो, लेगो मो सुख साथ ।
राख गयो दुनियाँ मही, भली भलाई भ्रात ॥ २७ ॥

भाई म्हारो राखतो, लछमण घणो लिहाज ।
हूं कहतो कटु बचन तू, नह ह्वेतो नाराज ॥ २८ ॥

कदिय न कुटिलाईह, तैं राखी खिमराज तण ।
भूलू किम भाईह, जीवू जितरे जगत मे ॥ २९ ॥

रंच न विसराईह, सेवा म्हारी त सुह्रद ।
भूलू किम भाईह, जीवू जितरे जगत मे ॥ ३० ॥

करे न समताईह, (म्हारा) बेटा पोता तांहरी ।
भूलू किम भाईह, जीवू जितरे जगत मे ॥ ३१ ॥

ताहरे हित ताईह, कदिय न लालच तैं कियो ।
भूलू किम भाईह, जीवू जितरे जगत मे ॥ ३२ ॥

लछमण ललचाईह, ते मनसा नहॅ आज तक ।
भूलू किम भाईह, जीवू जितरे जगत मे ॥ ३३ ॥

मन सुध मनुसाईह, पूरण प्रेम परावधी ।
भूलू किम भाईह, जीवू जितरे जगत मे ॥ ३४ ॥

मुखरी मधुराईह, निसदिन भरी सनेहरी ।
भूलू किम भाईह, जीवूं जितरे जगत में ॥ ३५ ॥

थारी प्रभुताईह, सत्रु मित्र सराहवे ।
भूलू किम भाईह, जीवू जितरे जगत में ॥ ३६ ॥

करतो काथाईह, (पण) सारो काम सुधारतो ।
भूलू किम भाईह, जीवू जितरे जगत में ॥ ३७ ॥

धरा धाम धन पूरती, कर देऊं सब कोय ।
(पण) थारी पूरति भाइड़ा, जनम आगले होय ॥ ३८ ॥
सहिया दुख केताय, जबरा जबरा जगत में ।
(पण) यो दुख सह्यो न जाय, बांधव तुझ वीयोग रो ॥ ३९ ॥
जणणी इक जायाह, मन मुटाव राखे मिनख ।
वे भाई भायाह, क्युं कहवावे केशवा ॥ ४० ॥
कर झूठो दावोह, लड़े सहोदर राज में ।
(वे) भाई रो दावोह, क्यूकर राखे केशवा ॥ ४१॥
कर कर कपटाईह, पाई पाई कज लड़े ।
(वे) मा जाया भाईह, किण मुख बोले केशवा ॥ ४२ ॥
कठिण काम पड़ियाँ कदे, तू हटियो नँह तात ।
सरदी गरमी भूक तिस, रात दिबस अधरात ॥ ४३ ॥
भव भव लग भारीह, कठिण तपस्या तें करी ।
सुधर गई सारीह, अन्त समय थारी अधिक ॥ ४४ ॥
आँसू मिटै न आँखरो, सावण मास समान ।
याद न भूलू आपरी, दाता गोरादान ॥ ४५ ॥
पहलाँ पटकी बीजली, अब फिर जलती आग ।
पितु तें क्यों छेटी करी, मुझ बेटी सौभाग ॥ ४६ ॥
बेहद हुओ बिखाद, रमाकान्त रा हृदय में ।
आवे पल पल याद, दाता रा दरसण भणी ॥ ४७ ॥

इण घर फेरूं आवज्यो, या अरजी म्हारीह ।
रतन सदा बिलखत रहे, पोती दातारीह ॥ ४८ ॥

हूं दौड़ी दौड़ी जिते, रूठो राम असेस ।
दातारा दरसण बिना, विलखे सुगन विसेस ॥ ४६ ॥

दाता म्हां पर राखता, मायतपणो अमाप ।
चौधारां छूटे चखां, करवे हरी विलाप ॥ ५० ॥

हूँ करतो अवहेलना, दाता क्षमा समन्द ।
प्रेम विहीणो पुरस हूं, गुणहीणो गोबिन्द ॥ ५१ ॥

अरज करे सायर उगम, हे प्रभु कृपानिधान ।
आप जिसा सुसरा अवस, (म्हानें) भव भव दो भगवान ॥५२॥

यों आखे अगरां अरज, कर जोड़े करतार ।
हे सोदा सरदार ये, (मने) भव भव में भरतार ॥

समर्पण

पुष्प और गुलाब कुँवरी की तरफ से समर्पण

दोहा

पुष्प गुलाब सु पौत्रियाँ, दूरी घणी विदेश।
दाता रा दर्शण बिना, बिलखत रही विशेष॥

मोही भाटी ठा० डूंगरसिंहजी की ओर से समर्पण

दोहा

निज स्वारथ कछु ना चह्यो, घर हित सब कुछ कीन।
पृथक न सम्पत्ति तैं करी, रह्यो भ्रात आधीन॥१॥

कटू कबूँ नहिं बोलतो, लड़तो नहीं लगार।
करतो सब तैं निष्कपट, लछमण प्रेम व्योहार॥२॥

अतिशय प्रेम कुटम्ब तें, आज्ञा पालन भ्रात।
आतिथ तैं हँस बोलबो, लेगो लछमन सात॥३॥

केहर लख जीतो लछा , केहर लखण निहार ।
बन्धुन प्रेम अपूर्व था , राम लखण अनुहार ।।४।।

सोरठा

जद तद पड़ीज भीड़ , भीर चढ्यां गिरि[1] की जबर ।
अब को चढ़सी भीड़ , भीड़ू बन तुझ-सो लछा ।।५।।

महियारिया नाथूदानजी कृत समर्पण

दोहा

लछमण नूँ मुरछा भई , अकुलाया जद आप ।
लछमण बिन केहर दुखी , राम किसो इन्साफ ।।१।।

---

१ डूँगरसिंह भाटी